



JAIN REFERENCE LIBRARY
ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA
 12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
 GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

4839 4839_Search_Results_For_run_With_References

Result Format : (Keyword No.) Keyword > Book Code - Page No.

(1) अब्रह्म निषेध के कारण >> B.90 - P. 334 (2) मालोपहृत आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 561 (3) मालोपहृत आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 562 (4) विचारषट्त्रिंशिका दंडक बाला >> B.6 - P. 340, 340, 340, 340 (5) सातवशार्तमरण >> B.99 - P. 476 (6) " भारत वर्ष " नुनामकरण >> B.56 - P. 340 (7) " संग्राम में मरने वाला देवता होता है " इस सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न >> B.95 - P. 358 (8) (अनेक प्रकार से) मरण की प्ररूपणा की >> B.95 - P. 126 (9) (शत्रुंजय महिमा गर्भित) नवाणु प्रकारी पूजा >> B.133 - P. 218 (10) 12 प्रकारना संभोगथी संघबहार, लेखक - वंदनरुचिविजय >> B.157 - P. 37 (11) 14 गुणठाणा विवरण चोपाई >> B.2 - P. 147, 147 (12) 14 राजलोक तथा त्रणे लोकनां मध्यस्थानो >> B.56 - P. 17, 362 (13) 15 प्रकारना परमाधामी देवो >> B.56 - P. 49, 371 (14) 22 अभक्ष निवारण सझाय >> B.5 - P. 30 (15) 24 जिन देह वरण स्तवन >> B.6 - P. 30 (16) 6 प्रकारना संघयण >> B.56 - P. 225, 411 (17) 6 प्रकारनी पर्याप्ति >> B.56 - P. 221, 410 (18) अंक पल्यंक में निषधादि करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 743 (19) अंग संकोचन न करने वाले कछुये के उदाहरण से अगुप्तेन्द्रिय के फल का सूचन >> B.95 - P. 449 (20) अंगपडिहारिणि >> B.77 - P. 2 (21) अंगफुरण चोपाई >> B.2 - P. 243 (22) अंगरक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 466 (23) अंगस्फरण के परिणाम >> B.134 - P. 65 (24) अंगारिणी >> B.42 - P. 2 (25) अंचलमतनिराकरण >> B.73 - P. 297 (26) अंडो वाले काष्ट पर कायोत्सर्ग करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 250, 252 (27) अंतःकरण उपशम >> B.49 - P. 24 (28) अंतःशल्यमरण >> B.134 - P. 525 (29) अंतर-बाह्य व्रण के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भूतों का प्ररूपण >> B.93 - P. 623 (30) अंतरंग करणी अथवा जीव ने करणीनो संवाद >> B.133 - P. 171 (31) अंतरंग कारण >> B.69 - P. 137 (32) अंतरकरण >> B.49 - P. 25 / B.69 - P. 18 (33) अंतरकरण >> B.77 - P. 6 (34) अंतरकरणमां नपुंसकवेद अने स्त्रीवेदनी स्थिति, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.153 - P. 58 (35) अंतोसल्लमरणे >> B.77 - P. 7 (36) अंबाड (खरण्ट) >> B.43 - P. 505 (37) अइपरिणामय >> B.97 - P. 28 (38) अइरिप >> B.43 - P. 1 (39) अइरुंद >> B.43 - P. 443 (40) अईमुत्ता मुनिवर एक के पछ्ही अनेक ?, लेखक - शीलचन्द्र-निर्यन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 41 (41) अईमुत्ता मुनिवरने केवलज्ञाननी प्राप्ति क्यारे थई ?, पत्रचर्चा - सौम्यप्रभविजय >> B.149 - P. 20 (42) अईमुत्ता मुनिवरने केवलज्ञाननी प्राप्ति क्यारे थई ?, लेखक - ज्ञानरुचिविजय >> B.146 - P. 2 (43) अउआरणे >> B.46 - P. 1 (44) अकबर साहि श्रृंगार दर्पण >> B.74 - P. 283 (45) अकयकरणो >> B.77 - P. 12 (46) अकरण >> B.77 - P. 13 (47) अकरण >> B.77 - P. 13 (48) अकरणतयैव >> B.77 - P. 13 (49) अकरणनियमः >> B.65 - P. 3 (50) अकरणयाइ >> B.77 - P. 13 (51) अकरणयाए >> B.77 - P. 13 (52) अकरणि >> B.46 - P. 1 (53) अकरणिज्जं >> B.77 - P. 13 (54) अकरणुवसामणा >> B.97 - P. 1 (55) अकरणोपशामना >> B.97 - P. 1 (56) अकरितो >> B.77 - P. 13 (57) अकाम मरण >> B.49 - P. 19 / B.134 - P. 523 / B.60 - P. 2 (58) अकामनिकरण >> B.77 - P. 13 (59) अकाममरण >> B.84 - P. 19 / B.97 - P. 3 (60) अकाममरणम् >> B.77 - P. 13 (61) अकाममरणिज्जं >> B.84 - P. 19 (62) अकाममरणिज्जं >> B.77 - P. 13 (63) अकाममरणीय >> B.84 - P. 19 (64) अकारण दोष >> B.97 - P. 3 (65) अकारिणो >> B.77 - P. 13 (66) अकाल स्वाध्याय करने और काल में स्वाध्याय नहीं करने का प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 68, 68 (67) अक्खोडभंगपरिहरणा >> B.77 - P. 17 (68) अक्षरसमासावरणीय >> B.97 - P. 7 (69) अक्षरावरणीय >> B.97 - P. 7 (70) अखण्ड चर्म धारण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 686 (71) अगणिपरिणामिय >> B.77 - P. 18 (72) अगुणरिणं >> B.77 - P. 18 (73) अगुरुलहुफासपरिणामे >> B.77 - P. 19 (74) अगोचरनी गत्य >> B.46 - P. 4 (75) अग्निकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 568 (76) अग्निमित्रा का गृहीधर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 335 (77) अग्निमित्रा का भ. महावीर की वंदना के लिए जाना और धर्म-श्रवण करना >> B.95 - P. 335 (78) अग्निशिखाचारण >> B.82 - P. 317 (79) अग्रणी >> B.42 - P. 7 (80) अग्रनिवृत्ति >> B.42 - P. 7 (81) अग्रायणीय पूर्व का एक उद्धरण >> B.134 - P. 424 (82) अघृणित कुलों में गोचरी का निषेध >> B.90 - P. 548 (83) अचक्षुदंसणावरणीय >> B.97 - P. 16 (84) अचक्षुदर्शनावरण >> B.69 - P. 234 / B.97 - P. 16 (85) अचलता के

परिणाम >> B.134 - P. 605 (86) अचारित्री की लिंग-हरण-विधि >> B.135 - P. 355 (87) अचित्करण >> B.49 - P. 17 (88) अच्छीकरण >> B.77 - P. 23 (89) अच्छेरुं >> B.46 - P. 5 (90) अजरण-जरण >> B.46 - P. 6 (91) अजरण >> B.77 - P. 25 (92) अजापुत्रनो रास >> B.3 - P. 285, 285 (93) अजित आदि अर्हत्तों का नामकरण >> B.134 - P. 319 (94) अजितनाथ जिनालय (उपरना माळे), शामळाजीनी शेरी, पाटण >> B.53 - P. 133 (95) अजितनाथ जिनालय, कोठारी पोळ चौमुखीजीनी खडकी (सुथारनी खडकी), अमदावाद >> B.55 - P. 113 (96) अजितनाथ जिनालय, लवारनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 62 (97) अजीर्ण रोग के कारण >> B.135 - P. 218 (98) अजीव अधिकरण के भेद >> B.69 - P. 172 (99) अजीव द्रव्यकरण-भावकरण >> B.134 - P. 422 (100) अजीव भावकरण >> B.134 - P. 422 (101) अजीवकरण >> B.97 - P. 20 (102) अजीवकरण >> B.77 - P. 25 (103) अजीववेयारणिया >> B.77 - P. 25 (104) अजीववैदारणिका क्रिया >> B.60 - P. 6 (105) अजीवशरण >> B.97 - P. 22 (106) अजीवाधिकरण >> B.49 - P. 19 (107) अजुरणया >> B.77 - P. 26 (108) अज्झवसाणावरणज्जाणं >> B.77 - P. 28 (109) अज्ञात वस्त्र ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 687 (110) अज्ञान आवरण है >> B.134 - P. 20 (111) अज्ञानमरण >> B.60 - P. 7 (112) अटारुं >> B.46 - P. 7 (113) अट्टकरण >> B.77 - P. 30 (114) अटारनामां चौपइ >> B.75 - P. 73 (115) अदीद्वीपमां शाश्वत चैत्य अने प्रतिमाओनुं वर्णन अने त्रणे लोकमां रहेल शाश्वत प्रासादादिनुं यंत्र >> B.56 - P. 133, 392 (116) अणुत्तरणवासो >> B.77 - P. 44 (117) अणुत्तरनाणी >> B.77 - P. 44 (118) अणुन्धरिन् >> B.114 - P. 12, 12 (119) अणुमोद्रेण >> B.77 - P. 46 (120) अणुवेलंधरणागराय >> B.84 - P. 49 (121) अणुवेलंधरनागरातीणं >> B.77 - P. 48 (122) अणुसंसरण >> B.114 - P. 15, 15 (123) अणोरणियान् >> B.42 - P. 11 (124) अणोसरुं >> B.46 - P. 12 (125) अण्हयकरि >> B.77 - P. 50 (126) अतरण >> B.77 - P. 51 (127) अतिदारुण >> B.42 - P. 11 (128) अतिपरिणामक >> B.60 - P. 8 / B.97 - P. 28 (129) अतिपरिणामकं >> B.77 - P. 52 (130) अतिपरिणामा >> B.77 - P. 52 (131) अतिपरिणामा: >> B.65 - P. 4 (132) अतिरिक्त पात्र वितरण के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 691 (133) अतिरिक्त पात्र-वस्त्र धारण की अवधि >> B.135 - P. 133 (134) अतिरिक्त वस्त्र वितरण के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 674 (135) अतिशय युक्त ज्ञान - दर्शन की उत्पत्ति नहीं होने के कारण >> B.90 - P. 114, 114 (136) अतिशय युक्त ज्ञान - दर्शन की उत्पत्ति के कारण >> B.90 - P. 115, 115 (137) अतोरण >> B.42 - P. 13 (138) अत्थरणं >> B.77 - P. 55 (139) अत्थुरण >> B.43 - P. 15 (140) अत्थुरणं >> B.77 - P. 56 (141) अत्थुरणग >> B.43 - P. 15 (142) अत्यंतमरण >> B.134 - P. 524 (143) अथाप्रवृत्तकरण >> B.97 - P. 31 (144) अदत्त न लेने का व्रत पालने वाले सात सौ परिव्राजकों का संलेखना-पूर्वक समाधिमरण और देवलोक में उत्पत्ति >> B.95 - P. 372 (145) अदत्तहारिन् >> B.114 - P. 18, 18 (146) अदत्तादान के दुष्परिणाम >> B.93 - P. 275 (147) अदत्तादान दिग्मण महाव्रत आराधक के अकरणीय कृत्य >> B.90 - P. 303, 304 (148) अदिकेरुं >> B.46 - P. 13 (149) अद्वघरणी >> B.43 - P. 445 (150) अधःकरण >> B.114 - P. 28, 28 (151) अधःप्रवृत्तिकरण >> B.42 - P. 13 (152) अधःप्रवृत्तकरण >> B.97 - P. 37 (153) अधःप्रवृत्तकरणविशुद्धि >> B.97 - P. 37 (154) अधर्म करने वाले की निष्फल रात्रियां >> B.90 - P. 41, 41 (155) अधर्म करने वाले की सफल रात्रियां >> B.90 - P. 41, 41 (156) अधर्म पक्ष में पुरुषों की प्रवृत्ति और परिणाम >> B.93 - P. 208 (157) अधर्म पक्ष में प्रावादुकों का समाहरण >> B.93 - P. 208 (158) अधर्म प्रशंसाकरण प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 50, 50 (159) अधर्मप्ररञ्जन >> B.114 - P. 18, 18 (160) अधवारुं >> B.46 - P. 14 (161) अधापवत्तकरण >> B.97 - P. 37 (162) अधारणिज्जं >> B.77 - P. 60 (163) अधिकरण >> B.47 - P. 7 / B.49 - P. 17 / B.135 - P. 10 / B.60 - P. 10 / B.97 - P. 38 / B.114 - P. 27, 27 (164) अधिकरण (कषाय) से उत्पन्न दोष >> B.135 - P. 16 (165) अधिकरण के पर्याय >> B.135 - P. 13 (166) अधिकरण के भेद >> B.69 - P. 172 (167) अधिकरण के भेद से कर्मबंध में भेद >> B.69 - P. 171 (168) अधिकरण क्रिया >> B.69 - P. 168 (169) अधिकरण-उत्पत्ति के छह हेतु >> B.135 - P. 13 (170) अधिकरणं >> B.77 - P. 60 (171) अधिकरणकर >> B.114 - P. 27, 27 (172) अधिकरणक्रिया >> B.97 - P. 38 (173) अधिकरणद्वार >> B.69 - P. 23 (174) अधिकरणनिर्वर्त्तिनी >> B.77 - P. 60 (175) अधिकरणप्रवर्त्तिनी >> B.77 - P. 60 (176) अधिकरणम् >> B.65 - P. 5 (177) अधिकरणरसिद्धान्तः >> B.47 - P. 7 (178) अधिकरणसाला >> B.77 - P. 60 (179) अधिकरणसिद्धान्त >> B.48 - P. 122 (180) अधिकरणाणं >> B.77 - P. 60 (181) अधिकरणिक >> B.49 - P. 17 (182) अधिकरणिखोडि >> B.43 - P. 16 (183) अधिकरणिखोडी >> B.77 - P. 60 (184) अधिकरणिसंदिटे >> B.77 - P. 60 (185) अधिकरणी >> B.84 - P. 87 / B.60 - P. 10 (186) अधिकरणी से वायुकाय की उत्पत्ति और विनाश का प्ररूपण >> B.93 - P. 526 (187) अधिकरणीतो >> B.77 - P. 60 (188) अधिकरणोदीरक >> B.97 - P. 38 (189) अधिगरणं >> B.77 - P. 60 (190) अधिगरणंसि >> B.77 - P. 60 (191) अधिगरणिया >> B.77 - P. 61 (192) अधीकरण >> B.114 - P. 28, 28 (193) अधोप्रवृत्तकरण >> B.49 - P. 17 (194) अधोलोक में अन्धकार करने वाले >> B.96 - P. 35 (195) अध्यात्मवैरिणी क्रिया >> B.65 - P. 6 / B.97 - P. 41 (196) अध्रुव सम्प्रणधि >> B.42 - P. 15 (197) अनंतरगति द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (198) अनंतरचारित्र द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (199) अनइरुं >> B.46 - P. 14 (200) अनन्तकाय संयुक्त आहारकरण प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 575

(201) अनन्तरनिर्गतादि चौबीसदंडकों में आयु बंध के विधि-निषेध का प्ररूपण >> B.93 - P. 437 (202) अनन्तरोपपन्नक चौबीसदंडकों में चार समवसरण का प्ररूपण >> B.93 - P. 244 (203) अनन्तरोपपन्नकादि चौबीसदंडकों में पाप-कर्म और अष्टकर्मों का समर्जन-समाचरण >> B.93 - P. 379 (204) अनरण्य >> B.42 - P. 18 / B.44 - P. 17 (205) अनवस्थाप्य में तप परिणाम >> B.82 - P. 417 (206) अनवस्थित करण >> B.82 - P. 146 (207) अनशन (पंडितमरण) के प्रकार >> B.135 - P. 21 (208) अनशन के परिणाम >> B.134 - P. 25 (209) अनाचरणीय >> B.49 - P. 21 (210) अनादि परिणाम >> B.69 - P. 162 (211) अनादि पारिणामिक >> B.60 - P. 16 (212) अनादिकरण >> B.97 - P. 55 (213) अनादिपरिणाम >> B.97 - P. 56 (214) अनादी पारिणामिक >> B.134 - P. 485 (215) अनापृच्छयचारिन् >> B.114 - P. 11, 11 (216) अनासक्त अश्वों के उदाहरण से श्रमणादि की अनासक्ति के फल का निर्देश >> B.95 - P. 457 (217) अनासक्त ही मरण से मुक्त होता है >> B.90 - P. 436 (218) अनिच्छाप्रवृत्तदर्शनबालमरण >> B.97 - P. 60 (219) अनिरुद्ध हरण अथवा ऊषाहरण >> B.74 - P. 382 (220) अनिरुद्धहरण >> B.4 - P. 454, 455 (221) अनिवृत्तिकरण >> B.42 - P. 19 (222) अनिवृत्ति करण >> B.49 - P. 24 (223) अनिवृत्तिकरण >> B.69 - P. 18 / B.77 - P. 62 / B.60 - P. 18 / B.97 - P. 62 (224) अनिवृत्तिकरण गुणस्थान >> B.97 - P. 63 (225) अनिसृष्ट आहार ग्रहण करने का विधि-निषेध >> B.90 - P. 563 (226) अनिस्सरणात्मक तैजस >> B.97 - P. 64 (227) अनुकरणत्वम् >> B.47 - P. 13 (228) अनुग्रह कृत्स्न और निरनुग्रह कृत्स्न प्रायश्चित्त >> B.135 - P. 410 (229) अनुपचरितसद्भूतव्यवहारनय >> B.97 - P. 71 (230) अनुपचरितासद्भूतव्यवहारनय >> B.97 - P. 71 (231) अनुप्रेक्षा के परिणाम >> B.134 - P. 34, 724 (232) अनुभवावीचिमरण >> B.97 - P. 74 (233) अनुभागविपरिणामना >> B.97 - P. 75 (234) अनुभागोदीरणा >> B.97 - P. 76 (235) अनुयोगसमासवरणीय कर्म >> B.97 - P. 80 (236) अनुयोगसमासावरणीय कर्म >> B.97 - P. 80 (237) अनुवेलन्धरनागराजन् >> B.84 - P. 49 (238) अनुसंस्रण >> B.114 - P. 15, 15 (239) अनुस्त्रोतश्चारिन् >> B.114 - P. 14, 14 (240) अनुस्मरण >> B.97 - P. 81 (241) अनेक शय्यातरों में एक का निर्धारण >> B.135 - P. 559 (242) अनेषणीय आहार आदि के दुष्परिणाम >> B.134 - P. 169 (243) अन्तःकरण >> B.172 - P. 26 (244) अन्तःकरण के पर्याय >> B.172 - P. 27 (245) अन्तःकरणम् >> B.77 - P. 4 (246) अन्तःकरण >> B.97 - P. 88 (247) अन्तःकरण प्रकाराः >> B.47 - P. 17 (248) अन्तःकरणदेवता >> B.47 - P. 17 (249) अन्तःकरणम् >> B.47 - P. 17 (250) अन्तःकरणरूपमनोधर्माः >> B.47 - P. 17 (251) अन्तःकरणवृत्तिरूपविपर्ययः >> B.47 - P. 17 (252) अन्तःशल्यमरण >> B.60 - P. 23 / B.97 - P. 89 (253) अन्तःकरणस्य वृत्तिद्वयम् >> B.47 - P. 17 (254) अन्तर गृहस्थानादि प्रकरण >> B.90 - P. 653 (255) अन्तर द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 300 (256) अन्तरकरण >> B.60 - P. 23 / B.97 - P. 85 (257) अन्तरङ्गम् >> B.65 - P. 9 (258) अन्तरङ्गशत्रु >> B.42 - P. 22 (259) अन्तरङ्गसाधनानि >> B.47 - P. 17 (260) अन्तरञ्जिका >> B.84 - P. 14 (261) अन्तरञ्जी >> B.84 - P. 15 (262) अन्तरनिरुपाधिकभ्रमः >> B.47 - P. 17 (263) अन्तरिन्द्रियम् >> B.47 - P. 17 (264) अन्तर्विचारिणी >> B.42 - P. 22 (265) अन्नोन्नकारण >> B.77 - P. 65 (266) अन्य कारण >> B.134 - P. 184 (267) अन्य सांभोगिक को पीढ आदि के निमन्त्रण विधि >> B.90 - P. 658 (268) अन्य साधु के उपकरण उपयोग हेतु अवग्रह ग्रहण विधान >> B.90 - P. 306, 307 (269) अन्यगरणानुपस्थापन प्रायश्चित्त >> B.97 - P. 89 (270) अन्यतीर्थिक आदि के साथ ग्रामानुग्राम विहार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 495 (271) अन्यतीर्थिक और गृहस्थ से गृह धूम साफ़ करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 278, 280 (272) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 270, 273 (273) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के अक्षिपत्रों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 391 (274) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के आँखों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 390 (275) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के उत्तरोष्ठ रोग आदि परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 389 (276) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के केश परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 392 (277) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 388 (278) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के दांतों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 390 (279) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के भौहों आदि के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 391 (280) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के व्रण की चिकित्सा के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 271, 273 (281) अन्यतीर्थिक या गृहस्थ के होठों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 389 (282) अन्यतीर्थिकादि के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 385 (283) अन्यतीर्थिकादि द्वारा निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 378 (284) अन्यतीर्थिकादि द्वारा निर्ग्रन्थी-निर्ग्रन्थ के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 371 (285) अन्यतीर्थिकादि द्वारा सूई आदि के उत्तकरण के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 276, 278 (286) अन्यलिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (287) अन्यविवाहकरण >> B.97 - P. 91 (288) अन्यहितयुता करुणा >> B.97 - P. 92 (289) अपकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 568 (290) अपकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 231, 233 (291) अपञ्चाकरणम् >> B.47 - P. 25 (292) अपरिणत >> B.60 - P. 25 (293) अपरिणत >> B.77 - P. 67 / B.134 - P. 168 (294) अपरिणत दोष >> B.90 - P. 575 / B.97 - P. 96 / B.82 - P. 297 (295) अपरिणत मिश्र वनस्पतियों के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 578 (296)

अपरिणत-परिणत आम ग्रहण का विधि-निषेध >> B.90 - P. 580 (297) अपरिणत-परिणत इक्षु ग्रहण का विधि-निषेध >> B.90 - P. 582 (298) अपरिणत-परिणत ताल प्रलम्ब के ग्रहण का विधि-निषेध >> B.90 - P. 580 (299) अपरिणत-परिणत धान्यों के ग्रहण का विधि-निषेध >> B.90 - P. 579 (300) अपरिणत-परिणत ल्हसुन ग्रहण का विधि-निषेध >> B.90 - P. 583 (301) अपरिणते >> B.77 - P. 67 (302) अपरिणय >> B.77 - P. 67 (303) अपरिणामक >> B.60 - P. 26 (304) अपरिणामक साधु >> B.97 - P. 96 (305) अपरिणामा >> B.77 - P. 67 (306) अपरिणामा: >> B.65 - P. 9 (307) अपरिणामिक आदि वाचना के अयोग्य >> B.135 - P. 6 (308) अपरिणामी >> B.49 - P. 28 (309) अपरिवर्तमान परिणाम >> B.97 - P. 96 (310) अपवर्तनीय-अनपवर्तनीय आयुष्य विशेष थोड़ीक स्पष्टता, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.155 - P. 76 (311) अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना >> B.60 - P. 26 (312) अपसरणकाल >> B.49 - P. 28 (313) अपहरण के भय से वस्त्र के विवर्ण करने का निषेध >> B.90 - P. 684 (314) अपुट्टवागरण >> B.77 - P. 68 (315) अपुनःकरणसंगतः >> B.65 - P. 10 (316) अपुव्वकरण >> B.114 - P. 18, 18 (317) अपुव्वकरण >> B.77 - P. 69 (318) अपूरणु >> B.46 - P. 17 (319) अपूर्वकरण >> B.42 - P. 25 / B.49 - P. 29 / B.69 - P. 18 / B.60 - P. 27 / B.97 - P. 101 / B.114 - P. 18, 18 (320) अपूर्वकरण गुणस्थान >> B.97 - P. 102 (321) अपूर्वकरण गुणस्थानक >> B.69 - P. 20 (322) अपूर्वकरणना चरम समये सत्ता, जिज्ञासा - मलयगिरि-प्रेमहंसविजय >> B.150 - P. 16 (323) अपूर्वकरणम् >> B.65 - P. 10 (324) अपूर्वधरणम् >> B.65 - P. 10 (325) अपेक्षाकारणम् >> B.77 - P. 69 (326) अप्पडिहयवरणानंदसणधरे >> B.77 - P. 70 (327) अप्पाउरण >> B.77 - P. 71 (328) अप्पाहिकरणे >> B.77 - P. 72 (329) अप्रणतिवाक् >> B.42 - P. 25 / B.97 - P. 103 (330) अप्रत्याख्यानावरण >> B.49 - P. 29 (331) अप्रत्याख्यानावरण क्रोधादि >> B.97 - P. 106 (332) अप्रथमसमयनिर्ग्रन्थ >> B.60 - P. 29 (333) अप्रशस्त निःसरणात्मक तैजस >> B.97 - P. 107 (334) अप्रशस्तबृहण >> B.97 - P. 108 (335) अप्रासुक पात्र-ग्रहण करने के निषेध >> B.90 - P. 694 (336) अप्रासुक वस्त्र ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 671 (337) अफुसमाणगतिपरिणामे >> B.77 - P. 73 (338) अबंभचारिणो >> B.77 - P. 73 (339) अब्भंतरकरण >> B.77 - P. 73 (340) अब्भासकरण >> B.77 - P. 74 (341) अब्रह्मचर्य का सेवन करने वाले देव, मनुष्य और तिर्यच >> B.93 - P. 284 (342) अब्रह्मचर्य की उत्पत्ति के कारण >> B.135 - P. 426 (343) अभय कुमार ने श्रेणिक को चिन्ता का कारण पूछा >> B.95 - P. 74 (344) अभव्य जीव वधुमां वधु केटलुं ज्ञान प्राप्त करी शके ?, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 99 (345) अभानापादकावरणम् >> B.47 - P. 28 (346) अभिग्रह (करण 70) >> B.82 - P. 314 (347) अभिधारणा >> B.77 - P. 79 (348) अभिन्न वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 679 (349) अभिन्नग्रन्थः >> B.65 - P. 11 (350) अभिष्वक्करण >> B.97 - P. 116 (351) अभिहृत आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 560 (352) अभुज्जियमरण >> B.77 - P. 81 (353) अभ्युत्थान-कृतिकर्मकरण-संभोज >> B.135 - P. 608 (354) अभ्युद्यत मरण >> B.60 - P. 32 (355) अमंगल निवारण >> B.134 - P. 204 (356) अमरकुमारनी ढालो >> B.6 - P. 376 (357) अमात्य-पुत्र का जन्मोत्सव और कनकध्वज नामकरण >> B.95 - P. 214 (358) अमीसारणी >> B.46 - P. 20 (359) अम्बरचारण >> B.42 - P. 31 (360) अरणइ >> B.46 - P. 21 (361) अरणए >> B.46 - P. 21 (362) अरणक श्रावक >> B.44 - P. 34 (363) अरणि >> B.43 - P. 445 / B.46 - P. 21 (364) अरणिः >> B.47 - P. 33 (365) अरणिक >> B.45 - P. 17 (366) अरणिक मुनि >> B.7 - P. 26 / B.44 - P. 35 (367) अरणिकमुनि सझाय >> B.6 - P. 270 (368) अरणिकाचार्यना कथानकमां एक नवी ज वात, पत्रचर्चा - सौम्यप्रभविजय >> B.149 - P. 21 (369) अरणिकाचार्यना कथानकमां एक नवी ज वात, लेखक - तारकचन्द्रसागर >> B.147 - P. 5 (370) अरणी >> B.46 - P. 22 / B.77 - P. 86 (371) अरणेटउ >> B.46 - P. 22 (372) अरणेटटय >> B.43 - P. 446 (373) अरणोदय >> B.46 - P. 22 (374) अरणण >> B.77 - P. 86 (375) अरणवडिसग >> B.84 - P. 70 (376) अरणवडिसगं >> B.77 - P. 86 (377) अरणानी >> B.77 - P. 86 (378) अरण्य >> B.97 - P. 124 (379) अरण्यतृण >> B.82 - P. 353 (380) अरण्यावतंसक >> B.84 - P. 70 (381) अरनाथ >> B.45 - P. 18 / B.82 - P. 151 (382) अरनाथ (तीर्थंकर) >> B.44 - P. 35 (383) अरनाथ जिनालय, जीराळापाडो, खंभात >> B.54 - P. 189 (384) अरनाथ भगवान >> B.7 - P. 27 (385) अरन्न >> B.46 - P. 22 (386) अरिजअ >> B.84 - P. 71 (387) अरिजय >> B.42 - P. 33 (388) अरिजयपुर >> B.42 - P. 33 (389) अरिदम >> B.42 - P. 33 (390) अरिज्जय >> B.84 - P. 71 (391) अरिणो >> B.77 - P. 87 (392) अरुं >> B.46 - P. 23 (393) अरुं परं >> B.46 - P. 23 (394) अरुण >> B.42 - P. 34 / B.43 - P. 21 / B.69 - P. 121 / B.77 - P. 87 / B.84 - P. 73 / B.97 - P. 125 (395) अरुणकंत >> B.84 - P. 74 (396) अरुणकान्त >> B.84 - P. 74 (397) अरुणकील सोहम्म >> B.84 - P. 74 (398) अरुणगव सोहम्म >> B.84 - P. 74 (399) अरुणज्झअ >> B.84 - P. 74 (400) अरुणत्तरवडिसगं >> B.77 - P. 87 (401) अरुणदेव >> B.44 - P. 38 (402) अरुणद्वीप का संस्थान >> B.96 - P. 411 (403) अरुणद्वीप की चौड़ाई एवं परिधि >> B.96 - P. 410 (404) अरुणध्वज >> B.84 - P. 74 (405) अरुणनगर >> B.73 - P. 491 (406) अरुणपण >> B.46 - P. 23 (407) अरुणप्पभ >> B.77 - P. 87 / B.84 - P. 74 (408) अरुणप्पभा >> B.84 - P. 74 (409) अरुणप्पभो >> B.77 - P. 87 (410) अरुणप्रभ >> B.42 - P. 34 / B.84 - P. 74 (411) अरुणप्रभा >> B.84 - P. 74 (412) अरुणभूअ >> B.84 -

P. 74 (413) अरुणभूत >> B.84 - P. 74 (414) अरुणमहावर >> B.84 - P. 75 (415) अरुणमहावरो >> B.77 - P. 87 (416) अरुणवर >> B.77 - P. 87 / B.84 - P. 75 (417) अरुणवर द्वीप की चौड़ाई एवं परिधि >> B.96 - P. 411 (418) अरुणवर द्वीप की नित्यता >> B.96 - P. 412 (419) अरुणवर द्वीप के नाम का हेतु >> B.96 - P. 412 (420) अरुणवर समुद्रमांथी उठतो तमस्काय >> B.56 - P. 464 (421) अरुणवरभद्र >> B.84 - P. 75 (422) अरुणवरभद्रो >> B.77 - P. 87 (423) अरुणवरभद्र >> B.84 - P. 75 (424) अरुणवरमहाभद्र >> B.84 - P. 75 (425) अरुणवरमहाभद्रो >> B.77 - P. 87 (426) अरुणवरमहाभद्र >> B.84 - P. 75 (427) अरुणवरावभास >> B.84 - P. 75, 76 (428) अरुणवरावभासः >> B.77 - P. 87 (429) अरुणवरावभासभद्र >> B.84 - P. 75 (430) अरुणवरावभासभद्रो >> B.77 - P. 87 (431) अरुणवरावभासभद्र >> B.84 - P. 75 (432) अरुणवरावभासमहाभद्र >> B.84 - P. 75 (433) अरुणवरावभासमहाभद्रो >> B.77 - P. 87 (434) अरुणवरावभासमहाभद्र >> B.84 - P. 75 (435) अरुणवरावभासमहावर >> B.84 - P. 75 (436) अरुणवरावभासवर >> B.84 - P. 76 (437) अरुणवरावभासवरो >> B.77 - P. 87 (438) अरुणवरावभासो >> B.77 - P. 88 (439) अरुणवरो >> B.77 - P. 88 (440) अरुणवरोए >> B.77 - P. 88 (441) अरुणवरोद >> B.84 - P. 76 (442) अरुणवरोभास >> B.84 - P. 76 (443) अरुणविमाण >> B.84 - P. 76 (444) अरुणविमान >> B.84 - P. 76 (445) अरुणशिष्ट >> B.84 - P. 76 (446) अरुणसिट्ठ >> B.84 - P. 76 (447) अरुणा >> B.42 - P. 34 / B.77 - P. 88 (448) अरुणादि द्वीप समुद्र >> B.96 - P. 410 (449) अरुणादि द्वीप समुद्र का संक्षिप्त प्ररूपण >> B.96 - P. 410 (450) अरुणाभ >> B.84 - P. 76 (451) अरुणाभं >> B.77 - P. 88 (452) अरुणाभे >> B.77 - P. 88 (453) अरुणावपात >> B.84 - P. 77 (454) अरुणावभासो >> B.77 - P. 88 (455) अरुणी >> B.46 - P. 23 (456) अरुणुत्तरवडिंसग >> B.84 - P. 76 (457) अरुणे >> B.77 - P. 88 (458) अरुणो >> B.77 - P. 88 (459) अरुणोए >> B.77 - P. 88 (460) अरुणोत्तरावतंसक >> B.84 - P. 76 (461) अरुणोद >> B.77 - P. 88 (462) अरुणोद नंदिस्सर >> B.84 - P. 76 (463) अरुणोदए >> B.77 - P. 88 (464) अरुणोदक >> B.84 - P. 76 (465) अरुणोदग >> B.84 - P. 76 (466) अरुणोद्भास >> B.42 - P. 34 (467) अरुणोपपात >> B.77 - P. 88 / B.134 - P. 10 / B.84 - P. 77 / B.60 - P. 33 (468) अरुणोववाते >> B.77 - P. 88 (469) अरुणोववाय >> B.84 - P. 77 (470) अरुणोवाअ >> B.84 - P. 77 (471) अर्थ और मानकरण की अपेक्षा पुरुषों के चतुर्भूगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 596 (472) अर्थकरण >> B.97 - P. 127 (473) अर्थानन्तरचारिन् >> B.114 - P. 17, 17 (474) अलवेरूनी >> B.73 - P. 64 (475) अल्पतर-उदीरणा >> B.97 - P. 134 (476) अल्पबहुत्व द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 301 (477) अल्पबहुत्वविवरण >> B.6 - P. 401 (478) अल्पमहाकर्मादि युक्त जीव के बंधादि पुद्गलों का परिणमन >> B.93 - P. 473 (479) अल्लीवरणबन्ध >> B.97 - P. 135 (480) अवक्खरणं >> B.77 - P. 92 (481) अवक्तव्य उदीरणा >> B.97 - P. 136 (482) अवगाहना द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 300 (483) अवग्रह अवधारण >> B.69 - P. 194 (484) अवग्रह के ग्रहण करने का और उसमें रहने का विवेक >> B.90 - P. 654 (485) अवग्रहावरीण्य >> B.97 - P. 137 (486) अवच्छुरण >> B.43 - P. 23 (487) अवच्छुरण >> B.43 - P. 23 (488) अवतरणिका >> B.47 - P. 36 (489) अवतारधारणत्वम् >> B.47 - P. 36 (490) अवदारिन् >> B.114 - P. 24, 24 (491) अवधारण >> B.97 - P. 137 (492) अवधारणी भाषा >> B.97 - P. 137 (493) अवधारिणी भाषा >> B.90 - P. 516 / B.60 - P. 37 (494) अवधारिणी भाषा-प्रयोगविधि : षोडश वचन >> B.135 - P. 593 (495) अवधिज्ञानावरण >> B.60 - P. 38 (496) अवधिदर्शनावरण >> B.69 - P. 234 / B.60 - P. 38 (497) अवधिमरण >> B.134 - P. 524 / B.60 - P. 38 / B.97 - P. 137 (498) अवमप्रतिजागरणम् >> B.77 - P. 95 (499) अवरणहंसखडी >> B.77 - P. 95 (500) अवरुंडिय >> B.43 - P. 446 (501) अवरुंड >> B.43 - P. 508 (502) अवरुंडण >> B.43 - P. 25 (503) अवरुंडिअ >> B.43 - P. 25 (504) अवरुंडिओ >> B.77 - P. 96 (505) अवलम्बनाकरण >> B.97 - P. 138 (506) अवश्यायचारण >> B.97 - P. 139 (507) अवष्वकरण >> B.97 - P. 139 (508) अवसन्नमरण >> B.97 - P. 139 (509) अवसरणम् >> B.65 - P. 13 (510) अवस्थित उदीरणा >> B.97 - P. 140 (511) अवस्सरणज्जं >> B.77 - P. 97 (512) अवहरण >> B.49 - P. 35 (513) अविकृतपरिणामः >> B.47 - P. 38 (514) अविधि से सूई आदि के प्रत्यर्पण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 717 (515) अविनय करने का प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 99, 99 (516) अविनय का परिणाम >> B.134 - P. 613 (517) अविनीत -सुविनीत के आचरण का प्रभाव >> B.90 - P. 92, 92 (518) अविरुद्ध कारणानुपलब्धि हेतु >> B.172 - P. 54 (519) अविरुद्ध कारणोपलब्धि हेतु >> B.172 - P. 54 (520) अव्यक्तबालमरण >> B.97 - P. 146 (521) अव्याघात मरण >> B.49 - P. 36 (522) अव्याबाध देवों के अव्याबाधत्व के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 673 (523) अशन आदि का व्याकरणसम्मत अर्थ >> B.82 - P. 98 (524) अशनादि के न मिलने पर क्रोध करने का निषेध >> B.90 - P. 564 (525) अशनादिका आहार करने के लिये पोक्खली ने शंख को निमंत्रण दिया >> B.95 - P. 355 (526) अशरण >> B.49 - P. 32 (527) अशरण अनुप्रेक्षा >> B.134 - P. 30 / B.60 - P. 41 (528) अशरण भावना >> B.69 - P. 261 / B.82 - P. 301 (529) अशरणभावना >> B.97 - P. 149 (530) अशरणानुप्रेक्षा >> B.8 - P. 7 / B.42 - P. 40 / B.49 - P. 32 / B.77 - P. 102 / B.97 - P. 147 (531) अशस्त्र परिणत अग्रबीजादि के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 577 (532) अशस्त्र परिणत इक्षु आदि के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 576 (533) अशस्त्र परिणत उत्पलादी के ग्रहण

का निषेध >> B.90 - P. 577 (534) अशस्त्र परिणत कमलकन्द आदि के ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 575 (535) अशस्त्र परिणत कोमल फलों के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 576 (536) अशस्त्र परिणत पिपल्यादि के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 575 (537) अशस्त्र परिणत प्रलंबो के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 576 (538) अशस्त्र परिणत प्रवालो के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 576 (539) अशस्त्र परिणति इक्षु आदि के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 577 (540) अशस्त्र परिणति जीव युक्त पुराने आहार के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 578 (541) अशस्त्र परिणति लसुण आदि के ग्रहण का निषेध >> B.90 - P. 577 (542) अशुद्ध-ऋजुसूत्रनय >> B.97 - P. 149 (543) अश्व का उदाहरण >> B.134 - P. 470 (544) अश्वकर्णकरण >> B.49 - P. 33 / B.97 - P. 152 (545) अश्वकर्णकरणाद्धा >> B.97 - P. 152 / B.82 - P. 370 (546) अश्वों का उदाहरण >> B.95 - P. 455 (547) अष्टप्रकारी पूजा दिवसमां व्रण वार !, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.161 - P. 43 (548) अष्टप्रकारी पूजा प्रकरण बालावबोध >> B.6 - P. 338 (549) अष्टापद पर्वत पर सर्वे परमात्मानि अवस्था, समाधान - निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.155 - P. 61 (550) असंज्ञी जीवों के अकामनिकरण वेदना का प्ररूपण >> B.93 - P. 491 (551) असंतरण >> B.77 - P. 103 (552) असंथरण >> B.43 - P. 28 (553) असंपओगाणुसरणं >> B.77 - P. 104 (554) असंहरणीय जीव >> B.82 - P. 20 (555) असदकारणो >> B.77 - P. 105 (556) असत्त्वापादकावरणम् >> B.47 - P. 41 (557) असत्यामृषः शब्दनो समासविग्रह, जिज्ञासा - निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.154 - P. 70 (558) असदावरणम् >> B.47 - P. 41 (559) असदभूत व्यवहारनय >> B.60 - P. 44 (560) असमर्थकारण >> B.49 - P. 31 (561) असमवायिकारण >> B.49 - P. 31 (562) असमवायिकारणम् >> B.47 - P. 41 (563) असमाधिस्थ चित्त के प्रकार और कारण >> B.135 - P. 225 (564) असमीक्ष्याधिकरण >> B.42 - P. 43 / B.97 - P. 156 (565) असमीक्ष्याधिकरण अतिचार >> B.69 - P. 221 (566) असरण >> B.77 - P. 107 (567) असाधारण गुण >> B.69 - P. 160 (568) असाधारण धर्म >> B.69 - P. 60 (569) असाधारणकारणम् >> B.47 - P. 43 (570) असाधारणत्वम् >> B.47 - P. 44 (571) असाधारणानैकान्तिकहेत्वाभासः >> B.47 - P. 44 (572) असाध्य रोगी को अनशन की प्रेरणा >> B.135 - P. 530 (573) असारणा >> B.77 - P. 107 (574) असारणा का दुष्परिणाम >> B.135 - P. 73 (575) असुखकरणा >> B.97 - P. 160 (576) असुरदेव-आयुष्यबंध के कारण >> B.134 - P. 349 (577) अस्थितिकरण >> B.97 - P. 162 (578) अस्थिर धूणी आदि पर कायोत्सर्ग आदि करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 251, 253 (579) अस्थिरणाम >> B.77 - P. 110 (580) अस्थिरनाम >> B.97 - P. 162 (581) अस्वाध्याय काल का निर्धारण >> B.134 - P. 75 (582) अस्वाध्यायिक में स्वाध्यायकरण के अपवाद >> B.135 - P. 651 (583) अस्सकण्णकरण >> B.97 - P. 152 (584) अस्सकण्णकरणाद्धा >> B.97 - P. 152 (585) अहरं >> B.46 - P. 31 (586) अहरूपहरं >> B.46 - P. 31 (587) अहापरिन्नाय >> B.77 - P. 112 (588) अहारिणो >> B.77 - P. 113 (589) अहिकरणं >> B.77 - P. 113 (590) अहिकरणकरो >> B.77 - P. 113 (591) अहिकरणोईरण >> B.77 - P. 113 (592) अहिगरण >> B.114 - P. 27, 27 (593) अहिगरणं >> B.77 - P. 113 (594) अहिगरणकर >> B.114 - P. 27, 27 (595) अहिगरणकिरिया >> B.77 - P. 114 (596) अहिगरणसाला >> B.43 - P. 29 (597) अहिगरणि >> B.77 - P. 114 (598) अहिगरणिण् >> B.77 - P. 114 (599) अहिगरणिखोडि >> B.43 - P. 29 (600) अहिगरणिया >> B.77 - P. 114 (601) अहिगरणी >> B.77 - P. 114 / B.84 - P. 87 (602) अहिगरणे >> B.77 - P. 114 (603) अहिगरणोदीरण >> B.97 - P. 38 (604) अहिगरिणता >> B.77 - P. 114 (605) अहिगारनिउत्तो >> B.77 - P. 114 (606) अहिसरणेहिं >> B.77 - P. 115 (607) अहीकरण >> B.114 - P. 28, 28 (608) अहूरणी >> B.46 - P. 32 (609) अहोकरण >> B.114 - P. 28, 28 (610) अहोरण >> B.43 - P. 30 (611) अहोरात्रसंख्याज्ञान हेतु करणगाथा >> B.135 - P. 181 (612) आंतरणी >> B.46 - P. 51 (613) आंतरनिरूपाधिक भ्रम >> B.47 - P. 115 (614) आंतरिक परिणाम में भेद द्वारा कर्मबंध में भेद >> B.69 - P. 170 (615) आंतरं >> B.46 - P. 51 (616) आउंटणपसारणं >> B.77 - P. 117 (617) आउज्जियाकरणं >> B.77 - P. 118 (618) आउज्जीकरणं >> B.77 - P. 118 (619) आउरसरणं >> B.77 - P. 119 (620) आउरस्सरण >> B.77 - P. 119 (621) आउस्सियकरणं >> B.77 - P. 119 (622) आकरणम् >> B.77 - P. 120 (623) आकार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 745 (624) आकार भावादि मात्रा से लेश्याओं का परस्पर अपरिणमन >> B.93 - P. 128 (625) आकारण >> B.46 - P. 36 (626) आकाश के प्रदेशों का परिणाम >> B.69 - P. 133 (627) आकाशचारण >> B.97 - P. 168 (628) आकुंचन प्रसारण दोष >> B.69 - P. 222 (629) आक्रन्दन >> B.97 - P. 169 (630) आगंतुक श्रमणो को निमंत्रित करने की विधि >> B.90 - P. 602 (631) आगमद्रव्यकरण >> B.97 - P. 172 (632) आगमभावग्रन्थकृति >> B.97 - P. 176 (633) आगमवचनपरिणतिः >> B.65 - P. 16 (634) आगमवांचनना निषेध अंगे आवश्यक विचारणा, लेखक - शीलचन्द्रविजय >> B.160 - P. 141 (635) आगमो प्राकृतभाषामां केम रचाया ?, जिज्ञासा - शीलचन्द्र-निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.157 - P. 38 (636) आगमो प्राकृतभाषामां केम रचाया ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.159 - P. 73 (637) आग्नेयी धारणा >> B.60 - P. 48 (638) आघेरं >> B.46 - P. 38 (639) आचरण >> B.97 - P. 179 (640) आचरण की दुर्लभता >> B.134 - P. 521 (641) आचरणी >> B.46 - P. 38 (642) आचार धर्म प्रणिधी >> B.90 - P. 51, 51 (643) आचार-सम्पन्नता के परिणाम >> B.134 - P. 88 (644) आचारनिर्युक्ति >> B.84 - P. 102 (645) आचारप्रणिधि >> B.84 - P. 102 (646)

आचारप्रणिधि: >> B.77 - P. 124 (647) आचार्य की आशातना के परिणाम >> B.134 - P. 91 (648) आचार्य की ऋणमुक्ति के उपाय >> B.135 - P. 84 (649) आचार्य के अपहरण या परिवर्तनकरण का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 306, 307 (650) आचार्य के चरण-प्रमार्जन की विधि >> B.135 - P. 77 (651) आचार्य के दिए बिना आहार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 609 (652) आचार्य के प्रकार : गीतार्थ व सारणा के आधार पर >> B.135 - P. 72 (653) आचार्य द्वारा प्रेरणा : चार स्मारणा काल >> B.135 - P. 15 (654) आज्ञा ग्रहण करने की विधि >> B.90 - P. 653 (655) आज्ञाकरणम् >> B.65 - P. 16 (656) आज्ञापरिणामिक >> B.60 - P. 49 (657) आज्ञाभंग का परिणाम : चन्द्रगुप्त-चाणक्य दृष्टांत >> B.135 - P. 89 (658) आटारणमां गई >> B.46 - P. 39 (659) आठ निरुक्तों के आठ उदाहरण >> B.134 - P. 690 (660) आठ प्रकार की लोकस्थिति और वस्ति का उदाहरण >> B.96 - P. 13 (661) आणावचरणिग >> B.43 - P. 33 (662) आतुरस्मरण >> B.60 - P. 50 (663) आत्म परिणाम >> B.49 - P. 41 (664) आत्मनिर्यापक-परनिर्यापक >> B.135 - P. 29 (665) आत्मपरिणतज्ञानम् >> B.65 - P. 17 (666) आत्यंतिक मरण >> B.49 - P. 41 (667) आत्यन्तिक मरण >> B.60 - P. 51 (668) आत्यन्तिकमरण >> B.97 - P. 191 (669) आदरण >> B.46 - P. 41 (670) आदित्यमरण >> B.77 - P. 130 (671) आदिनाथ जिनालय, देरासरवाली पोछ-धनासुधारनी पोछ, अमदावाद >> B.55 - P. 141 (672) आदिमान परिणाम >> B.69 - P. 162 (673) आदिश्वर जिनालय, नागजी भुधरनी पोछ, अमदावाद >> B.55 - P. 67 (674) आदेश्वर जिनालय (उपरना माळे), झवेरीवाडो, पाटण >> B.53 - P. 252 (675) आदेश्वर जिनालय (उपरना माळे), शामळाजीनी शेरी, पाटण >> B.53 - P. 132 (676) आदेश्वर जिनालय, अंबर कोलोनी, हिरनगर, सुरत >> B.61 - P. 196 (677) आदेश्वर जिनालय, नारणजीनो पाडो, पाटण >> B.53 - P. 95 (678) आदेश्वर जिनालय, लाला ठाकोरनी पोछ, रांदेर, सुरत >> B.61 - P. 179 (679) आदेश्वर जिनालय, शत्रुंजय टावर, रांदेर रोड, सुरत >> B.61 - P. 189 (680) आदेश्वरजी जिनालय, वाघेश्वरनी पोछ, अमदावाद >> B.55 - P. 57 (681) आदोलकरण >> B.97 - P. 195 (682) आद्यन्तमरण >> B.97 - P. 195 (683) आधरण >> B.46 - P. 41 (684) आधाकर्म आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 558 (685) आधाकर्म के दुष्परिणाम >> B.134 - P. 158 (686) आधाकर्मी आहार करने से कर्मबन्ध का एकांत स्थान निषेध >> B.90 - P. 555 (687) आधिकरणिकी क्रिया >> B.60 - P. 52 / B.97 - P. 196 (688) आधिकारिणी >> B.42 - P. 47 (689) आधिपत्य करने वाले इन्द्र और लोकपालों के नाम >> B.93 - P. 656 (690) आधोरण >> B.46 - P. 41 (691) आनन्द का अभिग्रह और शिवानन्दा को गृहीधर्म पालन के लिए प्रेरणा देना >> B.95 - P. 298 (692) आनन्द का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना >> B.95 - P. 301 (693) आनन्द का गृहीधर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 296 (694) आनन्द का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति. और उसके बाद सिद्धगति का निरूपण >> B.95 - P. 304 (695) आनन्द के प्रव्रज्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में गौतम का प्रश्न और भगवान का समाधान >> B.95 - P. 299 (696) आनन्द गाथापति के श्रावक धर्म का विवरण >> B.95 - P. 296 (697) आन्तरनिर्विकल्पसमाधि: >> B.47 - P. 50 (698) आभरण >> B.77 - P. 131 / B.84 - P. 97 (699) आभरणचङ्गेरी >> B.77 - P. 131 (700) आभरणपिया >> B.77 - P. 131 (701) आभरणवासा >> B.77 - P. 131 (702) आभरणविचित्ताणि >> B.77 - P. 131 (703) आभरणविधी >> B.77 - P. 131 (704) आभरणवुट्टी >> B.77 - P. 131 (705) आभरणाणि >> B.77 - P. 131 (706) अभिनिबोधिज्ञानावरणीय >> B.60 - P. 53 (707) अभियोगक देव ने भ. महावीर के समवसरण की भूमिका का संप्रामार्जन किया >> B.95 - P. 248 (708) आभ्यन्तर ग्रन्थ के प्रकार >> B.134 - P. 400 (709) आभ्यन्तर ग्रन्थ 14 >> B.82 - P. 398 (710) आभ्यन्तरनिर्वृत्ति >> B.97 - P. 204 (711) आभ्रण >> B.46 - P. 43 (712) आमंत्रण के सम्बन्ध में असावद्य भाषा विधि >> B.90 - P. 521 (713) आमंत्रण में सावद्य भाषा का निषेध >> B.90 - P. 528 (714) आमंत्रणी भाषा-विवेक >> B.135 - P. 593 (715) आमंत्रिणी भाषा >> B.49 - P. 39 (716) आमन्त्रण >> B.97 - P. 204 (717) आमन्त्रणी >> B.60 - P. 54 (718) आमन्त्रणी भाषा >> B.97 - P. 204 (719) आमरणंतदोसे >> B.77 - P. 134 (720) आमरणदोसो >> B.77 - P. 134 (721) आमरणान्त दोष >> B.97 - P. 204 (722) आमलकप्पा में भ. महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 246 (723) आयंतियमरणे >> B.77 - P. 135 (724) आयरणं >> B.77 - P. 137 (725) आयरणया >> B.77 - P. 137 (726) आयरणा >> B.77 - P. 137 (727) आयापरिणामो >> B.77 - P. 139 (728) आयारणिज्जुत्ति >> B.84 - P. 102 (729) आयु क्षय के कारण >> B.93 - P. 441 (730) आयु परिणाम के भेद >> B.93 - P. 422 (731) आयुष्य कर्मनी उत्कृष्टस्थिति, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 71 (732) आयोजिकाकरण >> B.97 - P. 206 (733) आयोज्यकरणम् >> B.65 - P. 19 (734) आरंभपरिणाम >> B.77 - P. 141 (735) आरण >> B.42 - P. 49 / B.43 - P. 35 / B.84 - P. 103 / B.60 - P. 55 (736) आरण कल्प >> B.69 - P. 116 (737) आरण-अच्युत देवों के स्थान >> B.96 - P. 666 (738) आरणं >> B.77 - P. 141 (739) आरणा >> B.77 - P. 141 (740) आरणाल >> B.43 - P. 35 (741) आरणि >> B.46 - P. 44 (742) आरण्ण >> B.77 - P. 141 (743) आरण्णगतणं >> B.77 - P. 141 (744) आरण्णिय >> B.77 - P. 141 (745) आरण्य >> B.42 - P. 49 (746) आरण्यक >> B.42 - P. 49 (747) आरण्यकपर्व >> B.50 - P. 23 (748) आरण्यकम् >> B.77 - P. 141 (749) आरण्यकादिकों का आहारादि ग्रहण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 590 (750) आरण्यिक >> B.114 - P. 41, 41 (751) आरनाल >> B.43 - P. 35 (752) आरनालं >> B.77 - P. 141 (753) आरनिबद्धा >> B.77 - P. 141 (754) आरन्निय >>

B.77 - P. 141 / B.114 - P. 41, 41 (755) आरम्भ परिग्रह विरत कर्मों का अन्त करने वाला होता है >> B.90 - P. 475 (756) आरम्भकारणम् >> B.47 - P. 51 (757) आरम्भजन्य कार्य करने के प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 274, 276 (758) आराधना 32 द्वारनो रास >> B.133 - P. 47 (759) आराधना प्रकरण बालावबोध >> B.5 - P. 295 (760) आराधना-विराधना के परिणाम >> B.134 - P. 7 (761) आराहणामरणते >> B.77 - P. 142 (762) आराहियचरणया >> B.77 - P. 142 (763) आरुण (आ+श्लिष) >> B.43 - P. 510 (764) आरोहपरिणाहयुक्तता >> B.77 - P. 143 (765) आर्द्रकुमारनो रास >> B.6 - P. 372 (766) आर्य वज्रनुं साधर्मिक-वात्सल्य, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.160 - P. 35 (767) आर्य सुधर्मा के श्रमण-निर्ग्रन्थों की परम्परा >> B.95 - P. 171 (768) आर्यवज्रिन् >> B.84 - P. 34 (769) आर्या सुभद्रा को बालक्रीड़ाओं का निषेध करना >> B.95 - P. 230 (770) आलोचना परिणाम मात्र से आराधक >> B.135 - P. 90 (771) आलोचना-निन्दा-गर्हा के परिणाम >> B.134 - P. 124 (772) आलोचनार्ह : आगम-व्यवहारी एवं स्मरणा विधि >> B.135 - P. 101 (773) आवज्जीकरण >> B.77 - P. 147 (774) आवरण >> B.49 - P. 41 / B.97 - P. 214 / B.114 - P. 43, 43 (775) आवरण >> B.77 - P. 148 (776) आवरणक्षय और नय >> B.134 - P. 228 (777) आवरणत्वम् >> B.47 - P. 52 (778) आवरणद्वयम् >> B.47 - P. 52 (779) आवरणप्रविभक्तिः >> B.77 - P. 148 (780) आवरणम् >> B.65 - P. 20 (781) आवरणशक्तिः >> B.47 - P. 52 (782) आवर्जितकरण >> B.97 - P. 215 (783) आवर्जीकरण >> B.60 - P. 56 (784) आवश्यककरण >> B.97 - P. 216 (785) आवीईमरणे >> B.77 - P. 150 (786) आवीचि मरण >> B.49 - P. 42 / B.60 - P. 57 (787) आवीचिमरण >> B.134 - P. 524 / B.97 - P. 217 (788) आवीचिमरण >> B.77 - P. 150 (789) आवीचियमरण >> B.77 - P. 150 (790) आव्रण >> B.46 - P. 48 (791) आशकरणजी >> B.50 - P. 23 (792) आसकरण >> B.75 - P. 45 / B.133 - P. 34, 36, 225 (793) आसकरण जी (आचार्य) >> B.44 - P. 59 (794) आसकरण >> B.77 - P. 150 (795) आसकरणजी महाराज के गुण >> B.133 - P. 225 (796) आसकरन >> B.74 - P. 204, 286 (797) आसक्त अश्वों के उदाहरण से श्रमणादि की आसक्ति के फल का निर्देश >> B.95 - P. 458 (798) आसक्तिपूर्वक आधाकर्म आहार करने का फल >> B.90 - P. 557 (799) आसन्नमरण >> B.97 - P. 220 (800) आसालिक सर्प - एक अध्ययन, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.160 - P. 1 (801) आसिग (ग्रन्थकार) >> B.73 - P. 120 (802) आसुकारिणः >> B.77 - P. 153 (803) आसुरिनामा >> B.77 - P. 154 (804) आस्तरण >> B.97 - P. 221 (805) आस्थिरनाम >> B.60 - P. 45 (806) आह (बूझ) >> B.43 - P. 511 (807) आहरण >> B.49 - P. 38 / B.97 - P. 223 / B.114 - P. 48, 48 (808) आहरणतद्दोसे >> B.77 - P. 155 (809) आहरणतद्दोसे >> B.77 - P. 155 (810) आहरणा >> B.43 - P. 39 / B.77 - P. 155 (811) आहार करने का उद्देश्य >> B.90 - P. 600 (812) आहार करने की विधि >> B.134 - P. 136 (813) आहार करने के 6 कारण >> B.82 - P. 406 (814) आहार करने के स्थान का निर्देश >> B.90 - P. 600 (815) आहार करने के हेतु >> B.134 - P. 139 (816) आहार का उपभोग करने में माया करने का निषेध >> B.90 - P. 607 (817) आहार की आसक्ति करने का निषेध >> B.90 - P. 598 (818) आहार त्याग के 6 कारण >> B.82 - P. 407 (819) आहार त्यागने के कारण >> B.90 - P. 612 (820) आहार द्रव्य : शीत-उष्ण परिणामी >> B.135 - P. 112 (821) आहार न करने के हेतु >> B.134 - P. 140 (822) आहार निष्पादन के कारण व उसे ग्रहण करने तथा खाने की विधि >> B.90 - P. 534 (823) आहार लेने के कारण >> B.90 - P. 612 (824) आहार-परिणाम >> B.134 - P. 138 (825) आहार-प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 454 (826) आहारक शरीर : संघातपरिशाटकरण >> B.134 - P. 602 (827) आहारकशरीरनाम >> B.97 - P. 225 (828) आहारणनिपुण >> B.82 - P. 250 (829) आहारपरिणा >> B.77 - P. 156 / B.84 - P. 112 (830) आहारशरीरनाम >> B.97 - P. 227 (831) इंगिणिमरणे >> B.77 - P. 158 (832) इंगिनी अनशन - इंगिनीमरण >> B.134 - P. 25 (833) इंगिनीमरण >> B.49 - P. 67 / B.69 - P. 274 (834) इंगिनीमरण >> B.77 - P. 158 (835) इंगियमरण >> B.77 - P. 158 (836) इंदवागरण >> B.84 - P. 118 (837) इंदियकरण >> B.77 - P. 159 (838) इंदवारणो >> B.46 - P. 55 (839) इंदवारूपी >> B.46 - P. 55 (840) इङ्गिनीमरण >> B.97 - P. 229 / B.114 - P. 49, 49 (841) इङ्दिनीमरण >> B.60 - P. 59 (842) इच्छा परिणाम टिप्पड़ >> B.74 - P. 509 (843) इच्छापरिणामचौपाइ >> B.73 - P. 444 (844) इच्छाप्रवृत्तदर्शनबालमरण >> B.97 - P. 230 (845) इतरनिगोद >> B.42 - P. 53 (846) इत्थीपरिणा >> B.77 - P. 163 / B.84 - P. 121 (847) इन्द्रनाग >> B.84 - P. 114 (848) इन्द्रनाग कथा >> B.141 - P. 104 (849) इन्द्रनाग प्रत्येकबुद्ध कथा >> B.137 - P. 343 (850) इन्द्रनालमणि >> B.42 - P. 55 (851) इन्द्रनीलः >> B.77 - P. 163 (852) इन्द्रव्याकरण >> B.84 - P. 118 (853) इन्द्रिय संयम (करण 70) >> B.82 - P. 311 (854) इन्द्रिय-आसक्ति के परिणाम >> B.134 - P. 147 (855) इन्द्रिय-निग्रह के परिणाम >> B.134 - P. 148 (856) इन्द्रियज्ञानावरण >> B.135 - P. 156 (857) इन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिका >> B.77 - P. 163 (858) इन्द्रियप्रणिधि >> B.97 - P. 235 (859) इन्द्रियवशार्तमरण >> B.97 - P. 236 (860) इन्द्रियावरण होने पर भी विज्ञान अनावृत >> B.135 - P. 116 (861) इन्द्रियावरण-ज्ञानावरण के भेद >> B.135 - P. 116 (862) इन्द्रियावरण-विज्ञानावरण का विषय विभाग >> B.135 - P. 116 (863) इरिण >> B.43 - P. 42, 448 (864) इसिं तबच्छि करणी >> B.77 - P. 167 (865) ईश्वरकारणिकः >> B.77 - P. 166 (866) ईश्वरकारणिनः >> B.77 - P. 166 (867) ईश्वरप्रणिधानम् >> B.47 - P. 56 (868)

ईसिपंचहस्सक्खरुच्चारणद्धा >> B.77 - P. 167 (869) ईसी तंबच्छि करणी >> B.77 - P. 167 (870) ईहावणीय कर्म >> B.97 - P. 242 (871) उंझरं >> B.46 - P. 70 (872) उंवरणी, राजस्थान >> B.58 - P. 136 (873) उआरणां >> B.46 - P. 56 (874) उक्कइयकरणं >> B.77 - P. 169 (875) उक्किरणगाई >> B.77 - P. 171 (876) उक्कोससंथरणं >> B.77 - P. 172 (877) उक्खिरण >> B.43 - P. 49 (878) उक्खिरणग >> B.43 - P. 49 (879) उक्खिव्यक्तिप्रकरण >> B.73 - P. 15, 72, 157, 576, 590 (880) उग्रनक्र >> B.42 - P. 57 (881) उग्रनाद >> B.42 - P. 57 (882) उचरन >> B.46 - P. 57 (883) उच्चार-प्रसवण भूमि के प्रतिलेखन न करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 729 (884) उच्चारण >> B.49 - P. 137 (885) उच्चारणम् >> B.47 - P. 56 (886) उच्चुरण >> B.43 - P. 449 (887) उच्छिरण >> B.43 - P. 450 (888) उच्छुरण >> B.43 - P. 52 (889) उच्छुरण >> B.43 - P. 52 (890) उच्छूरण >> B.43 - P. 450 (891) उज्झिता के उदाहरण से महाव्रत परित्याग के फल का निर्देश >> B.95 - P. 453 (892) उज्झिता को बाहर डालने के कार्य करने का आदेश दिया >> B.95 - P. 452 (893) उड्डाकरण >> B.46 - P. 59 (894) उड्डिआहरण >> B.43 - P. 55 (895) उत्कीरण काल >> B.49 - P. 142 (896) उत्कुटाकासन : निद्रा-जागरण >> B.135 - P. 260 (897) उत्तमकुमारनो रास >> B.3 - P. 283 / B.4 - P. 241 / B.6 - P. 196, 198 (898) उत्तमचरणदास(स्वामी) >> B.50 - P. 28 (899) उत्तरकरण >> B.97 - P. 250 (900) उत्तरकरण >> B.77 - P. 184 (901) उत्तरकरणकृति >> B.97 - P. 250 (902) उत्तरगुणनिर्वर्तनाधिकरण >> B.97 - P. 250 (903) उत्तरणं >> B.77 - P. 185 (904) उत्तरणवरंडिआ >> B.43 - P. 56 (905) उत्तरणवरंडी >> B.43 - P. 56 (906) उत्तरपओगकरणं >> B.77 - P. 185 (907) उत्तरप्रकृति विपरिणामना >> B.97 - P. 251 (908) उत्तरप्रयोगकरण >> B.97 - P. 251 (909) उत्तरीकरणं >> B.77 - P. 186 (910) उत्तीरण >> B.46 - P. 60 (911) उत्थानश्रुत आदि ग्रन्थों का अतिशय >> B.135 - P. 658 (912) उत्पत्ति-मरण विरहकाल >> B.82 - P. 18 (913) उत्प्वकरणाभिष्वक्कण >> B.97 - P. 253 (914) उत्सरण >> B.49 - P. 43 (915) उत्सारण के दोष : उत्सारवाचक दृष्टांत >> B.135 - P. 117 (916) उत्सारण के विकल्प और प्रायश्चित्त >> B.135 - P. 121 (917) उदए मारणंतिए >> B.77 - P. 191 (918) उदक (जल) के चार प्रकार (परिणाम) >> B.93 - P. 332 (919) उदक का चार यामधर्म से पंचमहाव्रत धर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 156 (920) उदयकरण >> B.73 - P. 226 / B.75 - P. 87 (921) उदयकरण (कवि) >> B.73 - P. 164 (922) उदयचरण प्रमोद >> B.74 - P. 539 (923) उदयप्राप्त ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के त्रिविध बंध भेद और चौबीसदंडों में प्ररूपण >> B.93 - P. 389 (924) उदाहरण >> B.49 - P. 27, 138 / B.77 - P. 190 / B.134 - P. 469, 470, 470, 471 / B.60 - P. 67 / B.97 - P. 258 / B.172 - P. 84 (925) उदाहरण सहित मैथुन सेवन के असंयम का प्ररूपण >> B.93 - P. 296 (926) उदाहरण सहित समय के स्वरूप का प्ररूपण >> B.96 - P. 696 (927) उदाहरणतु >> B.46 - P. 60 (928) उदाहरणम् >> B.65 - P. 24 (929) उदाहरणवाक्यम् >> B.47 - P. 58 (930) उदाहरणाभास >> B.172 - P. 84 (931) उदाहरणाभास के भेद >> B.172 - P. 84 (932) उदीरण >> B.77 - P. 190 (933) उदीरणा >> B.8 - P. 9 / B.49 - P. 138 / B.77 - P. 190 / B.60 - P. 67 / B.97 - P. 258 (934) उदीरणाकरण >> B.97 - P. 259 (935) उदीरणाभविं >> B.77 - P. 190 (936) उदीरणाभावी >> B.49 - P. 138 (937) उदीरणावलिका प्राप्त >> B.60 - P. 67 (938) उदीरणोदय >> B.97 - P. 259 (939) उदीरनै >> B.46 - P. 61 (940) उद्गम दोषों के प्रकार और विवरण >> B.134 - P. 158 (941) उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए >> B.77 - P. 192 (942) उद्धत्तमणहारिणो >> B.77 - P. 193 (943) उद्धरण >> B.43 - P. 59 (944) उद्धरणं >> B.77 - P. 193 (945) उद्धरणकथा >> B.73 - P. 59 (946) उद्धर्तनकरणं >> B.77 - P. 194 (947) उद्धारणा >> B.114 - P. 57, 57, 57, 57 (948) उद्भिन्न आहार ग्रहण करने का दोष >> B.90 - P. 560 (949) उद्भिन्न आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 561 (950) उद्यान पालक के कहे अनुसार चित्त सारथि का केशिकुमार श्रमण को वंदन करने के लिए जाना और धर्म-श्रवण करना >> B.95 - P. 273 (951) उद्वर्तनाकरण >> B.97 - P. 262 (952) उधरं >> B.46 - P. 61 (953) उन्नत-प्रणत मन संकल्पादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भूतों का प्ररूपण >> B.93 - P. 578 (954) उन्नत-प्रणत वृक्षों के दृष्टांत द्वारा पुरुषों के चतुर्भूतों का प्ररूपण >> B.93 - P. 598 (955) उन्मग्न-जला और निमग्न-जला महानदियों में वर्धकी रत्न द्वारा सेतु का निर्माण तथा ससैन्य भरत का (नदियों को) पार करना >> B.95 - P. 124 (956) उन्मार्ग से गमन करने वालों की नरक गति >> B.90 - P. 195, 196 (957) उन्मुलनव्रणरोह >> B.42 - P. 61 (958) उपकरण >> B.49 - P. 140 / B.69 - P. 63 / B.97 - P. 263 (959) उपकरण अवग्रह-ग्रहण विधान >> B.90 - P. 713 (960) उपकरण असंवर (आस्त्रव) >> B.60 - P. 69 (961) उपकरण इंद्रिय >> B.49 - P. 140 (962) उपकरण इन्द्रिय >> B.134 - P. 144 (963) उपकरण ऊणोदरी >> B.82 - P. 122 (964) उपकरण एवं योग्यता के भेद से मुनि के 4 प्रकार >> B.82 - P. 233 (965) उपकरण का प्रतिलेखन >> B.90 - P. 715 (966) उपकरण का प्रत्यपण एवं प्रत्याख्यान >> B.90 - P. 717 (967) उपकरण के अधिकरण ?, लेखक - परमयशविजय >> B.146 - P. 3 (968) उपकरण तथा भक्तपान ऊणोदरी >> B.134 - P. 156 (969) उपकरण द्रव्येन्द्रिय >> B.69 - P. 63 (970) उपकरण धारण के कारण >> B.90 - P. 712 (971) उपकरण बकुश >> B.49 - P. 140 / B.60 - P. 69 / B.82 - P. 399 (972) उपकरण विषयक संयोजना >> B.82 - P. 404 (973) उपकरण संख्या (प्रवचन सारोद्धार द्वार 60) >> B.82 - P. 14 (974) उपकरण संयम >> B.69 - P. 260 / B.134 - P. 658 (975) उपकरण संयोग >> B.69 - P. 173 (976) उपकरण संयोगाधिकरण

>> B.49 - P. 140 (977) उपकरण संवर >> B.60 - P. 69 (978) उपकरण सहित विहार >> B.135 - P. 125 (979) उपकरणइन्द्रिय >> B.60 - P. 69 (980) उपकरणक्रिडा >> B.42 - P. 61 (981) उपकरणबकुश >> B.69 - P. 290 / B.97 - P. 264 (982) उपकरणम् >> B.47 - P. 59 (983) उपकरणसंयम >> B.97 - P. 264 (984) उपकरणसंयोजना >> B.97 - P. 264 (985) उपकरणेन्द्रिय >> B.97 - P. 265 (986) उपकरणोत्पादक >> B.60 - P. 69 (987) उपकरण >> B.46 - P. 62 (988) उपचरितसद्भूतव्यवहारनय >> B.97 - P. 268 (989) उपचरितासद्भूतव्यवहारनय >> B.97 - P. 268 (990) उपदेश-स्मरणा-प्रतिस्मरणा >> B.135 - P. 148 (991) उपदेशमाला विवरण >> B.74 - P. 563 (992) उपदेशमालाप्रकरणबालावबोध >> B.73 - P. 608 (993) उपधारण >> B.60 - P. 70 (994) उपधि-परित्याग के परिणाम >> B.134 - P. 153 (995) उपनयब्रह्मचारिण >> B.97 - P. 271 (996) उपबृंहण >> B.60 - P. 71 / B.97 - P. 272 (997) उपबृंहणा >> B.82 - P. 120 (998) उपबृंहयन् >> B.77 - P. 115 (999) उपबृंह्या >> B.65 - P. 25 (1000) उपभोग-परिभोग परिणाम व्रत >> B.69 - P. 209 (1001) उपभोग-परिभोग परिणाम व्रत 5 अतिचार >> B.69 - P. 223 (1002) उपमितभवप्रपञ्चाकथा ना नाम अंगे विचारणा, पत्रचर्चा - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.146 - P. 11 (1003) उपमितभवप्रपञ्चाकथा ना नाम अंगे विचारणा, पत्रचर्चा - शीलचन्द्रविजय >> B.157 - P. 50 (1004) उपमितभवप्रपञ्चाकथा ना नाम अंगे विचारणा, पत्रचर्चा - संस्कारविजय >> B.145 - P. 11 (1005) उपमितभवप्रपञ्चाकथा ना नाम अंगे विचारणा, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.142 - P. 2 (1006) उपमितभवप्रपञ्चाकथाना नामकरण अंगे विशेष, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.144 - P. 6 (1007) उपरणा >> B.46 - P. 63 (1008) उपवास से रोगचिकित्सा तथा पारणविधि >> B.135 - P. 222 (1009) उपबृंहण >> B.49 - P. 141 (1010) उपशम श्रेणि से पतन के 2 कारण >> B.82 - P. 381 (1011) उपशमचरण >> B.97 - P. 277 (1012) उपशमनाकरण >> B.97 - P. 277 (1013) उपशान्तमोह निर्ग्रन्थ >> B.82 - P. 401 (1014) उपसर्ग करने वाले को कृष्ण ने जाना. >> B.95 - P. 32 (1015) उपसर्ग करने वाले ने सहायता ही की है यह जानकार क्रोध शान्त हुआ >> B.95 - P. 32 (1016) उपसर्ग सहन करना >> B.95 - P. 90 (1017) उपसर्ग-निवारण >> B.95 - P. 95 (1018) उपसर्गों में अविचलन : देवता द्वारा संहरण >> B.135 - P. 25 (1019) उपहरं >> B.46 - P. 64 (1020) उपादान कारण >> B.49 - P. 139 / B.69 - P. 139 / B.172 - P. 93 (1021) उपादानकारण >> B.77 - P. 115 (1022) उपादानकारणत्रयम् >> B.47 - P. 63 (1023) उपादानकारणत्व >> B.97 - P. 279 (1024) उपाश्रय में आकर आहार करने की विधि >> B.90 - P. 601 (1025) उफरं >> B.46 - P. 64 (1026) उबरन >> B.46 - P. 65 (1027) उरणा >> B.43 - P. 64 (1028) उरणि >> B.43 - P. 64 (1029) उरणी >> B.43 - P. 64, 451 / B.46 - P. 66 (1030) उरिणण >> B.43 - P. 64 (1031) उरिणं >> B.77 - P. 201 (1032) उरुंभेइ >> B.77 - P. 201 (1033) उरुणण >> B.43 - P. 64 (1034) उरुणी >> B.43 - P. 64 (1035) उवकरण >> B.77 - P. 204 (1036) उवकरणपणिधाणे >> B.77 - P. 204 (1037) उवकरणसंवरे >> B.77 - P. 204 (1038) उवकरणे >> B.77 - P. 204 (1039) उवकरिसु >> B.77 - P. 204 (1040) उवगरण >> B.77 - P. 205 (1041) उवगरणपडिया >> B.77 - P. 205 (1042) उवगरणसंजमे >> B.77 - P. 205 (1043) उवधारणया >> B.77 - P. 209 (1044) उवरि >> B.77 - P. 210 (1045) उवसगगपरिण्णा >> B.77 - P. 212 / B.84 - P. 150 (1046) उवसगगपरिन्ना >> B.77 - P. 212 (1047) उवसगगहरं स्तोत्रनी रचना, जिज्ञासा - सौम्यप्रभविजय >> B.153 - P. 68 (1048) उवहयपरिणामो >> B.77 - P. 213 (1049) उवारणइ >> B.46 - P. 68 (1050) उषाहरण >> B.6 - P. 506 / B.50 - P. 35 (1051) उसारण >> B.46 - P. 69 (1052) उत्सरण >> B.43 - P. 70 (1053) ऊआरणउं >> B.46 - P. 70 (1054) ऊतरिण्यु >> B.46 - P. 72 (1055) ऊतारणउं >> B.46 - P. 72 (1056) ऊपरं >> B.46 - P. 73 (1057) ऊफरं >> B.46 - P. 64, 73 (1058) ऊयरिणिया >> B.43 - P. 71 / B.77 - P. 219 (1059) ऊरण >> B.46 - P. 74 (1060) ऊरणय >> B.77 - P. 219 (1061) ऊरणा >> B.46 - P. 74 (1062) ऊरणिया >> B.77 - P. 220 (1063) ऊरणिया- >> B.43 - P. 71, 71, 71, 71 (1064) ऊरणी >> B.43 - P. 71 / B.77 - P. 220 / B.111 - P. 13 (1065) ऊरणीया >> B.43 - P. 71 (1066) ऊरिण >> B.46 - P. 74, 74 (1067) ऊषाहरण >> B.73 - P. 488 (1068) ऊसरण >> B.77 - P. 220 (1069) ऋजु- सूत्रनय >> B.49 - P. 112 (1070) ऋजुसूत्रनयाभास >> B.97 - P. 290 (1071) ऋणं >> B.77 - P. 221 (1072) ऋणकर >> B.114 - P. 11, 11 (1073) ऋणघ्रा >> B.77 - P. 221 (1074) ऋणवत >> B.84 - P. 42 (1075) ऋणार्त्त दीक्षा के अयोग्य पुरुष >> B.82 - P. 437 (1076) ऋतामुदस्यमौसु वा मां औ विधान करवा पाछुळ ग्रन्थकारनो आशय ?, जिज्ञासा - राजदर्शनविजय >> B.162 - P. 101 (1077) ऋषभ नामकरण >> B.134 - P. 314 (1078) एक अक्षयादि पदविचारणा >> B.95 - P. 42 (1079) एक दूसरे के गण्डादि की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 258, 260 (1080) एक साथ उत्पत्ति मरण संख्या >> B.82 - P. 18 (1081) एक साथ कितने मरण ? >> B.134 - P. 526 (1082) एकवीस थाण प्रकरण टबार्थ >> B.5 - P. 434 (1083) एकाकी विहरण के दोष >> B.135 - P. 510 (1084) एकाकी स्थविर के भण्डोपकरण और उनके आदान-निक्षेपण की विधि >> B.90 - P. 714 (1085) एकादशगणधरनमस्कार >> B.73 - P. 308 (1086) एकादशवचन द्वात्रिंशिका >> B.1 - P. 300 (1087) एकादशवचनद्वात्रिंशिका >> B.73 - P. 423 (1088) एकादशांग स्थिरीकरण स. >> B.5 - P. 9, 9 (1089) एकादशांगस्थिरीकरण सज्जाय >> B.75 - P. 268 (1090) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त तिर्यंच जीवों के वध के कारण >>

B.93 - P. 251 (1091) एगत्तीकरण >> B.77 - P. 224 (1092) एगसाडियउत्तरासंगकरण >> B.77 - P. 225 (1093) एण्ड >> B.119 - P. 36, 36 (1094) एरणवय >> B.84 - P. 157 (1095) एरिड >> B.77 - P. 227 (1096) एवकारना अर्थो, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.160 - P. 39 (1097) एषणीय रजोहरण >> B.90 - P. 710 (1098) एषणीय वस्त्र धारण का विधान >> B.90 - P. 675 (1099) ऐरण्यवत >> B.84 - P. 157 (1100) ऐलाचीकुमारनु छद्मालियु >> B.6 - P. 39 (1101) ओखाहरण >> B.50 - P. 40 (1102) ओघनिर्युक्ति-विवेचननी केटलीक विचारणीय वातो - 1, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.153 - P. 50 (1103) ओघनिर्युक्ति-विवेचननी केटलीक विचारणीय वातो - 2, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.155 - P. 44 (1104) ओधमरण >> B.97 - P. 301 (1105) ओमच्छगरयहरण >> B.77 - P. 232 (1106) ओमोयरण >> B.77 - P. 232 (1107) ओरणी >> B.46 - P. 80 (1108) ओरालियसरीरणाम >> B.77 - P. 234 (1109) ओरुंज >> B.43 - P. 79 (1110) ओल्लरण >> B.43 - P. 81 (1111) ओवरण >> B.77 - P. 235 (1112) ओसणमरण >> B.97 - P. 303 (1113) ओसन्नकारण >> B.77 - P. 236 (1114) ओसरण >> B.77 - P. 236 (1115) ओसरणा >> B.77 - P. 236 (1116) ओसणमरण >> B.97 - P. 139 (1117) ओसिरण >> B.43 - P. 454 (1118) ओहरण >> B.43 - P. 83 (1119) ओहारिणी >> B.77 - P. 238 (1120) ओहमरण >> B.77 - P. 239 (1121) औदारिक तैजस कर्मणशरीरनोर्मबन्ध >> B.97 - P. 305 (1122) औदारिकशरीर : संघातपरिशाटकरण >> B.134 - P. 602 (1123) औदारिकशरीरनाम >> B.97 - P. 307 (1124) औदारिकौदारिकशरीरनोर्मबन्ध >> B.97 - P. 309 (1125) औदेशिक आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 558 (1126) औदेशिकादि आहार ग्रहण करने के विधि ग्रहण >> B.90 - P. 596 (1127) औधिक उपकरण >> B.60 - P. 79 (1128) औपग्रहिक उपकरण >> B.60 - P. 80 (1129) औपशमिकादि भाव भी पारिणामिक है >> B.69 - P. 56 (1130) और्णिक रजोहरण उपयोगी >> B.135 - P. 140 (1131) कच्छपरिणित >> B.98 - P. 11 (1132) कटकरण >> B.98 - P. 11 (1133) कटारुं >> B.46 - P. 85 (1134) कटिरोग का एक कारण >> B.135 - P. 217 (1135) कट्टकरण >> B.43 - P. 89 (1136) कण्ठाभरण >> B.42 - P. 70 (1137) कण्णपाउरण >> B.84 - P. 174 (1138) कदलीघात मरण >> B.49 - P. 70 (1139) कनकध्वज का श्रावक धर्म-ग्रहण करना. >> B.95 - P. 218 (1140) कव वन्दन करना ? (वन्दन के 8 कारण >> B.82 - P. 74 (1141) कमल-मृणाल >> B.46 - P. 89 (1142) करञ्ज >> B.119 - P. 55, 55 (1143) करण >> B.42 - P. 74 / B.46 - P. 90 / B.49 - P. 72 / B.50 - P. 46 / B.134 - P. 174 / B.98 - P. 15, 15 / B.84 - P. 186 / B.60 - P. 82 / B.172 - P. 104 (1144) करण (क्रिया) की परिभाषा >> B.134 - P. 177 (1145) करण (परिणाम) >> B.172 - P. 104 (1146) करण (हेतु) >> B.172 - P. 104 (1147) करण (हेतु) के भेद >> B.172 - P. 104 (1148) करण अपर्याप्त >> B.60 - P. 82 (1149) करण की परिभाषा >> B.134 - P. 174 (1150) करण के 70 भेद >> B.82 - P. 263 (1151) करण के निक्षेप >> B.134 - P. 177 (1152) करण के प्रकार >> B.90 - P. 45, 45 (1153) करण के प्रकार और अधिकारी >> B.134 - P. 175 (1154) करण के भेद और उनके चर-धिर की प्ररूपणा >> B.96 - P. 729 (1155) करण के भेद और चौबीसदंडकों में उनका प्ररूपण >> B.93 - P. 483 (1156) करण प्रमाण >> B.172 - P. 104 (1157) करण प्रमाण के भेद >> B.172 - P. 104 (1158) करण सत्य >> B.60 - P. 83 (1159) करणइ >> B.46 - P. 90 (1160) करणकतूहल >> B.46 - P. 90 (1161) करणकुमार कथा >> B.139 - P. 121 (1162) करणगुणश्रेणि >> B.60 - P. 82 (1163) करणजड्डी दीक्षा के अयोग्य पुरुष >> B.82 - P. 435 (1164) करणढ >> B.46 - P. 90 (1165) करणत्रयम् >> B.47 - P. 71 (1166) करणभेद 70 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 67) >> B.82 - P. 14 (1167) करणम् >> B.47 - P. 71 / B.65 - P. 29 (1168) करणवीर्य >> B.49 - P. 72 / B.60 - P. 82 (1169) करणसत्तरी >> B.134 - P. 179 (1170) करणसत्तरी का संक्षेप >> B.82 - P. 314, 314, 314, 314 (1171) करणसत्य >> B.134 - P. 539 / B.98 - P. 15 (1172) करणसप्तति >> B.60 - P. 82 (1173) करणहार >> B.46 - P. 91 (1174) करणहारु >> B.46 - P. 91 (1175) करणाट >> B.46 - P. 91 (1176) करणानुयोग >> B.8 - P. 10 / B.42 - P. 74 / B.49 - P. 72 / B.98 - P. 15 / B.60 - P. 83 (1177) करणापर्याप्तक >> B.98 - P. 15 (1178) करणापाटवत्वम् >> B.47 - P. 72 (1179) करणाहरु >> B.46 - P. 91 (1180) करणि >> B.43 - P. 98 (1181) करणिल्ल >> B.43 - P. 457 (1182) करणी >> B.43 - P. 98 / B.46 - P. 91 (1183) करणीअ >> B.46 - P. 91 (1184) करणीकर >> B.46 - P. 91 (1185) करणीछंद >> B.75 - P. 389 (1186) करणोपशमना >> B.98 - P. 15 (1187) करिदो >> B.46 - P. 93 (1188) करिण्डुका >> B.43 - P. 99 (1189) करुंडइ >> B.46 - P. 93 (1190) करुंबु >> B.46 - P. 93 (1191) करुंबुलउ >> B.46 - P. 92 (1192) करुण >> B.46 - P. 93 (1193) करुण पलाव >> B.46 - P. 93 (1194) करुण रस की उत्पत्ति और लक्षण >> B.134 - P. 222 (1195) करुणरस >> B.98 - P. 16 (1196) करुणा >> B.47 - P. 72 / B.49 - P. 25 / B.98 - P. 16 (1197) करुणा भावना >> B.69 - P. 197 (1198) करुणाचंद(मुनि) >> B.50 - P. 47 (1199) करुणादान >> B.42 - P. 75 (1200) करुणावज्जायुध (नाटक) >> B.73 - P. 118 (1201) करुणावृत्ति >> B.49 - P. 74 (1202) करुणासागर >> B.50 - P. 47, 60, 503 (1203) करुणासागर - २ >> B.50 - P. 47, 47, 47 (1204) करुणी >> B.46 - P. 93 (1205) करुणीअ >> B.46 - P. 93 (1206) करुणा >> B.65 - P. 29 (1207) कर्णप्रावरण >> B.84 - P. 174 (1208) कर्त्रन्वयक्रिया >> B.42 - P. 75 (1209) कर्पूर प्रकरण >> B.74 - P. 614 (1210) कर्पूरप्रकरणबालावबोध >> B.73 -

P. 605 (1211) कर्म उदीरणा द्वार >> B.93 - P. 73, 95 (1212) कर्म परिणाम >> B.49 - P. 73 (1213) कर्मकरण >> B.60 - P. 83 (1214) कर्मग्रन्थ टट्वा >> B.74 - P. 530 (1215) कर्मग्रन्थ बाला >> B.74 - P. 614, 503 (1216) कर्मग्रन्थबालावबोध >> B.73 - P. 608 (1217) कर्मविवरणरास >> B.73 - P. 475 (1218) कर्मवेदन - काल में कोई शरण नहीं होता >> B.90 - P. 456 (1219) कलह-निवारण न करने पर प्रायश्चित्त >> B.135 - P. 18 (1220) कल्प-व्यवहार का प्रणयन क्यों ? >> B.135 - P. 242 (1221) कल्पकिरणावली >> B.75 - P. 126 (1222) कल्पसूत्र, लोकनालिका द्वात्रिंशिका बालावबोध, पाक्षिकसूत्र बालावबोध, सप्तनय वर्णन, संबोधसत्तरी बालावबोध, दर्शन सप्तति बालावबोध, उपदेशमाला बालावबोध, भोजप्रबंध बालावबोध >> B.5 - P. 432 (1223) कल्पसूत्र-सुबोधिकानी विचारणीय वातो, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.158 - P. 39 (1224) कल्पसूत्रान्तर व्रत चौदह स्वप्न का विवरण >> B.75 - P. 400 (1225) कल्पस्थिति का समवतरण >> B.135 - P. 168 (1226) कल्पोपपन्न देवोमां 10 प्रकारनो कल्प >> B.56 - P. 185, 403 (1227) कल्याणकविषयकं किञ्चित्, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 101 (1228) कल्याणसागरसूरिनो रास >> B.5 - P. 343, 344 (1229) कषाय के उदाहरण >> B.134 - P. 196 (1230) कषाय परिणाम >> B.141 - P. 213 (1231) कषाय से चारित्रनाश : कनकरस दृष्टांत >> B.135 - P. 174 (1232) कषाय-प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 198 (1233) कषायकरण के भेद और चौबीसदंडकों में प्ररूपण >> B.93 - P. 334 (1234) कसेरु अनन्तकाय >> B.82 - P. 105 (1235) कांक्षामोहनीय कर्म का उदीरण और उपशमन >> B.93 - P. 416 (1236) कांक्षामोहनीय कर्म का वेदन और निर्जरण >> B.93 - P. 417 (1237) कांक्षामोहनीय कर्म वेदन के कारण >> B.93 - P. 418 (1238) काकादिपिण्डहरण >> B.98 - P. 31 (1239) कातंत्रव्याकरणबालावबोधवृत्ति >> B.73 - P. 264 (1240) कातरणी >> B.46 - P. 103 (1241) कापोत लेश्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (1242) कामदेव का गृहीधर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 305 (1243) कामदेव का समवसरण में गमन और धर्म श्रवण >> B.95 - P. 304 (1244) कामदेव का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और बाद में सिद्धगति का निरूपण >> B.95 - P. 311 (1245) कामदेव ने पिशाचरूप से किया गया मारणांतिक उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 306 (1246) कामभोग के परिणाम >> B.134 - P. 201 (1247) कामभोग-परित्याग के परिणाम >> B.134 - P. 202 (1248) कामभोगों में अनासक्त निर्ग्रन्थ >> B.90 - P. 436 (1249) कामळीकाळनी शास्त्रविहितता अंगे विचारणा, पत्रचर्चा - सौम्यप्रभविजय >> B.150 - P. 23 / B.152 - P. 43 (1250) कामळीकाळनी शास्त्रविहितता अंगे विचारणा, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.142 - P. 1 (1251) काय दुष्प्रणिधान >> B.49 - P. 75 / B.82 - P. 145 (1252) काय समाधारणा का फल >> B.90 - P. 736 (1253) कायगुप्ति के परिणाम >> B.134 - P. 248 (1254) कायदुःप्रणिधान >> B.98 - P. 36 (1255) कायदुष्प्रणिधान >> B.60 - P. 87 (1256) कायदुष्प्रणिधानम् >> B.65 - P. 31 (1257) कायनियन्त्रण >> B.42 - P. 81 (1258) काययोग दुष्प्रणिधान अतिचार >> B.69 - P. 222 (1259) कायसमाधारण >> B.60 - P. 88 (1260) कायसुप्रणिधान >> B.60 - P. 88 (1261) कायस्थिति प्रकरण स्तवक >> B.5 - P. 388 (1262) काया के स्वरूप की विचारणा से वैराग्य की पुष्टि >> B.69 - P. 198 (1263) कायिक असमीक्ष्याधिकरण >> B.98 - P. 39 (1264) कायोत्सर्ग के परिणाम >> B.134 - P. 208 (1265) कायोत्सर्ग पूर्ण करने की विधि >> B.135 - P. 180 (1266) कायोत्सर्गमां श्वासोच्छ्वासना प्रमाण अंगे विचारणा, लेखक - अक्षयरत्नविजय >> B.142 - P. 3 (1267) कारण >> B.42 - P. 82 / B.46 - P. 104 / B.49 - P. 72 / B.98 - P. 40 / B.172 - P. 105 (1268) कारण (निरपवाद), निष्पतिकर्म...कायोत्सर्ग >> B.135 - P. 258 (1269) कारण के पर्याय >> B.172 - P. 105 (1270) कारण के भेद >> B.172 - P. 105 (1271) कारण दोष >> B.82 - P. 406 (1272) कारण परमाणु >> B.49 - P. 72 / B.172 - P. 106 (1273) कारण लब्धि >> B.49 - P. 72 (1274) कारण से अतिचार >> B.69 - P. 219 (1275) कारण से कार्य का अनुमान >> B.134 - P. 35 (1276) कारण-अवतार >> B.46 - P. 105 (1277) कारण-कार्य की दृष्टि से >> B.134 - P. 118 (1278) कारणइ >> B.46 - P. 105 (1279) कारणगुणोत्पन्नत्वम् >> B.47 - P. 76 (1280) कारणतापवच्छेदक धर्मः >> B.47 - P. 76 (1281) कारणताप्रकारौ >> B.47 - P. 76 (1282) कारणत्वम् >> B.47 - P. 60 (1283) कारणदोष >> B.98 - P. 41 / B.60 - P. 90 (1284) कारणपणइ >> B.46 - P. 105 (1285) कारणपरमाणु >> B.98 - P. 41 (1286) कारणपरमात्मा >> B.98 - P. 41 (1287) कारणप्रकारौ >> B.47 - P. 76 (1288) कारणमात्रविभागजन्यविभागः >> B.47 - P. 76 (1289) कारणम् >> B.47 - P. 75 / B.65 - P. 32 (1290) कारणरूप >> B.46 - P. 104, 105 (1291) कारणवन्दनक >> B.98 - P. 41 (1292) कारणाध्यासः >> B.47 - P. 76 (1293) कारणाभावदोष >> B.98 - P. 41 (1294) कारण्डक >> B.111 - P. 22 (1295) कारितनिमित्तकरण >> B.98 - P. 42 (1296) कारुणिक दान >> B.60 - P. 90 (1297) कारुण्य >> B.46 - P. 105 (1298) कारुण्य >> B.42 - P. 82 / B.49 - P. 74 / B.98 - P. 42 / B.60 - P. 90 (1299) कारुण्यम् >> B.65 - P. 32 (1300) कार्मणशरीरनामकर्म >> B.98 - P. 44 (1301) कार्य से कारण का अनुमान >> B.134 - P. 35 (1302) काल द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (1303) कालकरण >> B.134 - P. 219 (1304) कालचक्रना 1 भारनु माप केटलुं ?, जिज्ञासा - संस्कारचन्द्रविजय >> B.161 - P. 92 (1305) कालापरणपिंडि >> B.43 - P. 106 (1306) कालाशवैश्यपुत्र श्रमण का चातुर्याम धर्म से पंचमहाव्रत धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 147 (1307) काली रानी के प्रश्न के उत्तर में भगवान् ने कालीरानी के पुत्र

कालकुमार का मरण कहा और कालीरानी स्वस्थान गई >> B.95 - P. 426 (1308) कालोदाई का नियन्त्र प्रव्रज्या ग्रहण और विहरण >> B.95 - P. 165 (1309) काहरि >> B.46 - P. 107 (1310) किट्टीकरण >> B.82 - P. 372 (1311) किट्टीकरणाद्धा >> B.82 - P. 370 (1312) किरणमण्डला >> B.42 - P. 86 (1313) किरणवेग >> B.44 - P. 101 (1314) किरणी >> B.46 - P. 109 (1315) किरुण >> B.46 - P. 109 (1316) किल्बिषिक देवों में उत्पत्ति के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 761 (1317) कीदृशो नीलवर्णः ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 80 (1318) कुंवरबाईनुं मामेरुं >> B.50 - P. 64 (1319) कुण्डकोलिक का उपासक प्रतिमा आराधना करना >> B.95 - P. 331 (1320) कुण्डकोलिक का गृही धर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 328 (1321) कुण्डकोलिक का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 331 (1322) कुण्डकोलिक गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 328 (1323) कुमतिनिवारणा हुंडी स्तवन >> B.75 - P. 370 (1324) कुमार का उदाहरण >> B.134 - P. 471 (1325) कुमारगिरिनगर >> B.73 - P. 530 (1326) कुमारण्दी >> B.84 - P. 214 (1327) कुमारनन्दी >> B.84 - P. 214 (1328) कुम्भराजा ने चिन्ता का कारण कहा >> B.95 - P. 42 (1329) कुरणी >> B.46 - P. 114 (1330) कुरण्टक >> B.119 - P. 91, 92, 91, 92 (1331) कुरण्टक कुसुम >> B.119 - P. 91, 91 (1332) कुरण्टकगुल्म >> B.119 - P. 92, 92 (1333) कुरण्टकदामन् >> B.119 - P. 91, 91 (1334) कुरण्टकमाल्यदामन् >> B.119 - P. 92, 92 (1335) कुरिण >> B.43 - P. 117 (1336) कुरु-नरिदु >> B.46 - P. 115 (1337) कुरुआडय >> B.46 - P. 115 (1338) कुरुंडित >> B.43 - P. 117 (1339) कुरुंडिय >> B.43 - P. 117 (1340) कुरुण >> B.43 - P. 117 (1341) कुलकरणी >> B.46 - P. 115 (1342) कुलचरण >> B.74 - P. 571 (1343) कुलचरण (तपागच्छीय) >> B.73 - P. 535 (1344) कुलथों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा >> B.95 - P. 41 (1345) कुलमानवशार्तमरण >> B.98 - P. 60 (1346) कुलों को स्थापित करने की विधि >> B.135 - P. 645 (1347) कुव्यापारनिषेधपोषध >> B.98 - P. 60 (1348) कुशाग्रनगर >> B.42 - P. 94 (1349) कुशीलाचरण निरूपण पूर्वक संयम पालन का उपदेश दिया >> B.95 - P. 113 (1350) कूटलेखकरण >> B.98 - P. 62 / B.60 - P. 93 (1351) कूणिक का भ. महावीर के समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना >> B.95 - P. 363 (1352) कूणिक का समवसरण की ओर प्रयाण >> B.95 - P. 369 (1353) कूणिक का समवसरण में आगमन और पर्युपासना >> B.95 - P. 370 (1354) कूणिक की धारिणी देवी >> B.95 - P. 365 (1355) कूणिक के भय से वेहल्ल का चेड़ा राजा के शरण में वैशाली जाना >> B.95 - P. 431 (1356) कूर्म का उदाहरण >> B.95 - P. 448 (1357) कृणाल कथा >> B.139 - P. 88 (1358) कृतंगला नगरी में भ. महावीर का समोसरण >> B.95 - P. 123 (1359) कृतकरण अंगे, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.152 - P. 24 (1360) कृतकरणा >> B.60 - P. 93 (1361) कृत्सना आपोरणा >> B.60 - P. 94 (1362) कृत्सन् वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 679 (1363) कृषक का उदाहरण >> B.134 - P. 470 (1364) कृष्टिकरण >> B.42 - P. 95 (1365) कृष्टिकरणाद्धा >> B.98 - P. 65 (1366) कृष्ण महाराजाए सातमी नरकनी त्रीजी नरक क्यारे अने कारणथी करी ?, लेखक - तीर्थतिलकविजय >> B.161 - P. 52 (1367) कृष्ण लेश्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (1368) कृष्णतृण - मणियों का इष्टतर कृष्णवर्ण >> B.96 - P. 131 (1369) कृष्णराजियों के परिणामत्व का प्ररूपण >> B.96 - P. 675 (1370) केवल ज्ञानावरण कर्म >> B.49 - P. 76 (1371) केवलज्ञान अने केवलदर्शन विशेष तत्त्वार्थवृत्तिनो अभिप्राय, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 7 (1372) केवलज्ञानवरणीय >> B.60 - P. 95 (1373) केवलज्ञानावरण >> B.98 - P. 69 (1374) केवलज्ञानी महात्माओने पण करुणानो सद्भाव, जिज्ञासा - हेमनिलयविजय >> B.148 - P. 17 (1375) केवलदर्शनावरण >> B.69 - P. 234 (1376) केवलदर्शनावरणीय >> B.98 - P. 70 / B.60 - P. 95 (1377) केवलावरण >> B.42 - P. 98 / B.98 - P. 70 (1378) केवलिमरण >> B.98 - P. 70 (1379) केवली मरण >> B.49 - P. 76 (1380) केवलीमरण >> B.134 - P. 525 / B.60 - P. 95 (1381) केवो कपरो खेल हतो ईलापुत्रनो !, लेखक - तीर्थतिलकविजय >> B.158 - P. 28 (1382) केशिकुमार श्रमण के आगमन का वृत्तान्त ज्ञात होने पर चित्तसारथि का केशिकुमार श्रमण की वंदना के लिये जाना, धर्म-श्रमण करना और गृहस्थ धर्म स्वीकार करना. >> B.95 - P. 270 (1383) केशिकुमार श्रमण के वक्तव्य में - " जीव और शरीर के अन्यत्व समर्थन में अपर्याप्त उपकरण हेतु का निरूपण " >> B.95 - P. 279 (1384) केसरिन् >> B.84 - P. 226 (1385) केसु-वरणा >> B.46 - P. 122 (1386) कैलासवारुणी >> B.42 - P. 99 (1387) कोणिक का भ. महावीर के दर्शन का संकल्प और सर्व ऋद्धि से समवसरण में जाने के लिए प्रस्थान >> B.95 - P. 367 (1388) कोणिक का सुखपूर्वक विहरण >> B.95 - P. 365 (1389) कोरण >> B.43 - P. 126 / B.46 - P. 125 (1390) कोरण वाई >> B.46 - P. 125, 411 (1391) कोरण्टक >> B.84 - P. 232 (1392) कौतुहल के संकल्प से सभी कार्य करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 464 (1393) क्यो कारणे देवो मनुष्यलोकमां आवे छे ? >> B.56 - P. 189, 406 (1394) क्रन्द >> B.84 - P. 164 (1395) क्रन्दित >> B.84 - P. 164 (1396) क्रमकरण >> B.49 - P. 77 (1397) कृत आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 559 (1398) क्रियाधिकारिणी >> B.42 - P. 101 (1399) क्रियावादी आदि चारों समवसरणगत चौबीसदंडकों में ग्यारह स्थानों द्वारा आयु बंध का प्ररूपण >> B.93 - P. 433 (1400) क्रियावादी आदि चारों समवसरणगत जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा आयु बंध का प्ररूपण >> B.93 - P. 431 (1401) क्रियावादी आदि समवसरण के चार भेद >> B.93 - P. 240 (1402) क्रीतादि दोषयुक्त वस्त्र ग्रहण करने के प्रायश्चित्त सूत्र

>> B.90 - P. 673 (1403) कूरनक्र >> B.42 - P. 101 (1404) क्रोधवशार्तमरण >> B.98 - P. 78 (1405) क्रोधादि नियह 4 (चरण 70) >> B.82 - P. 261 (1406) क्षपकश्रेणि में तीन करण >> B.82 - P. 369 (1407) क्षमा के परिणाम >> B.134 - P. 355 (1408) क्षयकारणाहरु >> B.46 - P. 127 (1409) क्षायोपशमिक अवधिज्ञानावरणीय >> B.98 - P. 87 (1410) क्षीणमोह निर्ग्रन्थ >> B.82 - P. 401 (1411) क्षीरणी >> B.119 - P. 96, 96 (1412) क्षीरिणी >> B.119 - P. 97, 97 (1413) क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीय >> B.84 - P. 243 (1414) क्षेत्र द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 298 (1415) क्षेत्र, संहरण आदि >> B.135 - P. 339 (1416) क्षेत्रकरण >> B.134 - P. 178 (1417) क्षेत्रचरण >> B.98 - P. 93 (1418) क्षेत्रप्रतिलेखना : गण को आमन्त्रण >> B.135 - P. 191 (1419) क्षेत्रानुपूर्वी सादि-पारिणामिक >> B.134 - P. 107 (1420) खंतपत्रनुं कथानक, जिज्ञासा - कुमुदचन्द्रविजय >> B.152 - P. 32 (1421) खंतपत्रनुं कथानक, समाधान - दिव्यचन्द्रविजय >> B.154 - P. 73 (1422) खरण >> B.43 - P. 133 (1423) खरणटना >> B.65 - P. 36 (1424) खरनाद >> B.42 - P. 105 (1425) खरिसुय >> B.43 - P. 134 (1426) खरुणा >> B.43 - P. 460 (1427) खांसकरणु >> B.46 - P. 135 (1428) खापराचोरनी चोपाई >> B.4 - P. 239, 239 (1429) खासरुं >> B.46 - P. 134 (1430) खिमक्रुषि पारणा >> B.75 - P. 107 (1431) खिमक्रुषि पारणां >> B.5 - P. 388 (1432) खीरणा >> B.46 - P. 136 (1433) खीरणी >> B.46 - P. 136 / B.119 - P. 96, 96 (1434) खीरिणी >> B.119 - P. 97, 97 (1435) खुरुणा >> B.46 - P. 136 (1436) खेचरनाथ >> B.42 - P. 105 (1437) गंठ (ग्रन्थ) >> B.43 - P. 521 (1438) गजमारिणी >> B.119 - P. 99, 99 (1439) गजसुकुमार का महाप्रतिमा स्वीकार करना. >> B.95 - P. 30 (1440) गजसुकुमार की भार्या करने के लिए सोमिल ब्राह्मण की लड़की को कुमारिकाओं के अन्तःपुर में रखा >> B.95 - P. 27 (1441) गजसुकुमारी ढाल >> B.6 - P. 373 (1442) गण अपक्रमण के आठ कारण >> B.135 - P. 587 (1443) गण को आमन्त्रित नहीं करने के दोष >> B.135 - P. 191 (1444) गणधरनाम (प्रवचन सारोद्धार द्वार 8) >> B.82 - P. 12 (1445) गणधरनिश्चा में वस्त्रग्रहण >> B.135 - P. 129 (1446) गणधारण का लक्ष्य : सागर की उपमा >> B.135 - P. 64 (1447) गणधारण के योग्य की परीक्षाविधि >> B.135 - P. 66 (1448) गणधारण में निशीथ की भूमिका >> B.135 - P. 240 (1449) गणधारण से पूर्व स्थविर पृच्छा >> B.135 - P. 67 (1450) गणपति (ग्रन्थकार) >> B.73 - P. 95 (1451) गणहरणाभाणि >> B.90 - P. 7, 7 (1452) गणाग्रणी >> B.42 - P. 107 (1453) गति द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (1454) गतिपरिणाम >> B.98 - P. 106 (1455) गमांतरुं >> B.46 - P. 142 (1456) गम्भीरनिनद >> B.42 - P. 109 (1457) गयमारिणी >> B.43 - P. 146 / B.119 - P. 99, 99 (1458) गरणां-गोर >> B.46 - P. 143 (1459) गर्तपूरण वृत्ति >> B.49 - P. 62 (1460) गर्भ-साहरण >> B.95 - P. 57 (1461) गर्भवती के हाथ से आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 571 (1462) गर्हा और उसके परिणाम >> B.134 - P. 125 (1463) गलसरण >> B.46 - P. 144 (1464) गल्लूरण >> B.43 - P. 462 (1465) गवेषणाकाल में आचरणीय कृत्य >> B.90 - P. 544 (1466) गायन आदि करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 460 (1467) गिरनार उद्धार रास >> B.2 - P. 108, 109 / B.74 - P. 261, 265 (1468) गिरनार गजल >> B.133 - P. 55 (1469) गिरनार गझल >> B.6 - P. 128 (1470) गिरनार चैत्य परिपाटी >> B.74 - P. 424 (1471) गिरनार चैत्यपरिपाटी >> B.1 - P. 112 (1472) गिरनार पर्वत शत्रुंजयनी ज टूंक, जिज्ञासा - मलयगिरिविजय >> B.145 - P. 12 (1473) गिरनार पर्वत शत्रुंजयनी ज टूंक, समाधान - सौम्यप्रभवविजय >> B.150 - P. 17 (1474) गिरनार स्तुति >> B.75 - P. 233 (1475) गिरनार, सौराष्ट्र >> B.57 - P. 116 (1476) गिरनारचैत्यपरिपाटी >> B.73 - P. 233, 539 (1477) गिरनारिधवल >> B.73 - P. 381 (1478) गिरिणगर >> B.84 - P. 258 (1479) गिरिणगर >> B.42 - P. 111 / B.84 - P. 258 (1480) गिरिनिन्दन >> B.42 - P. 111 (1481) गिरिनारकल्प बालावबोध >> B.6 - P. 338 (1482) गुण ठाणा विवरण चौपई >> B.74 - P. 73 (1483) गुणधारणा >> B.98 - P. 111 (1484) गुणस्थानकपरिणामवन्तः >> B.65 - P. 38 (1485) गुणस्थानकों में परीषहों की विचारणा >> B.69 - P. 268 (1486) गुदृपृष्ठमरण >> B.60 - P. 107 (1487) गुप्ति (करण 70) >> B.82 - P. 313 (1488) गुप्तेन्द्रिय कूर्म के उदाहरण से गुप्तेन्द्रिय के फल का सूचन >> B.95 - P. 449 (1489) गुरुनंदणु >> B.46 - P. 152 (1490) गुरुनानक >> B.73 - P. 321 (1491) गुरुनिह्यवी : परिव्राजक दृष्टांत >> B.135 - P. 235 (1492) गृद्धपृष्ठ और वैहायसमरण >> B.134 - P. 525 (1493) गृद्धपृष्ठमरण >> B.98 - P. 115 (1494) गृहस्थ की चिकित्सा करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 260, 262 (1495) गृहस्थ के घर में नहीं करने के कार्य >> B.90 - P. 546 (1496) गृहस्थ के वस्त्र उपयोग करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 688 (1497) गृहस्थ से व्रण परिकर्म नहीं कराना चाहिए >> B.90 - P. 253, 253 (1498) गृहस्थलिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (1499) गृहान्तरनिषद्या >> B.60 - P. 107 (1500) गृहीत आहार में माया करने का निषेध >> B.90 - P. 606 (1501) गोचरी में प्रविष्ट भिक्षु के आहार करने की विधि >> B.90 - P. 600 (1502) गोच्छ्रक विशेष थोड़ी विचारणा, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.161 - P. 42 (1503) गोच्छ्रकादि के वितरण का विवेक >> B.90 - P. 711 (1504) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, जमालपुर-टोकरशानी पोळ(प्रेरणा तीर्थ), अमदावाद >> B.55 - P. 155 (1505) गोडी पार्श्वनाथ जिनालय, समेतिशखरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 70 (1506) गोड़ी पार्श्वनाथ सार्द्ध शताब्दी स्मारक ग्रन्थ >> B.74 - P. 492 (1507) गौतम ने महाशतक को ' प्रायश्चित्त करने का ' भगवन्त का कथन कहा >> B.95 - P. 346 (1508) गौतम ने स्कंदक का स्वागत किया और स्कंदक ने

अपने आने का कारण कहा >> B.95 - P. 124 (1509) गौतमपृच्छा विवरण >> B.3 - P. 350 (1510) गौशालक और भ. महावीर ने परस्पर एक दूसरे की मरणकाल मर्यादा का निरूपण किया >> B.95 - P. 406 (1511) गौशालक का अपने मरने के बाद निहरण के सम्बन्ध में निर्देश >> B.95 - P. 410 (1512) गौशालक का निहरण >> B.95 - P. 410 (1513) गौशालक का भगवान के प्रति आक्रोश वचन कहकर स्वसिद्धान्त निरूपण करना >> B.95 - P. 403 (1514) गौशालक का सम्यक्त्व परिणाम-पूर्वक कालधर्म >> B.95 - P. 410 (1515) गौश्रृंग >> B.42 - P. 116 (1516) ग्रन्थ >> B.42 - P. 116 / B.98 - P. 120 (1517) ग्रन्थ: >> B.47 - P. 87 (1518) ग्रन्थकर्ता >> B.98 - P. 120 (1519) ग्रन्थकार के मतानुसार >> B.82 - P. 27, 27, 27, 27 (1520) ग्रन्थकृति >> B.98 - P. 120 (1521) ग्रन्थसम >> B.98 - P. 120 (1522) ग्रन्थ >> B.98 - P. 120 (1523) ग्रन्थि: >> B.65 - P. 40 (1524) ग्रन्थभेद: >> B.65 - P. 41 (1525) ग्रन्थिम >> B.98 - P. 120 (1526) ग्रहणैषणा के प्रकार और विवरण >> B.134 - P. 162 (1527) ग्रहीतृ विषयक भाव अपरिणत >> B.82 - P. 297 (1528) ग्राम आदि में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के रहने का निषेध >> B.90 - P. 646 (1529) ग्राम रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 749 (1530) ग्रामादि में चातुर्मास करने का विधि-निषेध >> B.90 - P. 651 (1531) ग्रामादि में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के रहने की विधि >> B.90 - P. 635 (1532) ग्लान निर्ग्रन्थ के लिए कल्पनीय विकट दत्तियाँ >> B.90 - P. 628 (1533) घंटोरणि >> B.46 - P. 160 (1534) घट्टणित कुलों में रहने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 665 (1535) घघरणु >> B.46 - P. 157 (1536) घटिमात्रक धारण का निषेध >> B.90 - P. 699 (1537) घटिमात्रक धारण का विधान >> B.90 - P. 699 (1538) घर-घरणी >> B.46 - P. 159 (1539) घरणि >> B.46 - P. 159 (1540) घरणी >> B.43 - P. 158 / B.46 - P. 159 (1541) घरिणी >> B.43 - P. 158 (1542) घरुणी >> B.46 - P. 159 (1543) घरुणी >> B.46 - P. 159 (1544) घरण >> B.46 - P. 161 (1545) घीसरुं >> B.46 - P. 162 (1546) घुणाक्षरन्याय >> B.98 - P. 123 (1547) घुमरण >> B.46 - P. 162 (1548) घुमारण >> B.46 - P. 162 (1549) घृणित कुलों में भिक्षा-गमन का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 549 (1550) घेरण >> B.46 - P. 163 (1551) घोरण >> B.43 - P. 161, 161, 161, 161 (1552) घोषविशुद्धिकरणता >> B.98 - P. 125 (1553) घ्राणेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहावरणीयकर्म >> B.98 - P. 126 (1554) घ्राणेन्द्रियार्थावग्रहावरणीय कर्म >> B.98 - P. 126 (1555) घ्राणेन्द्रियावायावरणीय >> B.98 - P. 126 (1556) घ्राणेन्द्रियेहावरणीय कर्म >> B.98 - P. 126 (1557) चंदोतरण >> B.84 - P. 282 (1558) चंदोयरण >> B.84 - P. 282 (1559) चंदोवतरण >> B.84 - P. 282 (1560) चंद्रनाथ >> B.50 - P. 102 (1561) चंद्रनी अग्रमहिनीओ >> B.141 - P. 82 (1562) चंद्रप्रभु जिनालय (उपरना माळे), भेसातवाडो, पाटण >> B.53 - P. 232 (1563) चंद्रप्रभु जिनालय, सोदागरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 103 (1564) चउरिदि >> B.46 - P. 165 (1565) चउरिदी >> B.46 - P. 165 (1566) चउरिन्द्रिय >> B.69 - P. 68 (1567) चउरिन्द्रिय संयम >> B.69 - P. 260 (1568) चउवोस तित्थयरण ।माणि >> B.90 - P. 3, 3 (1569) चउशरण टवो >> B.5 - P. 431 (1570) चउशरण पयन्ना बाला. >> B.133 - P. 278 (1571) चउशरण पयन्ना बालावबोध >> B.6 - P. 328 (1572) चउशरण स्तवक >> B.5 - P. 380 (1573) चउशरणअध्ययनबालावबोध >> B.73 - P. 601 (1574) चउशरणप्रकीर्णकबालावबोध >> B.73 - P. 604 (1575) चउसरण >> B.84 - P. 272 (1576) चउसरण अध्ययन बालावबोध >> B.1 - P. 114 (1577) चउसरण पयन्ना बालावबोध >> B.3 - P. 354 (1578) चक्रनाथ >> B.42 - P. 118 (1579) चक्रनृत्य >> B.42 - P. 118 (1580) चक्रिन् >> B.84 - P. 286 (1581) चक्षुदर्शनावरण >> B.49 - P. 49 / B.69 - P. 234 / B.98 - P. 128 (1582) चक्षुदर्शनावरणीय >> B.98 - P. 128 (1583) चक्षुरिन्द्रिय >> B.134 - P. 147 / B.98 - P. 127 / B.60 - P. 110 (1584) चक्षुरिन्द्रिय असंवर >> B.60 - P. 110 (1585) चक्षुरिन्द्रिय का परिमाण, लेखक - गोयमचन्द्रविजय >> B.152 - P. 18 (1586) चक्षुरिन्द्रिय प्रत्यक्ष >> B.60 - P. 110 (1587) चक्षुरिन्द्रिय प्राण >> B.60 - P. 110 (1588) चक्षुरिन्द्रिय रागोपरति >> B.60 - P. 110 (1589) चक्षुरिन्द्रिय संवर >> B.60 - P. 110 (1590) चक्षुरिन्द्रियनिग्रह >> B.60 - P. 110 (1591) चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह >> B.98 - P. 127 (1592) चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रहावरणीय >> B.98 - P. 127 (1593) चक्षुरिन्द्रियावायज्ञान >> B.98 - P. 127 (1594) चक्षुरिन्द्रियावायावरणीय >> B.98 - P. 127 (1595) चक्षुरिन्द्रियेहाज्ञान >> B.98 - P. 127 (1596) चक्षुरिन्द्रियेहावरणीय >> B.98 - P. 127 (1597) चक्षुदर्शनावरण >> B.60 - P. 111 (1598) चतुःशरण पयन्ना बालावबोध >> B.5 - P. 383 (1599) चतुःस्मरण प्रकरण संधि >> B.74 - P. 150 (1600) चतुःशरण >> B.49 - P. 50 / B.84 - P. 272 (1601) चतुःशरण पयन्ना बालावबोध >> B.5 - P. 377 (1602) चतुःशरण प्रकीर्णक संधि >> B.2 - P. 158 (1603) चतुःशरण बालावबोध, दशाश्रुतस्कंध बालावबोध >> B.5 - P. 276 (1604) चतुःशरणप्रकीर्णकवृत्तिनी केटलीक जाणवा जेवी वातो, लेखक - हेमनिलयविजय >> B.148 - P. 4 (1605) चतुरंगचारण >> B.75 - P. 177 (1606) चतुरङ्गजल्प >> B.98 - P. 129 (1607) चतुरङ्गीय >> B.84 - P. 272, 288 (1608) चतुरणुक >> B.49 - P. 50 (1609) चतुरस्त्रनाम >> B.98 - P. 129 (1610) चतुरिन्द्रिय >> B.49 - P. 50 / B.60 - P. 111 (1611) चतुरिन्द्रिय जीव >> B.98 - P. 129 (1612) चतुरिन्द्रिय जीवों के स्थान >> B.96 - P. 118 (1613) चतुरिन्द्रिय जीवों में आठ कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंध का प्ररूपण >> B.93 - P. 458 (1614) चतुरिन्द्रिय त्रस के प्रकार >> B.134 - P. 335 (1615) चतुरिन्द्रियजातिनाम >> B.98 - P. 129 (1616) चतुरिन्द्रियलब्धि >> B.98 - P. 129 (1617) चतुर्थ भावना :

पूर्व मुक्त भोगों के स्मरण का निषेध >> B.90 - P. 427 (1618) चतुर्विध देवनिकायों में मनोहर-अमनोहरता के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 670 (1619) चतुर्विध समवसरणों में अनन्तरोपपन्नकों की अपेक्षा आयु बंध निषेध का प्ररूपण >> B.93 - P. 436 (1620) चतुस्त्रिंशत् महादभुत >> B.42 - P. 120 (1621) चत्वारः कर्मग्रन्थाः (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 119 (1622) चन्द्र के पृष्ठ भाग पर गति करने वाले नौ नक्षत्र हैं >> B.96 - P. 636 (1623) चन्द्र के मार्ग में योग करने वाले नक्षत्रों की संख्या >> B.96 - P. 622 (1624) चन्द्रनख >> B.42 - P. 122 (1625) चन्द्रनखा >> B.42 - P. 122 (1626) चन्द्रनागरी >> B.84 - P. 277 (1627) चन्द्रनिकर >> B.42 - P. 122 (1628) चन्द्रादि विमान को वहन करनेवाले देव >> B.69 - P. 114 (1629) चन्द्रावतरण >> B.84 - P. 282 (1630) चन्द्रिका और अन्धकार आधिक्य के कारण >> B.96 - P. 467 (1631) चन्द्रिणी >> B.42 - P. 124 (1632) चप्परण >> B.43 - P. 466 (1633) चमरेन्द्र ने भ. महावीर के चरणों की शरण ली >> B.95 - P. 499 (1634) चमरेन्द्रनी अग्रमहिणीओ >> B.141 - P. 78 (1635) चमरेन्द्रनी विकुर्वणानी शक्ति अने वायुभूतिनी क्षमापना, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.161 - P. 63 (1636) चम्पा नगरी में भ. महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 137 (1637) चम्पा में भ. महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 366 (1638) चम्पानगरी निवासी जनों का समवसरण में जाना और पर्युपासना करना >> B.95 - P. 366 (1639) चरण >> B.8 - P. 12 / B.46 - P. 168 / B.49 - P. 49 / B.84 - P. 288 / B.60 - P. 112 (1640) चरण करण अनुयोग >> B.49 - P. 49 (1641) चरण करण छत्तीसी >> B.133 - P. 230 (1642) चरण के 70 भेद >> B.82 - P. 253 (1643) चरण विधि का महत्व >> B.90 - P. 205, 207 (1644) चरण-करण >> B.46 - P. 168 (1645) चरण-करण में अन्तर >> B.82 - P. 314 (1646) चरण-त्राण >> B.46 - P. 168 (1647) चरणकज >> B.46 - P. 168 (1648) चरणकुमार >> B.50 - P. 100 (1649) चरणकुमार - १ >> B.50 - P. 100, 100, 100 (1650) चरणकुमार - २ >> B.50 - P. 100, 100, 100 (1651) चरणकुशील >> B.98 - P. 132 (1652) चरणधर्म >> B.74 - P. 245 (1653) चरणपुलाक >> B.98 - P. 132 (1654) चरणप्रमोद >> B.50 - P. 100 (1655) चरणप्रमोद (तपागच्छीय) >> B.73 - P. 328 (1656) चरणप्रमोदशिष्य >> B.50 - P. 100 (1657) चरणभेद 70 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 66) >> B.82 - P. 14 (1658) चरणविधि >> B.84 - P. 288 / B.60 - P. 112 (1659) चरणविनय >> B.98 - P. 132 (1660) चरणविहि >> B.84 - P. 288 (1661) चरणसप्तति >> B.60 - P. 112 (1662) चरणानुयोग >> B.8 - P. 12 / B.42 - P. 125 / B.49 - P. 49 / B.98 - P. 132 (1663) चरणानुयोग का प्राधान्य >> B.134 - P. 42 (1664) चरणामृत >> B.49 - P. 97 (1665) चरणो >> B.46 - P. 168 (1666) चरणोदय >> B.74 - P. 90 (1667) चरमसमयनिर्ग्रन्थ >> B.60 - P. 112 (1668) चर्ममय प्रावरण के प्रकार >> B.135 - P. 492 (1669) चांद्रणी >> B.46 - P. 172 (1670) चांद्रणउ >> B.46 - P. 172 (1671) चांद्रणी >> B.46 - P. 172 (1672) चांद्रिणी >> B.46 - P. 172 (1673) चांद्रिणु >> B.46 - P. 173 (1674) चातारिणी >> B.46 - P. 171 (1675) चातुर्गतिक जीवों की सान्तर-निरन्तर उत्पत्ति का प्ररूपण >> B.93 - P. 700 (1676) चातुर्गतिक निर्ग्रन्थ (प्रवचन सारोद्धार द्वार 114) >> B.82 - P. 15 (1677) चार निक्षेप अवश्य करणीय >> B.134 - P. 386 (1678) चारण >> B.42 - P. 126 / B.43 - P. 169 / B.46 - P. 171 / B.98 - P. 135 / B.84 - P. 289 / B.60 - P. 113 (1679) चारण (ऋद्धि) >> B.60 - P. 113 (1680) चारण ऋद्धि >> B.49 - P. 49 (1681) चारण भगवंतोनी गति, लेखक - हेमहर्षविजय >> B.147 - P. 9 (1682) चारण लब्धि >> B.134 - P. 548 (1683) चारणअ >> B.43 - P. 169 (1684) चारणगण >> B.84 - P. 289 (1685) चारणचरित >> B.42 - P. 126 (1686) चारणप्रिय >> B.42 - P. 126 (1687) चारणभावणा >> B.84 - P. 289 (1688) चारणभावना >> B.84 - P. 289 (1689) चारणयुगल >> B.42 - P. 126 (1690) चारणी >> B.46 - P. 171 (1691) चारणों के भेद >> B.82 - P. 316 (1692) चारणोत्तुंगकूट >> B.42 - P. 126 (1693) चारित्र (संयम) का वर्गीकरण >> B.135 - P. 205 (1694) चारित्र द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (1695) चारित्र सम्पन्नता के परिणाम >> B.134 - P. 271 (1696) चारित्रनंदन >> B.133 - P. 75 (1697) चारित्रनंदी >> B.50 - P. 104 (1698) चारित्रनंदी - १ >> B.50 - P. 104, 104, 104 (1699) चारित्रपरिणामः >> B.65 - P. 41 (1700) चारुणी >> B.42 - P. 127 (1701) चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, लांबेश्वरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 138 (1702) चिंतामणि पार्श्वनाथ-धरदेरासर जिनालय, मोटा देरासरनी शेरी, पाटण >> B.53 - P. 142 (1703) चिकित्सा के चरण, चिकित्सक के गुण >> B.135 - P. 213 (1704) चिकित्साकरण प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 255, 257 (1705) चित्तप्रासाद परिणाम >> B.98 - P. 139 (1706) चित्तमुनि ने आर्यकर्म करने का उपदेश दिया >> B.95 - P. 16 (1707) चित्रकार द्वारा भ. मल्ली के समान रूप का चित्रण >> B.95 - P. 37 (1708) चित्रोपकरण >> B.42 - P. 129 (1709) चिरण्हं >> B.43 - P. 467 (1710) चिरिचिरा >> B.43 - P. 173 (1711) चिरिडिहिल्ल >> B.43 - P. 173 (1712) चिलमिलिका के स्वयं निर्माण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 686 (1713) चिलमिली रखने का तथा उपयोग करने का विधान >> B.90 - P. 686 (1714) चिलात का धन सार्थवाह का घर लूटना और सुसुमा का अपहरण करना >> B.95 - P. 161 (1715) चुलनी का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना. >> B.95 - P. 316 (1716) चुलनी पिता को देवता के कहे हुए अपनी माता को मारने के वचन श्रवण का उपसर्ग सहन न होने पर कोलाहल करना. और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना >> B.95 - P. 315 (1717) चुलनीपिता का गृही धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 312 (1718) चुलनीपिता का प्रायश्चित्त करना >>

B.95 - P. 316 (1719) चुलनीपिता का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति का निरूपण >> B.95 - P. 316 (1720) चुलनीपिता गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 312 (1721) चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 314 (1722) चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया. >> B.95 - P. 313 (1723) चुलनीपिता ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 314 (1724) चुल्लशतक का उपासक प्रतिमा आराधन करना >> B.95 - P. 326 (1725) चुल्लशतक का गृहीधर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 323 (1726) चुल्लशतक का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 323 (1727) चुल्लशतक का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति और सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 327 (1728) चुल्लशतक ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 325 (1729) चुल्लशतक ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 324 (1730) चुल्लशतक ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 324 (1731) चूडकरण >> B.46 - P. 177 (1732) चेलना सहित श्रेणिक का समवसरण में जाना और भगवान् की पर्युपासना करना >> B.95 - P. 422 (1733) चौदपूर्वधरनी शक्ति, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.161 - P. 83 (1734) चौदह रत्न और उनका विवरण >> B.134 - P. 257 (1735) चौबीस जिनदेह वरण स्तव >> B.133 - P. 164 (1736) चौबीसदंडकों में कांक्षामोहनीय कर्म का वेदन और निर्जरण >> B.93 - P. 417 (1737) चौबीसदंडकों में ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादी आदि समवसरणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 241 (1738) चौबीसदंडकों में महाकर्म-अल्पकर्मत्व आदि के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 470 (1739) चौबीसदंडकों में वादि समवसरण >> B.93 - P. 240 (1740) चौबीसदंडकों में सान्तर-निरन्तर उत्पत्ति का प्ररूपण >> B.93 - P. 720 (1741) चौबीसदंडकों में सान्तर-निरन्तर उद्वर्तन का प्ररूपण >> B.93 - P. 726 (1742) च्यवन-संहरणकाल-ज्ञान >> B.135 - P. 282 (1743) छः जीवनिकाय की हिंसा का परिणाम >> B.90 - P. 248, 250 (1744) छक्कम्मवसेसो (ग्रन्थ) >> B.73 - P. 118 (1745) छत्तीस द्वारों से निर्ग्रन्थ का प्ररूपण >> B.93 - P. 57 (1746) छद्मस्थ गणधरनी देशना वखते समवसरणमां केवलि पर्षदामां केवली भगवंतो, जिज्ञासा - राजदर्शनविजय >> B.150 - P. 16 (1747) छद्मस्थ गणधरनी देशना वखते समवसरणमां केवलि पर्षदामां केवली भगवंतो, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.153 - P. 72 (1748) छद्मस्थमरण >> B.134 - P. 525 / B.60 - P. 116 (1749) छन्निक का मरण और उसकी नरक में उत्पत्ति >> B.95 - P. 477 (1750) छन्निक मांसाहार करना और मांस का व्यापार करना >> B.95 - P. 477 (1751) छह जीवनिकायो का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 225, 227 (1752) छह जीवनिकायो की हिंसा नहीं करनी चाहिए >> B.90 - P. 226, 228 (1753) छिल्लरुं >> B.46 - P. 184 (1754) छीका निर्माण करण प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 274, 276 (1755) छुक्कारण >> B.43 - P. 187 (1756) छोटी त्रुटि की उपेक्षा : सारणि आदि दृष्टांत >> B.135 - P. 417 (1757) छद्मस्थमरण >> B.98 - P. 145 (1758) जंघा प्रमाण जल पारकरण विधि >> B.90 - P. 507 (1759) जंघाचारण >> B.42 - P. 132 / B.82 - P. 316, 316 (1760) जंघाचारण लब्धि >> B.134 - P. 548 (1761) जंबूकुमारनी दीक्षा-विषयक मतांतर, लेखक - मुक्तिचरणविजय >> B.157 - P. 22 (1762) जंबूद्वीपना सूर्य अने चंद्रना मंडलादिना प्रमाण—अंतर वगेरे >> B.56 - P. 171, 398 (1763) जगदेव परमारनी वार्ता >> B.6 - P. 332, 575 (1764) जङ्घाचारणा >> B.98 - P. 152 (1765) जङ्घाचारण >> B.60 - P. 117 (1766) जमालिनी कथा संबंधे थोडीक विचारणा, लेखक - नयज्ञविजय >> B.149 - P. 16 (1767) जमाली और उसके शिष्यों का शय्या करने में - " कृत-कार्यमाण " के विषयों में प्रश्नोत्तर >> B.95 - P. 390 (1768) जमाली का श्रद्धा न करना और मरने पर लांतक कल्प में किल्बिषी देव होना >> B.95 - P. 391 (1769) जमाली के प्ररूपण पर श्रद्धा न करने वाले कुछ श्रमणों का भगवान के समीप आना >> B.95 - P. 390 (1770) जमाली को रोग के आतंक से पीड़ा और शय्या संस्तारक के लिए आज्ञा प्रदान करना >> B.95 - P. 390 (1771) जमाली ने जनपद में बिहार करने के लिए प्रार्थना की किन्तु भ. महावीर मौन रहे >> B.95 - P. 389 (1772) जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के चारों विदिशाओं में चार-चार नंदा पुष्करिणियाँ >> B.96 - P. 221 (1773) जम्बूद्वीप का पृथ्वी आदि परिणामित्व >> B.96 - P. 126 (1774) जय जय ऊज्जयंत गिरनार, पत्रचर्चा - शीलचन्द्रविजय >> B.147 - P. 18 (1775) जय जय ऊज्जयंत गिरनार, लेखक - मलयगिरिविजय >> B.145 - P. 4 (1776) जरण >> B.46 - P. 189 (1777) जरदोरनी >> B.46 - P. 189 (1778) जराजूरण >> B.46 - P. 189 (1779) जल-संतरण विधि >> B.134 - P. 621 (1780) जलकारिन् >> B.111 - P. 47 (1781) जलचारण >> B.42 - P. 141 / B.98 - P. 155 / B.60 - P. 118 / B.82 - P. 316 (1782) जलसंतरण के मार्ग : संक्रम, संघट्ट आदि >> B.135 - P. 322 (1783) जलसंतरण के साधन : सामुद्रिक नौका आदि >> B.135 - P. 321 (1784) जलोदर का कारण >> B.135 - P. 218 (1785) जांदरणी >> B.46 - P. 196 (1786) जांद्रणी >> B.46 - P. 196 (1787) जागरण (प्रवचन सारोद्धार द्वार 128) >> B.82 - P. 16 (1788) जातिस्मरण >> B.46 - P. 194 (1789) जातिस्मरण के अनन्तर तेतली-पुत्र का प्रव्रज्या-ग्रहण >> B.95 - P. 218 (1790) जातिस्मरण ज्ञान से पुरोहित पुत्रों को विरति, प्रव्रज्या का संकल्प और निवेदन >> B.95 - P. 120 (1791) जातिस्मरणज्ञान >> B.8 - P. 13 (1792) जातीसमरण >> B.46 - P. 194 (1793) जात्रणि >> B.46 - P. 194 (1794) जाद्रणी >> B.46 - P. 194 (1795) जालोरनवफणापाशर्वदसभवस्तोत्र >>

B.73 - P. 418 (1796) जावइ धरणउ >> B.46 - P. 194 (1797) जिघ्रास मरण >> B.98 - P. 158 (1798) जिन कारण >> B.46 - P. 197 (1799) जितशत्रु प्रमुख राजाओं को जातिस्मरण ज्ञान >> B.95 - P. 44 (1800) जिन त्रिंशत वाणी गुण >> B.133 - P. 130 (1801) जिनकल्प का स्वीकरण >> B.135 - P. 252 (1802) जिनप्रतिमा दृढकरण रास >> B.4 - P. 88, 88 (1803) जिनप्रतिमा दृढकरण हुंडीराश >> B.75 - P. 165 (1804) जिनप्रतिमा दृढकरण हुंडी रास >> B.4 - P. 88, 88 (1805) जिनवरनी वाणी ए स्तुतिमां पाठपरिवर्तन, जिज्ञासा - अक्षतचन्द्रविजय >> B.160 - P. 58 (1806) जिनवरनी वाणी ए स्तुतिमां पाठपरिवर्तन, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.160 - P. 58 (1807) जिहवेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहावरणीय >> B.98 - P. 161 (1808) जिह्वेन्द्रियार्थावग्रहावरणीय >> B.98 - P. 161 (1809) जिह्वेन्द्रियावायावरणीय >> B.98 - P. 161 (1810) जिह्वेन्द्रियेहावरणीय >> B.98 - P. 161 (1811) जीरणशेठ >> B.45 - P. 148 (1812) जीव अधिकरण के 108 भेद >> B.69 - P. 172 (1813) जीव की न्यूनतम अवगाहना अंगुल का असंख्यातवां भाग होने का क्या कारण है ? >> B.69 - P. 136 (1814) जीव-उत्तरप्रयोगकरण >> B.98 - P. 163 (1815) जीव-चौबीसदंडकों में ज्ञानावरणीय आदि कर्म बांधते हुए को कितनी कर्मप्रकृतियों का बंध >> B.93 - P. 392 (1816) जीव-चौबीसदण्डकों में पापकर्म और अष्टकर्मों का समर्जन-समाचरण >> B.93 - P. 378 (1817) जीवदयानिमित्ते आहारकशरीरनी रचना केवी रीते ?, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 15 (1818) जीवप्रबोध प्रकरण >> B.1 - P. 91 (1819) जीवप्रबोधप्रकरण >> B.73 - P. 606 (1820) जीवप्रयोगकरण >> B.98 - P. 164 (1821) जीवप्रयोगकरण : शरीरकरण >> B.134 - P. 601 (1822) जीवप्रयोगकरण : संघातपरिशाटककरण >> B.134 - P. 601 (1823) जीवविचार प्रकरण >> B.4 - P. 254 / B.75 - P. 46 (1824) जीवविचार, विचारषट्त्रिंशिका, नवतत्त्व बालावबोध >> B.6 - P. 340 (1825) जीववैदारणिका क्रिया >> B.60 - P. 122 (1826) जीवाधिकरण >> B.42 - P. 148 (1827) जीवों का विभक्तिभाव परिणमन के हेतु का प्ररूपण >> B.93 - P. 343 (1828) जीवों में आदिमान परिणाम >> B.69 - P. 163 (1829) जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादी आदि समवसरणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 240 (1830) जुंजनकरण >> B.46 - P. 201 (1831) जुयगेहकसरण >> B.43 - P. 470 (1832) जुरण >> B.43 - P. 195 (1833) जुरणया >> B.43 - P. 195 (1834) जूसरूं >> B.46 - P. 202 (1835) जैनग्रन्थावली >> B.73 - P. 114 (1836) जोतरूं >> B.46 - P. 204 (1837) जोधपुरनगरवर्णन गजल >> B.73 - P. 90 (1838) ज्ञान - दर्शनादि की वृद्धि करने वाले और हानि करने वाले >> B.90 - P. 115, 115 (1839) ज्ञान की उत्पत्ति अनुत्पत्ति के कारण >> B.90 - P. 740 (1840) ज्ञान द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 300 (1841) ज्ञान वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र >> B.96 - P. 653 (1842) ज्ञान-युक्त और ज्ञान - परिणत >> B.90 - P. 117, 117 (1843) ज्ञानपण्डितमरण >> B.98 - P. 171 (1844) ज्ञानप्रतिबन्धक कारण >> B.99 - P. 238 (1845) ज्ञानसम्पन्नता के परिणाम >> B.134 - P. 292 (1846) ज्ञानसारनुं तत्त्वदर्शन (ग्रंथ अवलोकन), लेखक - त्यागमंडनविजय >> B.161 - P. 168 (1847) ज्ञानादि 3 (चरण 70) >> B.82 - P. 260 (1848) ज्ञानावरण >> B.98 - P. 174 (1849) ज्ञानावरण कर्म >> B.69 - P. 232 / B.134 - P. 180 (1850) ज्ञानावरण का क्षयोपशम >> B.134 - P. 482 (1851) ज्ञानावरण प्रकृति के 5 भेद >> B.69 - P. 234 (1852) ज्ञानावरणकर्म >> B.42 - P. 149 (1853) ज्ञानावरणीय >> B.98 - P. 174 (1854) ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का वेदन करते हुए चौबीसदंडकों में कर्म बंध का प्ररूपण >> B.93 - P. 402 (1855) ज्ञानावरणीय आदि का बंध करते हुए जीव-चौबीसदंडकों में कर्म वेदन का प्ररूपण >> B.93 - P. 408 (1856) ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म के आस्रव >> B.69 - P. 174 (1857) ज्ञानावरणीय कर्म >> B.8 - P. 13 / B.49 - P. 69 / B.60 - P. 125 (1858) ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम सब जीवों में >> B.134 - P. 293 (1859) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति >> B.69 - P. 249 (1860) ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति >> B.69 - P. 249 (1861) ज्ञानावरणीय कर्म >> B.47 - P. 97 (1862) ज्ञानावरणीयवेदना >> B.98 - P. 174 (1863) ज्योतिरश्मि चारण >> B.82 - P. 317 (1864) ज्योतिश्चारण >> B.98 - P. 176 (1865) ज्योतीरश्मिचारण >> B.98 - P. 176 (1866) झरणा >> B.43 - P. 198 (1867) झिरिड >> B.43 - P. 199 (1868) टकारठकारडकारढकारणकारप्रविभक्तिनामा >> B.79 - P. 38 (1869) टिबरुणी >> B.43 - P. 472 (1870) ठहरने की विवक्षा से पुरुषों के सुमनस्कादि त्रिविधत्व का प्ररूपण >> B.93 - P. 561 (1871) ठामि काउस्सगंग में नयविचारणा, पत्रचर्चा - हेमनिलयविजय >> B.161 - P. 109 (1872) ठामि काउस्सगंग में नयविचारणा, लेखक - कुमुदचन्द्र-नयज्ञ-गोयमचन्द्रविजय >> B.159 - P. 2 (1873) ठारण >> B.46 - P. 213 (1874) ठारणघाट >> B.46 - P. 213 (1875) ठारणहार >> B.46 - P. 213 (1876) ठेवरूं >> B.46 - P. 214 (1877) डंडगारण >> B.84 - P. 331 (1878) डांगरूं >> B.46 - P. 216 (1879) ढोलामारुनी वार्ता >> B.1 - P. 480 (1880) णगरनिद्धमण >> B.79 - P. 46 (1881) णमोक्कारणिज्जुत्ति >> B.84 - P. 349 (1882) णरिद >> B.43 - P. 214 / B.84 - P. 350 (1883) णरिदकंत >> B.84 - P. 350 (1884) णरिदुत्तरखडिंसग >> B.84 - P. 350 (1885) णवोद्धरण >> B.43 - P. 215 (1886) णहरण >> B.43 - P. 474 (1887) णहरणि >> B.43 - P. 215 (1888) णहरणिया >> B.43 - P. 215 (1889) णहरणो >> B.79 - P. 48 (1890) णासकरण >> B.79 - P. 51 (1891) णिअरण >> B.43 - P. 475 (1892) णिक्कोरण >> B.43 - P. 217 (1893) णिक्कोरण >> B.79 - P. 51 (1894) णिग्गयरिणो >> B.79 - P. 52 (1895) णितरिगी >> B.43 - P. 219 (1896) णित्थारणा >> B.79 - P. 53 (1897) णिद्धबंधणपरिणामे >> B.79 - P. 53 (1898) णिद्धमहरणियायविणीयवहारा >> B.79 - P. 54 (1899) णिरण >> B.43 -

P. 476 (1900) गिरणास (गम्) >> B.43 - P. 535 (1901) गिरणास (नस्) >> B.43 - P. 535 (1902) गिरणास (पिष्) >> B.43 - P. 535 (1903) गिरणास (नश्) >> B.43 - P. 535 (1904) गिरणिज्ज (पिष्) >> B.43 - P. 535 (1905) गिरणुगहकसिण >> B.79 - P. 55 (1906) गिरिक >> B.43 - P. 221 (1907) गिरुभा >> B.84 - P. 366 (1908) गिरुभिऊण >> B.79 - P. 55 (1909) गिवारण >> B.79 - P. 56 (1910) गिवारितो >> B.79 - P. 56 (1911) गिव्वत्तणाहिकरणिआ >> B.79 - P. 56 (1912) गिव्वरण >> B.43 - P. 476 (1913) गिसज्जकरण >> B.79 - P. 57 (1914) गिसिरणा >> B.79 - P. 57 (1915) गिस्सरण >> B.43 - P. 223 (1916) गिस्सरण >> B.79 - P. 58 (1917) गिस्सरणंदी >> B.79 - P. 58 (1918) गिस्सासनिरुंभण >> B.79 - P. 58 (1919) गिहर (आ + क्रन्द) >> B.43 - P. 537 (1920) गिहिरणो >> B.79 - P. 58 (1921) गीआरण >> B.43 - P. 224 (1922) गीसरण >> B.43 - P. 224 (1923) गीहर (आ + क्रन्द) >> B.43 - P. 538 (1924) ग्हारुणि >> B.79 - P. 60 (1925) तंतुचारणा >> B.49 - P. 135 (1926) तंससण्ठाणएरिणिआ >> B.79 - P. 62 (1927) तकारयकारदकारधकारनकारप्रविभक्ति >> B.79 - P. 62 (1928) तत्काल उत्पन्न देव के मनुष्य लोक में अनागमन-आगमन के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 674 (1929) तत्काल धोये पानी को ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 632 (1930) तत्त्वविचारप्रकरण >> B.73 - P. 587 (1931) तत्त्वसारनिरूपण >> B.50 - P. 154 (1932) तत्त्वभाव' शब्द मे टचण् प्रत्यय पर वृद्धयभाव, समाधान - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 44 (1933) तथागति परिणाम >> B.49 - P. 135 (1934) तथागतिपरिणाम >> B.69 - P. 297 (1935) तदप्पियकरणे >> B.79 - P. 67 (1936) तदुभवमरण >> B.98 - P. 181 (1937) तद्व्वकरण >> B.79 - P. 67 (1938) तदुभव मरण >> B.49 - P. 134 / B.60 - P. 127 (1939) तदुभवमरण >> B.134 - P. 525 (1940) तद्वर्ण परिणत छाया >> B.69 - P. 145 (1941) तनुसंवरण >> B.42 - P. 151 (1942) तन्तुचारण >> B.42 - P. 151 (1943) तन्तुचारणा >> B.98 - P. 183 (1944) तप 12 (चरण 70) >> B.82 - P. 261 (1945) तप के परिणाम >> B.134 - P. 297 (1946) तपाचारणा अतिचारमां साधुभगवंतो पण ऊभा थईने मिच्छामि दुक्कडम् आपे ?, जिज्ञासा - हेमहर्षविजय >> B.159 - P. 65 (1947) तपाचारणा अतिचारमां साधुभगवंतो पण ऊभा थईने मिच्छामि दुक्कडम् आपे ?, समाधान - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.160 - P. 63 (1948) तपे हुए लोहे को उलट-पुलट करने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण >> B.93 - P. 178 (1949) तपोमानवशार्तमरण >> B.98 - P. 186 (1950) तब्भवमरण >> B.79 - P. 68 (1951) तमस्काय के परिणामित्व का प्ररूपण >> B.96 - P. 679 (1952) तरङ्गवती >> B.84 - P. 374 (1953) तरण >> B.46 - P. 221 (1954) तरण-तारण >> B.46 - P. 221 (1955) तरण >> B.79 - P. 70 (1956) तरणागार >> B.46 - P. 221 (1957) तरणि >> B.46 - P. 221 (1958) तरणि-तनया >> B.46 - P. 221 (1959) तरणी >> B.46 - P. 221 (1960) तरणीयं >> B.79 - P. 70 (1961) तरियां तोरण >> B.46 - P. 221 (1962) तरुण >> B.46 - P. 221 / B.79 - P. 70 / B.84 - P. 374 (1963) तरुण भारत ग्रन्थावली >> B.74 - P. 154 (1964) तरुणअंबग >> B.119 - P. 146, 146 (1965) तरुणइत्ते >> B.79 - P. 70 (1966) तरुणगं >> B.79 - P. 70 (1967) तरुणदिवायरनयणो >> B.79 - P. 70 (1968) तरुणधम्मो >> B.79 - P. 70 (1969) तरुणप्रभ(सूरि) >> B.50 - P. 154 (1970) तरुणप्रभसूरि >> B.73 - P. 156, 202, 246, 592 (1971) तरुणरहस >> B.43 - P. 230 / B.79 - P. 71 (1972) तरुणसहयारि >> B.79 - P. 71 (1973) तरुणा >> B.79 - P. 70, 71 (1974) तरुणाम् >> B.119 - P. 146, 146 (1975) तरुणावंत >> B.46 - P. 221 (1976) तरुणिमानः >> B.79 - P. 71 (1977) तरुणी >> B.79 - P. 71 (1978) तरुणीपडिकम्म >> B.79 - P. 71 (1979) तरुणीपरिकम्म >> B.79 - P. 71 (1980) तलिया तोरण >> B.46 - P. 222 (1981) तलीआ तोरण >> B.46 - P. 222, 226 (1982) तलीया तोरण >> B.46 - P. 222 (1983) तवकरणं >> B.79 - P. 72 (1984) तामली ने प्रणामा प्रब्रज्या ग्रहण की >> B.95 - P. 61 (1985) तारण स्वामी (कवि) >> B.44 - P. 227 (1986) तारण-तरण >> B.46 - P. 225 (1987) तारणउं >> B.46 - P. 225 (1988) तारणपंथी >> B.49 - P. 135 (1989) तारुण >> B.46 - P. 225 (1990) तारुणी >> B.46 - P. 225 (1991) तालवृन्तं >> B.79 - P. 76 (1992) तालवृन्तविद्या >> B.60 - P. 129 (1993) तालीआ तोरण >> B.46 - P. 226 (1994) तिट्ठाणकरणसुद्धा >> B.79 - P. 78 (1995) तिट्ठाणकरणसूद्धं >> B.79 - P. 78 (1996) तित्थगरनाम >> B.79 - P. 80 (1997) तित्थोगाली में पूर्व-विच्छेद-विवरण >> B.135 - P. 573 (1998) तित्थोगालीपईणय अंगे केटलीक विचारणा, लेखक - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 49 (1999) तिर्यग्जुंभक >> B.84 - P. 384 (2000) तिव्वप्परिणामा >> B.79 - P. 83 (2001) तीन करण : चींटी का दृष्टांत >> B.134 - P. 175 (2002) तीर्थ को प्रणाम क्यों? >> B.134 - P. 300 (2003) तीर्थ द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (2004) तीर्थकरनाम >> B.60 - P. 130 (2005) तीर्थकरनामगोत्र का बंध >> B.134 - P. 301 (2006) तीर्थकरनुं चोढालियुं >> B.6 - P. 365 (2007) तीर्थकरनाम >> B.98 - P. 192 (2008) तीर्थकरनामगोत्रं >> B.79 - P. 80 (2009) तुम्ब के दृष्टांत से जीवों के गुरुत्व-लघुत्व के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 471 (2010) तुरङ्गमुख >> B.84 - P. 387 (2011) तुरणी >> B.46 - P. 230 (2012) तुरियकरणं >> B.79 - P. 86 (2013) तुरुणी >> B.46 - P. 231 (2014) तृण >> B.119 - P. 145, 145 (2015) तृण - मणियों का इष्टतर गन्ध >> B.96 - P. 134 (2016) तृण - मणियों का इष्टतर शब्द >> B.96 - P. 135 (2017) तृण - मणियों का इष्टतर स्पर्श >> B.96 - P. 134 (2018) तृण 5 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 82) >> B.82 - P. 14 (2019) तृण

आदि शय्यातरपिंड नहीं >> B.135 - P. 562 (2020) तृण पंचक >> B.82 - P. 353 (2021) तृण पराल निर्मित उपाश्रय का विधि-निषेध >> B.90 - P. 649 (2022) तृण स्पर्श परीषह >> B.49 - P. 137 / B.82 - P. 362 (2023) तृणकचवर: >> B.79 - P. 88 (2024) तृणकर्म >> B.46 - P. 232 (2025) तृणदाहक की क्रियाओं का प्ररूपण >> B.93 - P. 178 (2026) तृणपिंगल >> B.42 - P. 155 (2027) तृणबिन्दु >> B.42 - P. 155 (2028) तृणवारि >> B.46 - P. 232 (2029) तृणवृन्तक >> B.111 - P. 53 (2030) तृणशूक >> B.79 - P. 88 (2031) तृणसंस्तर >> B.98 - P. 194 (2032) तृणस्पर्श >> B.42 - P. 155 (2033) तृणस्पर्श परीषह >> B.69 - P. 268 / B.134 - P. 409 / B.60 - P. 131 (2034) तृणस्पर्शपरीषहजय >> B.98 - P. 194 (2035) तृणावंत >> B.46 - P. 221, 232 (2036) तृणाहारा >> B.111 - P. 53 (2037) तृतीय ईश्वरकारणिकवादी की श्रद्धा का निरसन >> B.90 - P. 155, 156 (2038) तेजसारनो रास >> B.6 - P. 258 (2039) तेजस्कायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 233, 235 (2040) तेजोलेश्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (2041) तेजोलेश्या से भस्म करने के कारण >> B.93 - P. 141 (2042) तेतली-पुत्र की मरण चेष्टा का विफलीकरण >> B.95 - P. 217 (2043) तेदुरणमज्जिया >> B.43 - P. 236 / B.111 - P. 54 (2044) तेरणि >> B.43 - P. 236 (2045) तेवुरणमिजिया >> B.79 - P. 89 (2046) तेषां नतोऽहं क्रमान्' वाक्य मे नम् को क्तप्रत्यय, समाधान - निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.157 - P. 44 (2047) तैजसशरीरनाम >> B.98 - P. 197 (2048) तोरण >> B.43 - P. 237 / B.98 - P. 198 (2049) तोरण >> B.79 - P. 91 (2050) तोरणसंठिओ >> B.79 - P. 91 (2051) तोरणों के ऊपर आठ-आठ मंगल >> B.96 - P. 138 (2052) तोरणों के ऊपर चामरयुक्त ध्वजाएँ >> B.96 - P. 138 (2053) तोरणों के ऊपर छत्रादि पदार्थ >> B.96 - P. 138 (2054) त्रण नवकार गणवानी परंपरा अंगे, लेखक - त्यागमंडनविजय >> B.153 - P. 35 (2055) त्रण प्रकारनी पूजा, पत्रचर्चा - कुमुदचन्द्रविजय >> B.157 - P. 47 (2056) त्रण प्रकारनी पूजा, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.153 - P. 26 (2057) त्रण प्राचीन गुजराती कृतियों >> B.74 - P. 266 (2058) त्रण भाष्य पर बालावबोध >> B.3 - P. 350 (2059) त्रण भाष्य प्रकरण टबो >> B.5 - P. 387 (2060) त्रण भाष्य प्रकरण बालावबोध >> B.5 - P. 377 (2061) त्रण मित्र कथा चोपाई >> B.3 - P. 238 (2062) त्रणभाष्य बालावबोध >> B.5 - P. 153 (2063) त्रणमित्र कथा चौपड़ >> B.74 - P. 463 (2064) त्रणिण >> B.46 - P. 234 (2065) त्रयस्त्रिंशदाशतना >> B.84 - P. 389 (2066) त्रस प्राणियों को बांधने और बन्धन मुक्त करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 249, 251 (2067) त्रसकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 571 (2068) त्रयस्त्रिंश >> B.42 - P. 156 / B.69 - P. 108 / B.98 - P. 201 (2069) त्रयस्त्रिंशक >> B.60 - P. 133 (2070) त्रयस्त्रिंशक देव कथा >> B.141 - P. 66 (2071) त्रयस्त्रिंशग >> B.79 - P. 91 (2072) त्रिगलवाडीनुं गुफामंदिर, महाराष्ट्र >> B.59 - P. 134 (2073) त्रिंशद उत्सूत्र निराकरण कुमति मतखंडन >> B.74 - P. 135 (2074) त्रिंशदमहास्वप्न >> B.84 - P. 386 (2075) त्रिंशदमोहनीयस्थान >> B.84 - P. 386 (2076) त्रिकरण >> B.46 - P. 235 (2077) त्रिकरणशुद्धि >> B.46 - P. 235 (2078) त्रिकरणसुद्धि >> B.46 - P. 235 (2079) त्रिकशां तोरण >> B.46 - P. 235 (2080) त्रिखलां तोरण >> B.46 - P. 235 (2081) त्रिणउ >> B.46 - P. 236 (2082) त्रिणि >> B.46 - P. 236 (2083) त्रिणिण >> B.46 - P. 236 (2084) त्रिण्य >> B.46 - P. 236 (2085) त्रिण्ह >> B.46 - P. 236 (2086) त्रिनेत्र >> B.42 - P. 156 (2087) त्रिन्द्रिय जीव >> B.42 - P. 157 (2088) त्रिन्नि >> B.46 - P. 236, 236 (2089) त्रिन्हि >> B.46 - P. 236 (2090) त्रिन्हिंसइ >> B.46 - P. 236 (2091) त्रिविध मूल्यनिर्धारण : शालिभद्र की उपधि >> B.135 - P. 186 (2092) त्रिवृत्करणम् >> B.47 - P. 103 (2093) त्रिश्रृंग >> B.42 - P. 157 (2094) त्रिसोपान प्रतिरूपकों के आगे तोरण >> B.96 - P. 138 (2095) त्रिसोपान प्रतिरूपकों के तोरण >> B.96 - P. 295 (2096) त्रैराशिककरण >> B.79 - P. 92 (2097) त्रैलोक्यवृत्त-विवरण (प्रवचन सारोद्धार द्वार 152) >> B.82 - P. 17 (2098) थरथरित >> B.43 - P. 238 (2099) थरहरण >> B.43 - P. 478 (2100) थारणहार >> B.46 - P. 239 (2101) थावच्चापुत्र का जनपद विहार और सेलगपुर में समवसरण >> B.95 - P. 37 (2102) थावच्चापुत्र का परिनिर्वाण >> B.95 - P. 43 (2103) थिरणाम >> B.43 - P. 240 (2104) थिरणास >> B.43 - P. 479 (2105) थिरण्णेस >> B.43 - P. 479 (2106) थिरीकरण >> B.79 - P. 94 (2107) थीपरिण्णा >> B.79 - P. 95 / B.84 - P. 394 (2108) थुरुणुल्लतणय >> B.43 - P. 241 (2109) दंडईरण्णो >> B.79 - P. 97 (2110) दंडकप्रकरण अने षडशीतिमां भिन्न-भिन्न अल्पबहुत्व विशेष, पत्रचर्चा - सौम्यचन्द्रविजय >> B.153 - P. 80 (2111) दंडकप्रकरण अने षडशीतिमां भिन्न-भिन्न अल्पबहुत्व विशेष, लेखक - सुव्रतचन्द्रविजय >> B.152 - P. 15 (2112) दंडकारण्य >> B.79 - P. 97 (2113) दंडगारण्य >> B.84 - P. 396 (2114) दंडासनमां नेतरनी सोटीनुं वधु एक कारण, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.145 - P. 4 (2115) दंसण आवरणी >> B.46 - P. 244 (2116) दण्डकारणिक >> B.42 - P. 158 (2117) दण्डकारण्य >> B.42 - P. 158 / B.84 - P. 331, 396 (2118) दत्तिपरिमाण की करणगाथा, दत्ति-स्वरूप >> B.135 - P. 385 (2119) दरिसणावरणिज्ज >> B.79 - P. 105 (2120) दर्दुर का जातिस्मरण और श्रावक-व्रतों का पालन >> B.95 - P. 293 (2121) दर्दुर का समवसरण में जाना >> B.95 - P. 294 (2122) दर्शनपण्डितमरण >> B.98 - P. 209 (2123) दर्शनबाल-इच्छामरण >> B.98 - P. 210 (2124) दर्शनबालमरण >> B.98 - P. 210 (2125) दर्शनावरण >> B.42 - P. 160 / B.49 - P. 53 / B.98 - P. 212 (2126) दर्शनावरण कर्म >> B.69 - P. 232 / B.134 - P. 181 (2127) दर्शनावरण प्रकृति के 9 भेद >> B.69 - P. 234 (2128) दर्शनावरणीय >>

B.8 - P. 14 / B.98 - P. 213 (2129) दर्शनावरणीय कर्म >> B.49 - P. 53 / B.60 - P. 136 (2130) दर्शनावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति >> B.69 - P. 249 (2131) दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति >> B.69 - P. 249 (2132) दर्शनावरणीय के क्षय से बोधिलाभ और क्षय न होने से अलाभ >> B.90 - P. 127, 128 (2133) दर्शनावरणीयकर्म >> B.47 - P. 104 (2134) दर्शनावरणीयना क्षयशी वचनातिशय एटले ?, जिज्ञासा - तीर्थतिलकविजय >> B.161 - P. 86 (2135) दव्वचरण >> B.79 - P. 107 (2136) दश प्रकारनां आयुष्य, लेखक - पद्मचन्द्रसागर >> B.149 - P. 6 (2137) दशवैकालिकसूत्रनी रचना क्यारे ?, सिद्धान्तचन्द्रविजय >> B.161 - P. 74 (2138) दशारण >> B.46 - P. 243 (2139) दशारणभद्र मास >> B.74 - P. 600 (2140) दशार्णभद्रनी सझाय >> B.6 - P. 229 (2141) दसउरनगर >> B.79 - P. 109 (2142) दाक्षिणात्य नागकुमारेन्द्र धरण >> B.96 - P. 84 (2143) दातृ विषयक भाव अपरिणत >> B.82 - P. 297 (2144) दानार्थ स्थापित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 558 (2145) दामोदरभट्ट (उक्तिव्यक्ति प्रकरण) >> B.73 - P. 15, 19 (2146) दारुण >> B.42 - P. 163 / B.79 - P. 112 (2147) दारुणपरिणामो >> B.79 - P. 112 (2148) दारुणा >> B.79 - P. 112 (2149) दारुदण्ड करने के आदि प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 275, 277 (2150) दिक्परिणाम व्रत के अतिचार >> B.82 - P. 141 (2151) दिट्ठतपरिणामगो >> B.79 - P. 114 (2152) दिन में या रात्रि में अशनादि ग्रहण करने के तथा खाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 481 (2153) दिसाविचारिणो >> B.79 - P. 117 (2154) दीन-अदीन परिणति आदि की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भूगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 590 (2155) दीप्तचित्तता के कारण एवं निवारण >> B.135 - P. 228 (2156) दीहगइपरिणाम >> B.79 - P. 119 (2157) दुःस्वरनाम >> B.98 - P. 225 (2158) दुःख के बाह्य और अभ्यंतर कारण >> B.69 - P. 139 (2159) दुःस्वरनाम >> B.60 - P. 138 (2160) दुब्भिसद्वपरिणामे >> B.79 - P. 124 (2161) दुरणुपालओ >> B.79 - P. 125 (2162) दुरनीवारी >> B.46 - P. 251 (2163) दुरन्त >> B.46 - P. 251 (2164) दुष्टव्रणादिः >> B.79 - P. 127 (2165) दुष्प्रणिधान >> B.42 - P. 169 / B.49 - P. 59 (2166) दुष्प्रणिहितकायिकी >> B.79 - P. 127 (2167) दुष्प्रमृष्टनिक्षेपाधिकरण >> B.98 - P. 223 (2168) दूसरनाम >> B.79 - P. 129 (2169) दृढप्रहारिन् >> B.84 - P. 400 (2170) दृष्टान्तपरिणामक >> B.60 - P. 140 (2171) दृष्टिवाद का उत्सारण क्यों ? >> B.135 - P. 120 (2172) देरणा, राजस्थान >> B.58 - P. 123 (2173) देव कथित रोगांतक सहन न होने पर सुरादेव का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना >> B.95 - P. 320 (2174) देव का पिशाच रूप-संहरण और स्ववृत्तांत कथन >> B.95 - P. 33 (2175) देव के च्यवनज्ञान और उद्देग के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 671 (2176) देव के मनुष्यलोक में आगमन के कारण >> B.134 - P. 350 (2177) देव के मनुष्यलोक में न आने के कारण >> B.134 - P. 350 (2178) देव ने स्वाभाविक रूप धारण करके कामदेव की प्रशंसा की और क्षमायाचना की >> B.95 - P. 308 (2179) देव सन्निपातादि के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 672 (2180) देव-आयुष्यबंध के कारण >> B.134 - P. 349, 349 (2181) देवकथित अपनी स्वर्ण-राशि को बिखरने रूप उपसर्ग सहन न होने पर चुल्लशतक का कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में अदृश्य हो जाना >> B.95 - P. 225 (2182) देवकी ने चिन्ता का कारण कहा >> B.95 - P. 26 (2183) देवकुरु—उत्तरकुरुक्षेत्र तेमज कुरुक्षेत्रना 10 द्रहो >> B.56 - P. 101, 386 (2184) देवताधिकरणम् >> B.47 - P. 106 (2185) देवदिन्न का विजय चौर ने अपहरण किया >> B.95 - P. 439 (2186) देवना अने नरकना जीवोने आयुष्यनी उदीरणा, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 70 (2187) देवर्न्नेति >> B.79 - P. 131 (2188) देवलोक में अंधकार के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 676 (2189) देवलोक में उद्योत के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 676 (2190) देववन्दन माला नवस्मरण संग्रह >> B.133 - P. 203 (2191) देवारण्य >> B.42 - P. 172 (2192) देवारन्ने >> B.79 - P. 132 (2193) देवेन्द्रनाथ ठाकुर >> B.133 - P. 17, 17 (2194) देवेन्द्रों आदि के मनुष्य लोक में आगमन के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 675 (2195) देवों का मरण-विरह >> B.82 - P. 18 (2196) देवों की एक साथ जन्म-मरण की संख्या >> B.82 - P. 18 (2197) देवों के अभ्युत्थानादि के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 671 (2198) देवों के परितप्त होने के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 671 (2199) देवों द्वारा विद्युत् प्रकाश और स्तनित शब्द के करने के हेतु का प्ररूपण >> B.93 - P. 672 (2200) देवों द्वारा वृष्टि करने की विधि और कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 672 (2201) देवों में धातकीखण्डद्वीप की परिक्रमा करने में सामर्थ्य का निरूपण >> B.96 - P. 369 (2202) देवों में रुचकवर द्वीप की परिक्रमा करने के सामर्थ्य का निरूपण >> B.96 - P. 414 (2203) देवों में लवण समुद्र की परिक्रमा करने के समर्थ्य का परूपण >> B.96 - P. 360 (2204) देश-रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 467 (2205) देशकरणोपशमना >> B.98 - P. 233 (2206) देशज्ञानावरणीय >> B.98 - P. 234 (2207) देशदर्शनावरणीय >> B.79 - P. 133 (2208) देशप्रकृतिविपरिणामना >> B.98 - P. 235 (2209) देशविरतिपरिणामः >> B.65 - P. 55 (2210) देशविरतिमां अंतर्मुहूर्तमात्र ज स्थिति, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 69 (2211) देशावधिमरण >> B.98 - P. 239 (2212) देशावरण >> B.98 - P. 239 (2213) देसनाणावरणिज्जे >> B.79 - P. 134 (2214) देसवित्थारणंतए >> B.79 - P. 134 (2215) देहप्परिणाम >> B.79 - P. 135 (2216) दो करण तीन योग से प्रत्याख्यान >> B.134 - P. 629 (2217) दोग्रन्थिकप्राभूत >> B.98 - P. 240 (2218) दोषरहित आहार का ग्रहण और उसका परिणाम >> B.90 - P. 599 (2219) दोसाअरण >> B.43 - P. 480 (2220) दोसाकरण >> B.43 - P. 253 (2221) द्रव्य अधिकरण >> B.49 - P. 56 (2222) द्रव्य अधिकरण क्रिया :

निर्वर्तना आदि >> B.135 - P. 10 (2223) द्रव्य अपरिणत >> B.82 - P. 297 (2224) द्रव्य करुणा >> B.69 - P. 197 (2225) द्रव्य निर्ग्रन्थ >> B.49 - P. 57 (2226) द्रव्य परिणमन के प्रकार >> B.135 - P. 112 (2227) द्रव्य परिणामोन्नित्य >> B.134 - P. 352 (2228) द्रव्य भाव : कारण-कार्य >> B.134 - P. 386 (2229) द्रव्य लिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (2230) द्रव्य लेश्याओं का परस्पर परिणमन >> B.93 - P. 127 (2231) द्रव्य-भाव अधिकरण >> B.135 - P. 10 (2232) द्रव्यकरण >> B.134 - P. 178 / B.98 - P. 243 (2233) द्रव्यजिन अने भावजिन अंगे एक नवी ज विचारणा, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.161 - P. 39 (2234) द्रव्याधिकरण >> B.98 - P. 258 (2235) द्रव्यावधिमरण >> B.98 - P. 260 (2236) द्रव्यावधिमरण >> B.79 - P. 137 (2237) द्रव्यावीचिमरण >> B.98 - P. 261 (2238) द्रव्यावोचिमरण >> B.79 - P. 137 (2239) द्रौपदी का पाण्डवों को वरण करना >> B.95 - P. 193 (2240) द्रौपदी-भव के कथानक में द्रौपदी का तारुण्य भाव >> B.95 - P. 189 (2241) द्वाचत्वारिंशत्स्वप्न >> B.85 - P. 104 (2242) द्वात्रिंशद्दंडिका >> B.79 - P. 138 (2243) द्विचरण >> B.49 - P. 59 (2244) द्वितीयसमवसरण >> B.60 - P. 146 (2245) द्वीप-समुद्रों का परिणमन प्ररूपण >> B.96 - P. 417 (2246) धणपडरण >> B.43 - P. 254 (2247) धन सार्थवाह का सुसुमा के लिये क्रन्दन करना >> B.95 - P. 162 (2248) धनसार्थवाह के उदाहरण का निष्कर्ष >> B.95 - P. 443 (2249) धनसार्थवाह के उदाहरण का पुनः निष्कर्ष >> B.95 - P. 444 (2250) धन्नाअणगारनोरास >> B.73 - P. 374 (2251) धम्मकहाहरण >> B.79 - P. 142 (2252) धम्मचरण >> B.79 - P. 142 (2253) धरण >> B.42 - P. 179 / B.49 - P. 54 / B.79 - P. 145 / B.98 - P. 266 / B.84 - P. 455 (2254) धरण कथा >> B.138 - P. 261 (2255) धरणइ >> B.46 - P. 260 (2256) धरणउ >> B.46 - P. 194 (2257) धरणउ जावइ >> B.46 - P. 260 (2258) धरणकुमार >> B.44 - P. 287 (2259) धरणपरिहरण >> B.79 - P. 145 (2260) धरणप्पमे >> B.79 - P. 145 (2261) धरणहार >> B.46 - P. 260 (2262) धरणा >> B.42 - P. 180 / B.79 - P. 145 / B.84 - P. 456 / B.60 - P. 148 (2263) धरणानन्द >> B.42 - P. 180 (2264) धरणाशाह (श्रेष्ठी) >> B.73 - P. 557 (2265) धरणि >> B.84 - P. 456 (2266) धरणिंद >> B.84 - P. 457 (2267) धरणिकम्प >> B.42 - P. 180 (2268) धरणिकिए >> B.79 - P. 145 (2269) धरणिकील >> B.84 - P. 457 (2270) धरणिखील >> B.84 - P. 457 (2271) धरणिगोयरो >> B.79 - P. 145 (2272) धरणिधरा >> B.79 - P. 145 / B.84 - P. 457 (2273) धरणिपुत्र >> B.79 - P. 145 (2274) धरणिशृंग >> B.84 - P. 457 (2275) धरणिसिंग >> B.84 - P. 457 (2276) धरणिसिगे >> B.79 - P. 145 (2277) धरणी >> B.42 - P. 180 / B.79 - P. 145 / B.98 - P. 267 / B.172 - P. 151 (2278) धरणीकम्प >> B.98 - P. 267 (2279) धरणीजट >> B.42 - P. 180 (2280) धरणीतिलक >> B.42 - P. 180 (2281) धरणीधर >> B.42 - P. 180 / B.46 - P. 260 (2282) धरणीमौलि >> B.42 - P. 180 (2283) धरणीशाह >> B.75 - P. 501 (2284) धरणेन्द्र >> B.42 - P. 180 / B.84 - P. 457 (2285) धरणेन्द्र (पद्मावती) >> B.44 - P. 287 (2286) धरणेन्द्रनी अग्रमहिनीओ >> B.141 - P. 79 (2287) धरणोपपात >> B.84 - P. 457 / B.60 - P. 148 (2288) धरणोववाय >> B.84 - P. 457 (2289) धर्म का परित्याग करने वाले की और अधर्म को स्वीकार करने वाले की गाड़ीवान से तुलना >> B.90 - P. 41, 41 (2290) धर्म के परिणाम >> B.90 - P. 30, 30 (2291) धर्म निन्दाकरण प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 50, 50 (2292) धर्म शरण है >> B.134 - P. 357 (2293) धर्म-अधर्म द्रव्यों में प्रदेशों का परिणाम >> B.69 - P. 132 (2294) धर्मचक्रनो वर्तमानकाळे प्राप्त थतो आकार, जिज्ञासा - कुमुदचन्द्रविजय >> B.159 - P. 67 (2295) धर्मचरण >> B.98 - P. 269 (2296) धर्मधोरिधर >> B.46 - P. 260 (2297) धर्मनाथ जिनालय, हाथीवाळा देरासरनी गलीमां, सुरत >> B.61 - P. 80 (2298) धर्मपक्षीय पुरुषों की प्रवृत्ति एवं परिणाम >> B.93 - P. 220 (2299) धर्मरूचि का समाधिमरण >> B.95 - P. 180 (2300) धर्मविधिप्रकरण >> B.73 - P. 185 (2301) धर्मशाला आदि में निषद्यादि करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 743 (2302) धर्मश्रद्धा के परिणाम >> B.134 - P. 357 (2303) धर्मसंग्रहग्रंथनी केटलीक विचारणी वातो, पत्रचर्चा - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.162 - P. 137 (2304) धर्मसंग्रहग्रंथनी केटलीक विचारणी वातो, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.158 - P. 52 (2305) धर्मसंग्रहमां उद्धरण, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.158 - P. 35 (2306) धर्मास्तिकाय : परिणमन की सदृशता >> B.134 - P. 70 (2307) धर्मोपकरण >> B.79 - P. 146 (2308) धातृपिंडादि दोषयुक्त आहार करने वाले के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 566 (2309) धारण >> B.42 - P. 183 / B.46 - P. 262 / B.79 - P. 147 / B.98 - P. 275 (2310) धारण करने योग्य और न धारण करने योग्य पात्र के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 698 (2311) धारणगं >> B.79 - P. 147 (2312) धारणम् >> B.65 - P. 60 (2313) धारणयुग्म >> B.42 - P. 183 (2314) धारणा >> B.42 - P. 183 / B.46 - P. 262 / B.47 - P. 111 / B.49 - P. 44, 54 / B.69 - P. 29 / B.79 - P. 147 / B.98 - P. 275 / B.60 - P. 149 / B.172 - P. 152 (2315) धारणा : परिभाषा >> B.134 - P. 115 (2316) धारणा के पर्याय >> B.172 - P. 155 (2317) धारणा के भेद >> B.172 - P. 155 (2318) धारणा व्यवहार >> B.60 - P. 150 (2319) धारणा व्यवहार का स्वरूप >> B.135 - P. 538 (2320) धारणापरिहारो >> B.79 - P. 147 (2321) धारणामति के प्रकार >> B.135 - P. 198 (2322) धारणामेधावो >> B.79 - P. 147 (2323) धारणाया >> B.79 - P. 147 (2324) धारणावरणीय >> B.98 - P. 277 (2325) धारणावहार >> B.79 - P. 147 (2326) धारणाव्यवहार >> B.98 - P. 277 (2327) धारणि >> B.79 - P. 147 (2328) धारणिओ >> B.79 - P. 147 (2329)

धारणिज्जं >> B.79 - P. 147 (2330) धारणी >> B.42 - P. 184 / B.79 - P. 147 / B.84 - P. 459 / B.82 - P. 176 (2331) धारणी का दोहद पूर्ण हुआ >> B.95 - P. 76 (2332) धारणीय पात्र ग्राह्य >> B.135 - P. 134 (2333) धारणीय-अधारणीय वस्त्र के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 678 (2334) धाराचारण >> B.98 - P. 277 (2335) धारिणि >> B.79 - P. 147 (2336) धारिणी >> B.42 - P. 184 / B.44 - P. 294, 294, 295, 295, 295, 295, 296, 296, 296, 296 / B.79 - P. 147 / B.84 - P. 459 (2337) धारिणी और मेघकुमार का परिसंवाद >> B.95 - P. 80 (2338) धारिणी कथा >> B.139 - P. 372 (2339) धारिणी का दोहद >> B.95 - P. 72 (2340) धारिणी का स्वप्न-जागरणा >> B.95 - P. 70 (2341) धारिणी का स्वप्न-दर्शन >> B.95 - P. 69 (2342) धारिणी की गर्भचर्या >> B.95 - P. 77 (2343) धारिणी की चिन्ता >> B.95 - P. 73 (2344) धारिणी की शोकाकुल दशा >> B.95 - P. 80 (2345) धारिणी ने चिन्ता का कारण कहा >> B.95 - P. 73 (2346) धीरणा >> B.46 - P. 263 (2347) ध्रुवचारिणो >> B.79 - P. 150 (2348) धूमचारण >> B.98 - P. 277 (2349) धूम्रशिखाचारण >> B.82 - P. 317 (2350) धृणित कुल से वस्त्रादि ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 687 (2351) धोरण >> B.43 - P. 257, 481 / B.79 - P. 151 (2352) धोरणि >> B.46 - P. 266 (2353) धोरणी >> B.43 - P. 481 / B.46 - P. 266 (2354) ध्यान में योग की विचारणा >> B.69 - P. 286 (2355) ध्यानशतक - हारिभद्री वृत्ति अने विवेचन (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जैन धर्म प्रसारण ट्रस्ट, शुद्धिकार - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 109 (2356) ध्यानशतकना विवेचनमां केटलांक विचारणीय स्थानो, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 46 (2357) ध्यानशतकनी वृत्तिमां केटलीक विचारणी वातो, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 35 (2358) नई लोहे आदि की खानों में आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 552 (2359) नक्षत्रनाम >> B.98 - P. 282 (2360) नक्षत्रों का आभ्यन्तरादि संचरण >> B.96 - P. 621 (2361) नगर-रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 466 (2362) नगरनायिका >> B.46 - P. 267 (2363) नगरनिद्धमणं >> B.79 - P. 155 (2364) नगशृंग >> B.46 - P. 267 (2365) नजिरि >> B.46 - P. 267 (2366) नन्द का धर्म-ग्रहण करना >> B.95 - P. 290 (2367) नन्द का मिथ्यात्व-ग्रहण करना >> B.95 - P. 290 (2368) नन्द ने पुष्करणी का निर्माण करवाया >> B.95 - P. 291 (2369) नन्दापुष्करणियों का प्रमाण >> B.96 - P. 163 (2370) नन्दिनीपिता का गृहीधर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 348 (2371) नन्दिनीपिता का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 348 (2372) नन्दिनीपिता का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 349 (2373) नन्दिवर्धन का पिता को मारने का संकल्प >> B.95 - P. 483 (2374) नपुंसक वेद में श्रेणि आरम्भ करने वाले की प्रक्रिया >> B.82 - P. 375, 382 (2375) नमस्करण >> B.79 - P. 157 (2376) नमस्कारनिर्युक्ति >> B.84 - P. 349 (2377) नय के अपृथक्करण का हेतु >> B.134 - P. 378 (2378) नयचक्रनो बालावबोध >> B.4 - P. 232 (2379) नरक आयुष्य बंध के कारण >> B.134 - P. 380 (2380) नरक गमन के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 514 (2381) नरक पृथ्वियों में पुद्गल परिणामों के अनुभवन का प्ररूपण >> B.93 - P. 517 (2382) नरक में 10 प्रकार का अशुभ परिणाम >> B.69 - P. 86 (2383) नरक में एक साथ मरने वाले जीवों की संख्या >> B.82 - P. 18 (2384) नरनरइ >> B.46 - P. 269 (2385) नरनाह >> B.46 - P. 269 (2386) नरसिंह महेतानुं मामेरुं >> B.6 - P. 555 (2387) नरिद >> B.46 - P. 270 (2388) नरिदुत्तरवडिसंगं >> B.79 - P. 158 (2389) नवकारना पंचपद पर अंगोपांग अने चरणसित्तरी करणसित्तरी पर सझायो >> B.4 - P. 412 (2390) नवतत्त्व प्रकरण बालावबोध >> B.4 - P. 366 (2391) नवतत्त्व प्रकरण स्तबक >> B.5 - P. 375, 377 (2392) नवतत्त्वनी जइआइ होइ पृच्छा... ए गाथाना तात्पर्य अंगे विचारणा, पत्रचर्चा - सौम्यचन्द्रविजय >> B.151 - P. 11 (2393) नवतत्त्वनी जइआइ होइ पृच्छा... ए गाथाना तात्पर्य अंगे विचारणा, लेखक - सुव्रतचन्द्रविजय >> B.148 - P. 8 (2394) नवतत्त्वप्रकरण, सत्तरभेदी पूजा >> B.6 - P. 336 (2395) नवतत्त्वविवरणबालावबोध >> B.73 - P. 596 (2396) नवतत्त्व प्रकरण बालावबोध >> B.4 - P. 399 (2397) नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध >> B.75 - P. 360 (2398) नवनिर्मित ग्रामादि में आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 552 (2399) नवस्मरण बालावबोध >> B.6 - P. 400 (2400) नवस्मरण स्तबक >> B.5 - P. 378, 387 (2401) नहरणं >> B.79 - P. 159 (2402) नहरणी >> B.46 - P. 271 (2403) नाक का अर्श होने का एक कारण >> B.135 - P. 217 (2404) नागकुमार के कहने से चिलात भरत की शरण में गये >> B.95 - P. 128 (2405) नागपौत्र वरुण + बालमित्र >> B.140 - P. 43 (2406) नागराज धरणेंद्र द्वारा प्रभु आदिनाथना रूपनी विकुर्वणा, लेखक- शीलचन्द्रविजय >> B.162 - P. 60 (2407) नाणावरणिज्जं >> B.79 - P. 161 (2408) नामकरण >> B.135 - P. 284 / B.98 - P. 292 (2409) नामकरण स्थापनाकरण >> B.134 - P. 178 (2410) नारककालावीचिमरण >> B.98 - P. 299 (2411) नारकखेत्तावीचिमरण >> B.98 - P. 299 (2412) नारकद्रव्यात्यन्तिकमरण >> B.98 - P. 299 (2413) नारकद्रव्यावधिमरण >> B.98 - P. 299 (2414) नारकद्रव्यावीचीमरण >> B.98 - P. 299 (2415) नारकभवावीचीमरण >> B.98 - P. 300 (2416) नारकभावावीचीमरण >> B.98 - P. 300 (2417) नारण >> B.50 - P. 220 (2418) नारण - १ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2419) नारण - २ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2420) नारण - ३ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2421) नारण(दास) >> B.50 - P. 220 (2422) नारणदास >> B.50 - P. 207 (2423) नारणदास - १ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2424) नारणभाई >> B.50 - P. 220 (2425) नारणसिंग >> B.50 - P. 220 (2426)

नारिग >> B.46 - P. 274 (2427) नासाग्रन्यस्तदृष्टिः एतले शुं ?, लेखक - हेमनिलयविजय >> B.155 - P. 57 (2428)
 नाहारं >> B.46 - P. 275 (2429) निःसरणात्मक तैजस >> B.98 - P. 336 (2430) निकरण >> B.79 - P. 166
 (2431) निकरणाए >> B.79 - P. 166 (2432) निकाचनाकरणं >> B.79 - P. 166 (2433) निकुरंब >> B.79 - P. 166
 (2434) निक्कारण >> B.46 - P. 276 (2435) निक्कारणवच्छुल्लो >> B.79 - P. 167 (2436) निक्कारणो >> B.79 -
 P. 167 (2437) निक्कोरण >> B.79 - P. 167 (2438) निक्षिप्त दोषयुक्त आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90
 - P. 571 (2439) निक्षेप अधिकरण >> B.69 - P. 173 (2440) निक्षेपणा-संयोजना-निसर्जना अधिकरण >> B.135 - P.
 12 (2441) निक्षेपाधिकरण >> B.42 - P. 200 / B.49 - P. 92 (2442) निगम-रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त
 सूत्र >> B.90 - P. 466 (2443) निगरणं >> B.79 - P. 168 (2444) निगुरुं >> B.79 - P. 168 (2445) निग्रन्थ -
 निग्रन्थिनी के लिए स्वाध्याय विधान >> B.90 - P. 63, 63 (2446) निग्रन्थ - निग्रन्थिनी हेतु अस्वाध्याय काल विधान >>
 B.90 - P. 63, 63 (2447) निग्रन्थ - निग्रन्थिनी हेतु स्वाध्याय काल विधान >> B.90 - P. 63, 63 (2448) निग्रन्थियो के
 लिए अकल्प्य उपाश्रय >> B.90 - P. 637 (2449) निच्छिण्णकारण >> B.79 - P. 170 (2450) निज्जरणं >> B.79 -
 P. 170 (2451) निज्जायकारणो >> B.79 - P. 171 (2452) निज्भक्तरणं >> B.79 - P. 172 (2453)
 निट्ठियट्ठकरणिज्जे >> B.79 - P. 172 (2454) नित्यमरण >> B.98 - P. 306 (2455) निदान करने से सभी वासुदेव
 प्रव्रजित नहीं होते ऐसा स्पष्टीकरण >> B.95 - P. 208 (2456) निदानकरण >> B.60 - P. 155 (2457) निदानकरण
 अतिचार >> B.69 - P. 224 (2458) निदानमरण >> B.98 - P. 308 (2459) निद्रादर्शनावरण >> B.69 - P. 235
 (2460) निद्रानिद्रादर्शनावरण >> B.69 - P. 235 (2461) निन्दा और उसके परिणाम >> B.134 - P. 124 (2462)
 निष्पट्ठपसिणवागारणो >> B.79 - P. 175 (2463) निमंत्रण >> B.98 - P. 311 (2464) निमन्त्रण >> B.82 - P. 421
 (2465) निमन्त्रण करने पर भी दोषयुक्त आहार आदि लेने का निषेध >> B.90 - P. 597 (2466) निमन्त्रणक्लीब दीक्षा
 अयोग्य नपुंसक >> B.82 - P. 439 (2467) निमन्त्रणम् >> B.47 - P. 114 (2468) निमन्त्रणासा. >> B.65 - P. 64
 (2469) निमित्त कारण >> B.49 - P. 92 / B.69 - P. 139 (2470) निमित्तकारण >> B.49 - P. 116 / B.172 - P. 174
 (2471) निमित्तकारण के भेद >> B.172 - P. 175 (2472) निमित्तकारणं >> B.79 - P. 176 (2473) निमित्तकारणम् >>
 B.47 - P. 114 (2474) निरणकंप >> B.79 - P. 179 (2475) निरणुक्कोस >> B.79 - P. 180 (2476) निरणुतावो >>
 B.79 - P. 180 (2477) निरधारं >> B.46 - P. 280 (2478) निरनामा >> B.46 - P. 280 (2479) निरनुकंप >> B.42
 - P. 201 (2480) निरनुकंपा >> B.82 - P. 338 (2481) निरनुकम्प >> B.98 - P. 313 (2482) निरनुतापी >> B.98 -
 P. 313 (2483) निरनुबंध >> B.46 - P. 280 (2484) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, जिज्ञासा -
 कुमुदचन्द्रविजय >> B.143 - P. 8 (2485) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, पत्रचर्चा - त्रैलोक्यमंडनविजय >>
 B.146 - P. 11 (2486) निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, पत्रचर्चा - संस्कारयशविजय >> B.145 - P. 10 (2487)
 निरनुबंध कर्मोना बंध वखते जीवमां भावो, समाधान - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.144 - P. 7 (2488) निरनुबंध कर्मोना बंध
 वखते जीवमां भावो, समाधान - संस्कारयशविजय >> B.144 - P. 7 (2489) निरनुबन्धयोगः >> B.65 - P. 64 (2490)
 निरनुयोज्यानुयोग निग्रहस्थान >> B.172 - P. 175 (2491) निरनुयोज्यानुयोगः >> B.47 - P. 115 (2492) निरन्तर
 >> B.98 - P. 313 (2493) निरन्तर अवक्रमणकालविशेष >> B.98 - P. 313 (2494) निरन्तर कितने समय तक कितने
 सिद्ध >> B.82 - P. 13 (2495) निरन्तर बन्धप्रकृति >> B.98 - P. 314 (2496) निरन्तर सिद्धिगमन की संख्या >>
 B.82 - P. 212 (2497) निरन्तरबन्धिनी >> B.60 - P. 157 (2498) निरन्तरवेदककाल >> B.98 - P. 314 (2499)
 निरन्तराः >> B.79 - P. 180 (2500) निरन्वय >> B.49 - P. 93 (2501) निरन्वय क्षणिक >> B.49 - P. 93 (2502)
 निरन्वय परिणाम प्रवाह >> B.49 - P. 93 (2503) निराकरण >> B.49 - P. 93 (2504) निरावरण >> B.79 - P. 181
 (2505) निरिदं >> B.79 - P. 158 (2506) निरिदकंतं >> B.79 - P. 158 (2507) निरुंभइ >> B.79 - P. 181 (2508)
 निरुंभति >> B.79 - P. 181 (2509) निरुंभा >> B.79 - P. 181 (2510) निरुंधइ >> B.46 - P. 281 (2511) निर्यथ
 प्रवचन का स्वरूप और परिणाम >> B.134 - P. 462 (2512) निर्यथ संबंधी विशेष विचारणा >> B.69 - P. 291 (2513)
 निर्यथ संबंधी विशेष विचारणा (कोष्टक) >> B.69 - P. 293 (2514) निर्यन्थ >> B.42 - P. 201 / B.49 - P. 93 / B.98
 - P. 315 / B.84 - P. 362, 365 / B.60 - P. 157 / B.82 - P. 401 (2515) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थ के पैरो आदि के परिकर्म
 करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 261, 263 (2516) निर्यन्थ - निर्यन्थिनी वस्त्रैषणा के विधि-निषेध >> B.90 - P.
 673 (2517) निर्यन्थ - निर्यन्थिनी परस्पर चिकित्सा के प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 260, 263 (2518) निर्यन्थ 5 (प्रवचन
 सारोद्धार द्वार 93) >> B.82 - P. 15 (2519) निर्यन्थ के 5 प्रकार >> B.69 - P. 290 (2520) निर्यन्थ के वस्त्र धारण की
 विधि >> B.90 - P. 676 (2521) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी का (आँखों आदि के) मैल निकलवाने का प्रायश्चित्त सूत्र >>
 B.90 - P. 379 (2522) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी के अक्षिपत्रों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 384
 (2523) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी के आँखों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 383 (2524) निर्यन्थ द्वारा
 निर्यन्थिनी के उत्तरोष्ठादि रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 382 (2525) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी के
 केशो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 385 (2526) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी के गण्डादि की चिकित्सा
 करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 265, 267 (2527) निर्यन्थ द्वारा निर्यन्थिनी के दांतों का परिकर्म करवाने के

प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 383 (2528) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के नखाग्रो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 380 (2529) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के पैरों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 379 (2530) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के भौह आदि के रोमों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 384 (2531) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के मस्तक को ढकवाने का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 385 (2532) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के व्रणों की चिकित्सा करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 264, 266 (2533) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के शरीर परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 378 (2534) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के होठों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 381 (2535) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के कृमि निकलवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 267, 269 (2536) निर्ग्रन्थ द्वारा निर्ग्रन्थी के जंघा आदि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 381 (2537) निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थिनी पात्रेषणा के विधि-निषेध >> B.90 - P. 697 (2538) निर्ग्रन्थ श्रमण >> B.82 - P. 403 (2539) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थिनी के पात्रेषणा का निषेध >> B.90 - P. 691 (2540) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थिनी के पात्रेषणा का निषेध >> B.90 - P. 690 (2541) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थी की वस्त्रेषणा का निषेध >> B.90 - P. 669 (2542) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थियों के कल्प्य उपाश्रय >> B.90 - P. 635 (2543) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थियों के लिए अकल्प्य उपाश्रय >> B.90 - P. 637 (2544) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थियों की स्त्रैषणा का स्वरूप >> B.90 - P. 666 (2545) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थियों के लिए पानी के किनारे पर निषिद्ध कार्य >> B.90 - P. 646 (2546) निर्ग्रन्थ-निग्रन्थी वस्त्र धारण के विधि-निषेध >> B.90 - P. 678 (2547) निर्ग्रन्थः >> B.65 - P. 65 (2548) निर्ग्रन्थता एक जीव को 5 बार प्राप्त होती है >> B.82 - P. 425 (2549) निर्ग्रन्थत्व >> B.98 - P. 316 (2550) निर्ग्रन्थयो के अकल्पनीय आसन >> B.90 - P. 661 (2551) निर्ग्रन्थाः >> B.65 - P. 63 (2552) निर्ग्रन्थि >> B.84 - P. 365 (2553) निर्ग्रन्थिपुत्र >> B.84 - P. 365 (2554) निर्ग्रन्थियों के आगमन पथ में उपकरण रखने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 665 (2555) निर्ग्रन्थियों के उपाश्रय में अविधि से प्रदेश करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 665 (2556) निर्ग्रन्थियों के उपाश्रय में निर्ग्रन्थों के लिए निषिद्ध कार्य >> B.90 - P. 646 (2557) निर्ग्रन्थियों के चादरों का प्रमाण >> B.90 - P. 677 (2558) निर्ग्रन्थो के उपाश्रय में निर्ग्रन्थियों के लिए निषिद्ध कार्य >> B.90 - P. 647 (2559) निर्ग्रन्थी की वस्त्रावग्रह विधि >> B.90 - P. 668 (2560) निर्ग्रन्थी की वस्त्राषणा विधि >> B.90 - P. 668 (2561) निर्ग्रन्थी की साड़ी सिलवाने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 677 (2562) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के व्रणों की चिकित्सा करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 261, 263 (2563) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ का मस्तक ढकवाने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 378 (2564) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ का मैल निकलवाने का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 372 (2565) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के अक्षिपत्रो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 377 (2566) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के आँखों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 376 (2567) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 375 (2568) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के कृमि निकलवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 264, 266 (2569) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के केश परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 377 (2570) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के जंघादि के रोगों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 373 (2571) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के दांतों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 375 (2572) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के नखाग्रो का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 373 (2573) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के पैरों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 372 (2574) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के भौहों आदि के परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 377 (2575) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के शारीरिक परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 371 (2576) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थ के होठों का परिकर्म करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 374 (2577) निर्ग्रन्थी द्वारा निर्ग्रन्थी के पैरो आदि के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 261, 263 (2578) निर्ग्रन्थों की वस्त्र धारण की विधि >> B.90 - P. 677 (2579) निर्ग्रन्थीय >> B.84 - P. 365 (2580) निर्ग्रन्थेश >> B.42 - P. 201 (2581) निर्ग्रन्थों और संयतो के प्ररूपक द्वार नाम >> B.93 - P. 56 (2582) निर्ग्रन्थों का आचार धर्म >> B.90 - P. 739 (2583) निर्ग्रन्थों की अपेक्षा काक्षामोहनीय कर्म के वेदन का विचार >> B.93 - P. 418 (2584) निर्ग्रन्थों की वस्त्रेषणा विधि >> B.90 - P. 667 (2585) निर्ग्रन्थों के अकल्प्य उपाश्रय >> B.90 - P. 637 (2586) निर्ग्रन्थों के कल्प्य आसन >> B.90 - P. 657 (2587) निर्ग्रन्थों के कल्प्य उपाश्रय >> B.90 - P. 635 (2588) निर्वर्तक कारण >> B.172 - P. 176 (2589) निर्वर्तना : तीक्ष्ण शस्त्रनिर्माण से तीव्र कर्मबंध >> B.135 - P. 10 (2590) निर्वर्तना अधिकरण >> B.69 - P. 173 (2591) निर्वर्तनाधिकरण >> B.98 - P. 321 (2592) निर्वर्तनाधिकरणिकी >> B.98 - P. 322 (2593) निर्वर्तनाधिकरणिकी क्रिया >> B.60 - P. 158 (2594) निर्वर्तनाधिकरणक्रिया >> B.79 - P. 182 (2595) निर्वाण समय देवों का उद्योत करना >> B.95 - P. 85 (2596) निर्विशमान-निर्विष्टकायिक : तपसमाचरण विधि >> B.135 - P. 338 (2597) निर्वेद के परिणाम >> B.134 - P. 681 (2598) निर्हरण >> B.79 - P. 183 (2599) निवरं >> B.46 - P. 283 (2600) निवृत्ति और उपकरण में अन्तर >> B.134 - P. 144 (2601) निवृत्तनाधिगारणिया >> B.79 - P. 185 (2602) निश्चय तपश्चरणाचार >> B.98 - P. 327 (2603) निश्चय-व्यवहारनय : गुरु-लघु-अगुरुलघु >> B.135 - P. 314 (2604) निश्चयकारिणी >> B.134 - P. 498 (2605) निश्चयनय-व्यवहारनय >> B.134 - P. 374 (2606) निषद की प्रव्रज्या और समाधिमरण >> B.95 - P. 19 (2607) निषिद्ध क्षेत्रों में विहार करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 492

(2608) निषिद्ध शय्याओं में प्रवेश करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 495 (2609) निषेध का पालन न करने पर मृत्यु >> B.95 - P. 158 (2610) निषेध के अनुसरण का फल >> B.95 - P. 158 (2611) निसर्ग अधिकरण >> B.69 - P. 173 (2612) निसालगरणां >> B.46 - P. 284 (2613) निसि परनि >> B.46 - P. 284 (2614) निसिरणे >> B.79 - P. 188 (2615) निस्तरण >> B.98 - P. 333 (2616) निस्त्रुंशः >> B.79 - P. 189 (2617) निस्साधारण >> B.79 - P. 190 (2618) निहरणकारिणः >> B.79 - P. 190 (2619) निहिसरिनाम >> B.79 - P. 191 (2620) नीझरण >> B.46 - P. 286 (2621) नीदाणकरण >> B.46 - P. 286 (2622) नील तृण - मणियों का इष्टतर नीलवर्ण >> B.96 - P. 132 (2623) नील लेश्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (2624) नीषढकुमारनी ढालो >> B.6 - P. 378 (2625) नीसरण >> B.79 - P. 192 (2626) नीहरण >> B.79 - P. 192 (2627) नीहारचारण >> B.98 - P. 338 / B.82 - P. 317 (2628) नुत्तरं >> B.46 - P. 288 (2629) नुहत्रणइ >> B.46 - P. 289 (2630) नेमनाथ जिनालय, लाला टाकोरनी पोळ, रांदेर, सुरत >> B.61 - P. 178 (2631) नेमिचरित्रनेमिस्तवन >> B.73 - P. 520 (2632) नेमिनाथ जिनालय (उपरना माळे), गोदडनो पाडो, पाटण >> B.53 - P. 79 (2633) नेमिनाथ समशरण विधि >> B.74 - P. 349 (2634) नैगम और व्यवहारनय की अपेक्षा से लोक में आनुपूर्वीद्रव्य आदि की स्पर्शना >> B.96 - P. 31 (2635) नैगम और व्यवहारनय की अपेक्षा से लोक में क्षेत्रानुपूर्वी आदि द्रव्यों का अस्तित्व >> B.96 - P. 29 (2636) नैरयिक का मनुष्य लोक में अनागमन के चार कारण >> B.93 - P. 518 (2637) नैरयिकों का प्रतिसमय अपहरण करने पर भी अनपहरणत्व का प्ररूपण >> B.93 - P. 756 (2638) नोइन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिकी >> B.79 - P. 195 (2639) नोइन्द्रियप्रणिधि >> B.98 - P. 349 (2640) नोकषायवशार्तमरण >> B.98 - P. 350 (2641) नोसंज्ञाकरण >> B.98 - P. 350 (2642) नौकारुप चर्मरत्न द्वारा ससैन्य सुसेण-सेनापति के साथ भरत का सिन्धु नदी पार करना >> B.95 - P. 121 (2643) न्यायसंग्रह (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जिनशासन आराधना ट्रस्ट, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 88 (2644) न्यासापहरण >> B.98 - P. 352 (2645) नरण - ४ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2646) नरणदास - २ >> B.50 - P. 220, 220, 220 (2647) पंगुरण >> B.43 - P. 481 (2648) पंगुरण >> B.43 - P. 481 (2649) पंच संधि व्याकरण बालावबोध >> B.75 - P. 400 (2650) पंचकारण स्तवक >> B.4 - P. 13 (2651) पंचकारण स्तवन >> B.4 - P. 13, 13, 61, 13, 13 (2652) पंचनिर्ग्रन्थी बालावबोध >> B.1 - P. 116 (2653) पंचनिर्ग्रन्थीबालावबोध >> B.73 - P. 605 (2654) पंचप्रतिक्रमणसूत्रमां केटलाक विचारणीय पाठो, पत्रचर्चा - श्रीमुक्तिचन्द्र-मुनिचन्द्रसूरिजी >> B.159 - P. 84 (2655) पंचप्रतिक्रमणसूत्रमां केटलाक विचारणीय पाठो, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 41 (2656) पंचमुष्टिलोच करना >> B.95 - P. 70 (2657) पंचवरण स्तवन >> B.3 - P. 158 (2658) पंचाशकप्रकरण - 1 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - अरिहंत आराधक ट्रस्ट, शुद्धिकार - शीलचन्द्रविजय >> B.160 - P. 99 (2659) पंचाशकप्रकरण - 2 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - अरिहंत आराधक ट्रस्ट, शुद्धिकार - शीलचन्द्रविजय >> B.160 - P. 101 (2660) पंचाशकप्रकरण - गुजराती भावानुवाद - 1 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - अरिहंत आराधक ट्रस्ट, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.160 - P. 99 (2661) पंचाशकप्रकरण - गुजराती भावानुवाद - 2 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - अरिहंत आराधक ट्रस्ट, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.160 - P. 101 (2662) पंचासवपरिणया >> B.79 - P. 197 (2663) पंचीकरण >> B.50 - P. 244 (2664) पंडियपंडियमरण >> B.79 - P. 198 (2665) पंडियमरण >> B.79 - P. 198 (2666) पंडुरपडपाउरण >> B.79 - P. 198 (2667) पंथक अणगार को सेवा के लिए रखकर शैलक शिष्यों का विहार करना >> B.95 - P. 45 (2668) पंथकरण >> B.79 - P. 199 (2669) पउमचरियमां जाणवा मणेल केटलीक विशेष वात - 2, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.155 - P. 75 / B.158 - P. 98 (2670) पओगकरण >> B.79 - P. 204 (2671) पओगपरिणया >> B.79 - P. 204 (2672) पकरण >> B.79 - P. 204 (2673) पकरणेयसुत्तं >> B.79 - P. 204 (2674) पकामनिकरण >> B.79 - P. 204 (2675) पक्षमशृंगड >> B.85 - P. 34 (2676) पगतोउदीरणा >> B.79 - P. 206 (2677) पगरण >> B.46 - P. 293 (2678) पगरण >> B.79 - P. 207 (2679) पच्चक्खाणावरण >> B.79 - P. 209 (2680) पच्चयकरण >> B.79 - P. 210 (2681) पच्चारण >> B.43 - P. 262 (2682) पच्चासूरण >> B.79 - P. 210 (2683) पच्चकारण स्तवन >> B.74 - P. 476 (2684) पच्चवरण स्तवन >> B.74 - P. 270 (2685) पच्चाख्यान चौपइ अथवा कथा-कल्लोल पच्चकारण रास >> B.74 - P. 388 (2686) पच्चाङ्ग प्रणिपात मुद्रा >> B.82 - P. 31 (2687) पच्चाङ्गप्रणिपात >> B.60 - P. 165 (2688) पच्चीकरणम् >> B.48 - P. 9 (2689) पटांतरं >> B.46 - P. 295 (2690) पडगआहरणं >> B.79 - P. 216 (2691) पडिअरण >> B.79 - P. 217 (2692) पडिजागरण >> B.79 - P. 219 (2693) पडियरणा >> B.79 - P. 222 (2694) पडियारणा >> B.79 - P. 222 (2695) पडीगरणउं >> B.46 - P. 297 (2696) पडुच्चकरणं >> B.79 - P. 225 (2697) पढमसमोसरण >> B.79 - P. 227 (2698) पण्डित मरण >> B.60 - P. 166 (2699) पण्डितमरण >> B.42 - P. 209 / B.98 - P. 355 (2700) पण्डु राजा ने वासुदेव आदि को निमन्त्रण दिया >> B.95 - P. 194 (2701) पण्हावागरण >> B.85 - P. 27 (2702) पण्हावागरणदसा >> B.85 - P. 27 (2703) पतित या विस्मृत उपकरण की एषणा >> B.90 - P. 718 (2704) पत्थरं >> B.46 - P. 299 (2705) पत्रचारण >> B.98 - P. 356 / B.60 - P. 166 (2706) पत्रों का आहार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 609 (2707) पथरणउं >> B.46 - P. 299 (2708) पदमार्गादि निर्माण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 274, 276 (2709) पदश्रुतज्ञानावरणीय कर्म >> B.98 - P. 358 (2710)

पदसमासज्ञानावरणीय कर्म >> B.98 - P. 358 (2711) पदानुसारिणी बुद्धि >> B.134 - P. 551 / B.60 - P. 166 (2712) पदानुसारिणी-ऋद्धि >> B.42 - P. 209 (2713) पद्म लेख्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (2714) पद्मनाभ का श्रीकृष्ण का शरण स्वीकार करना >> B.95 - P. 202 (2715) पद्मनाभ के लिये द्रौपदी का देवता ने अपहरण किया >> B.95 - P. 196 (2716) पद्मावती (धरनेंद्र) >> B.44 - P. 329 (2717) पयरण >> B.79 - P. 242 / B.43 - P. 271, 271, 271, 271 (2718) पयोगपरिणता >> B.79 - P. 243 (2719) पयोगविससापरिणय >> B.79 - P. 243 (2720) परंपरगति द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (2721) परंपरचारित्र द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (2722) परकडपरनिट्टिय >> B.79 - P. 244 (2723) परकृतसंहरण >> B.98 - P. 360 (2724) परचूरणि >> B.46 - P. 302 (2725) परणण >> B.46 - P. 302 (2726) परणन >> B.46 - P. 302 (2727) परणाल >> B.46 - P. 302 (2728) परणालियां >> B.46 - P. 302 (2729) परणी >> B.46 - P. 66 (2730) परणेवइ >> B.46 - P. 302 (2731) परनाल >> B.46 - P. 303 (2732) परनालि >> B.46 - P. 303 (2733) परनाली >> B.46 - P. 303 (2734) परनालीउ >> B.46 - P. 303 (2735) परनिंदा >> B.49 - P. 99 (2736) परनिंदा चोपाई >> B.1 - P. 490, 490 (2737) परनिंदाचौपाइ >> B.73 - P. 568 (2738) परनिन्दा >> B.69 - P. 184 / B.98 - P. 361 (2739) परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्त >> B.79 - P. 245 (2740) परपरितापकारिणी क्रिया >> B.98 - P. 361 (2741) परप्रणेय >> B.98 - P. 361 (2742) परमाणु कारण >> B.49 - P. 99 (2743) परमात्माना कल्याणक-समये देवोनुं आगमन, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्घन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 84 (2744) परमात्माना नामकरण अंगे एक वात, लेखक - भाग्येशविजयसूरिजी >> B.162 - P. 67 (2745) परमात्माना पूजा श्रावकोए खेसथी करवी जोईए के रूमालथी ?, पत्रचर्चा - निर्घन्थचन्द्रविजय >> B.160 - P. 66 (2746) परमानन्ददोग्रन्थिकप्राभृत >> B.98 - P. 364 (2747) परम्परोपपन्नक चौबीसदंडकों में चार समवसरणादि का प्ररूपण >> B.93 - P. 244 (2748) परविवाहकरण >> B.42 - P. 215 / B.79 - P. 247 / B.98 - P. 368 / B.60 - P. 169 / B.97 - P. 91 / B.82 - P. 138 (2749) परव्याकरण >> B.60 - P. 169 (2750) परस्पर चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 255, 257 (2751) परस्पर व्रण की चिकित्सा के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 255, 257 (2752) परानन्दकारणम् >> B.65 - P. 68 (2753) परार्थकरण >> B.98 - P. 371 (2754) परार्थकरणम् >> B.65 - P. 68 (2755) परि >> B.46 - P. 308 (2756) परिजा >> B.42 - P. 216 (2757) परिकरण >> B.79 - P. 250 (2758) परिग्रह के परिणाम >> B.134 - P. 400 (2759) परिचारणा >> B.60 - P. 170 (2760) परिचारिकाओं ने चिन्ता का कारण पूछा >> B.95 - P. 73 (2761) परिण >> B.43 - P. 274 (2762) परिणइ >> B.46 - P. 307 / B.79 - P. 252 (2763) परिणए >> B.79 - P. 252 (2764) परिणडिअ >> B.43 - P. 483 (2765) परिणत >> B.49 - P. 100 / B.79 - P. 252 / B.60 - P. 171 (2766) परिणतजिनवचना: >> B.65 - P. 69 (2767) परिणता >> B.79 - P. 252 (2768) परिणता: >> B.65 - P. 69 (2769) परिणताम्र >> B.119 - P. 177, 177 (2770) परिणद्ध >> B.79 - P. 252 (2771) परिणमति >> B.79 - P. 252 (2772) परिणमन >> B.49 - P. 100 (2773) परिणममाण >> B.79 - P. 253 (2774) परिणममाणंसि >> B.79 - P. 253 (2775) परिणमावीइ >> B.46 - P. 307 (2776) परिणमिज्जा >> B.79 - P. 253 (2777) परिणमिय >> B.79 - P. 253 (2778) परिणय >> B.42 - P. 216 / B.46 - P. 307, 307 / B.79 - P. 253 (2779) परिणयअंबग >> B.119 - P. 177, 177 (2780) परिणयण >> B.46 - P. 307 (2781) परिणयवए >> B.79 - P. 253 (2782) परिणयवय >> B.79 - P. 253 (2783) परिणयापरिणय >> B.79 - P. 253 (2784) परिणाम >> B.49 - P. 100 / B.69 - P. 141, 162 / B.79 - P. 253 / B.98 - P. 15, 377 / B.85 - P. 37 / B.60 - P. 171 / B.172 - P. 196 (2785) परिणाम (स्वभाव) >> B.172 - P. 198 (2786) परिणाम आदि के विशुद्धि >> B.135 - P. 252 (2787) परिणाम के पर्याय >> B.172 - P. 198 (2788) परिणाम के भेद >> B.172 - P. 198 (2789) परिणाम द्वार >> B.93 - P. 71, 93 (2790) परिणाम शक्ति >> B.49 - P. 100 / B.172 - P. 199 (2791) परिणाम-अनित्यता >> B.172 - P. 198 (2792) परिणाम: >> B.48 - P. 13 / B.65 - P. 69 (2793) परिणामअनित्यता >> B.60 - P. 171 (2794) परिणामक >> B.79 - P. 253 / B.60 - P. 171 (2795) परिणामक साधु >> B.98 - P. 378 (2796) परिणामकृत प्रत्याख्यान >> B.60 - P. 172 (2797) परिणामक्रिया >> B.42 - P. 216 (2798) परिणामगा >> B.79 - P. 253 (2799) परिणामणय >> B.79 - P. 253 (2800) परिणामत : आत्त पुद्गल >> B.98 - P. 378 (2801) परिणामनित्यता >> B.98 - P. 378 (2802) परिणामपयं >> B.79 - P. 253 (2803) परिणामप्रत्ययिक >> B.60 - P. 171 (2804) परिणामयोगस्थान >> B.98 - P. 378 (2805) परिणामविशुद्धप्रत्याख्यान >> B.98 - P. 378 (2806) परिणामि नित्यवाद >> B.49 - P. 100 (2807) परिणामिकारणं >> B.79 - P. 253 (2808) परिणामिणी >> B.79 - P. 253 (2809) परिणामित >> B.49 - P. 100 (2810) परिणामित्व >> B.134 - P. 194 (2811) परिणामिनित्यता >> B.60 - P. 171 (2812) परिणामिया >> B.79 - P. 253 (2813) परिणामी >> B.49 - P. 100 (2814) परिणामी कारण >> B.49 - P. 100 / B.69 - P. 140 (2815) परिणामी नित्य >> B.69 - P. 150 (2816) परिणामेइ >> B.79 - P. 253 (2817) परिणामेज्जमाणे >> B.79 - P. 253 (2818) परिणामों की विविधता : वीचि उपमाणं >> B.135 - P. 486 (2819) परिणाव >> B.43 - P. 546 (2820) परिणावइ >> B.46 - P. 307 (2821) परिणाह >> B.79 - P. 253 (2822) परिणिउ >> B.46 - P. 307 (2823) परिणिट्टय >> B.79 - P. 253, 253

(2824) परिणिति >> B.46 - P. 307 (2825) परिणिव्वाइ >> B.79 - P. 254 (2826) परिणिव्वाण >> B.79 - P. 254 (2827) परिणिव्वाणयत्तियं >> B.79 - P. 254 (2828) परिणिव्वाति >> B.79 - P. 254 (2829) परिणिव्वुय >> B.79 - P. 254 (2830) परिण्णत्ता >> B.79 - P. 254 (2831) परिण्णा >> B.79 - P. 254 (2832) परिण्णाय >> B.79 - P. 254 (2833) परिण्णी >> B.79 - P. 254 (2834) परितारण >> B.79 - P. 254 (2835) परिनिट्ठित >> B.79 - P. 255 (2836) परिनिट्ठिय >> B.79 - P. 255 (2837) परिनिय (परि + दृश्) >> B.43 - P. 546 (2838) परिनिर्वाण >> B.42 - P. 216 (2839) परिनिर्वाणकल्याणपूजा >> B.42 - P. 216 (2840) परिनिर्वाप्यवाचना >> B.79 - P. 255 / B.98 - P. 379 (2841) परिनिर्वृत >> B.60 - P. 171 (2842) परिनिवृत >> B.98 - P. 379 (2843) परिनिवृति >> B.98 - P. 379 (2844) परिनिव्वाइ >> B.79 - P. 255 (2845) परिनिव्वाइस्सति >> B.79 - P. 255 (2846) परिनिव्वाण >> B.79 - P. 255 (2847) परिनिव्वाणवत्तिय >> B.79 - P. 255 (2848) परिनिव्वाति >> B.79 - P. 255 (2849) परिनिव्वायति >> B.79 - P. 255 (2850) परिनिव्वुओ >> B.79 - P. 255 (2851) परिनिव्वुड >> B.79 - P. 256 (2852) परिनिव्वुडा >> B.79 - P. 256 (2853) परिनिष्क्रमण >> B.42 - P. 216 (2854) परिनिष्ठा >> B.48 - P. 14 (2855) परिन्न् >> B.79 - P. 256 (2856) परिन्न्चारि >> B.79 - P. 256 (2857) परिन्ना >> B.79 - P. 256 (2858) परिन्नाविवेग >> B.79 - P. 256 (2859) परिभोगपरिहरण >> B.79 - P. 257 (2860) परिमण्डलसण्ठाणपरिणया >> B.79 - P. 257 (2861) परियारण >> B.79 - P. 259 (2862) परियारणय >> B.79 - P. 259 (2863) परियारणा >> B.79 - P. 259 (2864) परियारणासदं >> B.79 - P. 259 (2865) परिवर्तमान परिणाम >> B.98 - P. 381 (2866) परिवारण >> B.79 - P. 260 (2867) परिवारणा >> B.79 - P. 260 (2868) परिविवाहकरण अतिचार >> B.69 - P. 217 (2869) परिशाटकरणं >> B.79 - P. 261 (2870) परिस्तरण >> B.46 - P. 308 (2871) परिहरण >> B.43 - P. 275 / B.134 - P. 432 / B.98 - P. 382 (2872) परिहरणं >> B.79 - P. 262 (2873) परिहरणदोष >> B.60 - P. 172 (2874) परिहरणदोस >> B.79 - P. 262 (2875) परिहरणया >> B.79 - P. 262 (2876) परिहरणा >> B.79 - P. 262 (2877) परिहरणीय शय्यातर का निर्णय >> B.90 - P. 619 (2878) परिहरणोवघाते >> B.79 - P. 262 (2879) परिहारकल्प स्वीकार करने से पूर्व >> B.135 - P. 338 (2880) परिहारविशुद्धि चारित्र उत्कृष्टथी 1000 पुरुष स्वीकारे, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 70 (2881) परिहारिणी >> B.43 - P. 275 (2882) परिहारी : आहारवितरण-विकृतिसेवन-अनुज्ञा >> B.135 - P. 334 (2883) परीषह सहन करने में 2 हेतु >> B.69 - P. 266 (2884) परीषह-पराजित को प्रेरणा >> B.135 - P. 32 (2885) परं >> B.46 - P. 309 (2886) परंस >> B.46 - P. 309 (2887) परुणा >> B.46 - P. 136, 309 (2888) परूण >> B.79 - P. 263 (2889) परोपरोधाकरण >> B.98 - P. 387 (2890) पर्यताराधना प्रकरण बालावबोध >> B.6 - P. 331 (2891) पर्यवजातलेश्य मरण >> B.60 - P. 174 (2892) पर्यायज्ञानावरणीय >> B.98 - P. 390 (2893) पर्यायसमासज्ञानावरणीय >> B.98 - P. 391 (2894) पवियारणा >> B.79 - P. 271 / B.85 - P. 39 (2895) पशु-पक्षी निवारण की मर्यादा >> B.135 - P. 254 (2896) पसारण >> B.79 - P. 274 (2897) पसिणवागरण >> B.79 - P. 275 (2898) पहरणं >> B.79 - P. 276 (2899) पहरणकोस >> B.79 - P. 276 (2900) पहरणि >> B.46 - P. 312 (2901) पहले ज्ञान, फिर आचरण >> B.135 - P. 275 (2902) पहारि >> B.46 - P. 312 (2903) पहिरण >> B.46 - P. 312 (2904) पहिरणउं >> B.46 - P. 312 (2905) पहीणजरमरण >> B.79 - P. 277 (2906) पहेरण >> B.46 - P. 313 (2907) पाँच महानदी पार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 504 (2908) पाँचव्रत (चरण 70) >> B.82 - P. 255 (2909) पांगरण >> B.46 - P. 324 (2910) पांगुरणउं >> B.46 - P. 324 (2911) पांच समितियों के उदाहरण >> B.134 - P. 672 (2912) पाउकरण >> B.79 - P. 278 (2913) पाउरण >> B.43 - P. 483 / B.79 - P. 278 (2914) पाउरणी >> B.43 - P. 280 (2915) पाओवगमणमरण >> B.79 - P. 279 (2916) पागरण >> B.46 - P. 316 (2917) पाजपिण्ड ग्रहण करने में दोष >> B.82 - P. 345 (2918) पाणज्जुंभक >> B.85 - P. 44 (2919) पात्र का वर्ण परिवर्तन करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 702 (2920) पात्र का स्वयं परिष्कार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 705 (2921) पात्र के लिए निवास करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 707 (2922) पात्र के विवर्ण आदि करने का निषेध >> B.90 - P. 702 (2923) पात्र को कोरने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 705 (2924) पात्र धारण विधि निषेध >> B.90 - P. 699 (2925) पात्र परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 704 (2926) पात्र प्रतिलेखन के बाद पात्र ग्रहण करने का विधान >> B.90 - P. 690 (2927) पात्र हेतु आधे योजन की मर्यादा भंग करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 692 (2928) पादपोपगमनमरण >> B.98 - P. 399 (2929) पाधरुं >> B.46 - P. 319 (2930) पानी ग्रहण करने के विधान और निषेध >> B.90 - P. 630 (2931) पानी बहने की नाली निर्माण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 274, 276 (2932) पापकर्मों के उदीरणादि के निमित्तों का प्ररूपण >> B.93 - P. 365 (2933) पापाचरण >> B.49 - P. 98 (2934) पायच्छित्तकरण >> B.79 - P. 285 (2935) पायसंहरण >> B.79 - P. 286 (2936) पायावरणा >> B.79 - P. 286 (2937) पारज्ज >> B.98 - P. 401 (2938) पारज्जी >> B.98 - P. 402 (2939) पारणक >> B.60 - P. 177 (2940) पारणय >> B.79 - P. 286 (2941) पारणा >> B.42 - P. 221 / B.49 - P. 99 / B.79 - P. 286 / B.60 - P. 177 (2942) पारणेत्त >> B.46 - P. 320 (2943) पारिणामकी बुद्धि >> B.69 - P. 33 (2944) पारिणामिक (परिपक्व) शिष्य के प्रकार >> B.135

- P. 5 (2945) पारिणामिक आदि शिष्यों की परीक्षा >> B.135 - P. 5 (2946) पारिणामिक भाव >> B.49 - P. 100 / B.98 - P. 403 / B.60 - P. 178 (2947) पारिणामिक भाव की परिभाषा >> B.134 - P. 485 (2948) पारिणामिक भाव के प्रकार >> B.134 - P. 485 (2949) पारिणामिक-भाव >> B.42 - P. 221 (2950) पारिणामिकत्व >> B.98 - P. 403 (2951) पारिणामिकभाव >> B.69 - P. 56 (2952) पारिणामिकभाव के भेद >> B.69 - P. 60 (2953) पारिणामिकी >> B.49 - P. 100 / B.98 - P. 404 (2954) पारिणामिकी बुद्धि >> B.60 - P. 178 (2955) पारिणामिकी बुद्धि की परिभाषा >> B.134 - P. 471 (2956) पारिणामिकीबुद्धि: >> B.65 - P. 70 (2957) पारिणामिय >> B.79 - P. 287 (2958) पारिणामिया >> B.79 - P. 287 (2959) पारिहारिक : मार्ग में रुकने के कारण >> B.135 - P. 336 (2960) पार्थिव धारणा >> B.49 - P. 101 (2961) पार्थिवी धारणा >> B.98 - P. 405 / B.60 - P. 178 (2962) पार्श्वचंद्र सूरिना 47 दोहा >> B.74 - P. 159 (2963) पार्श्वनाथपत्नीप्रभावतीहरण >> B.73 - P. 416 (2964) पार्श्वस्था (शिथिलाचारिणी) सुभद्रा श्रमणी का कथानक. >> B.95 - P. 228 (2965) पालटीकरण >> B.46 - P. 321 (2966) पावकम्मकरण >> B.79 - P. 289 (2967) पावरण >> B.79 - P. 290 (2968) पिंगल निर्ग्रन्थ >> B.44 - P. 334 (2969) पिंगल निर्ग्रन्थ ने लोकादि के सम्बन्ध में प्रश्न किये >> B.95 - P. 123 (2970) पिंजरण >> B.43 - P. 286 (2971) पिंडनिर्युक्ति - वृत्ति (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जिनशासन आराधना ट्रस्ट, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 87 (2972) पिंडारणी >> B.46 - P. 326 (2973) पिंडारं >> B.46 - P. 326 (2974) पिण्डविशुद्धि (करण 70) >> B.82 - P. 266 (2975) पिता का मरण और पुष्यनन्दि को राज्य >> B.95 - P. 493 (2976) पियकारिण >> B.79 - P. 297 (2977) पियकारिणी >> B.79 - P. 297 / B.85 - P. 54 (2978) पिहिरण >> B.46 - P. 326 (2979) पीआरं >> B.46 - P. 326 (2980) पीत तृण - मणियों का इष्टतर पीतवर्ण >> B.96 - P. 133 (2981) पीयारं >> B.46 - P. 327 (2982) पुक्खरणी >> B.79 - P. 302 (2983) पुक्खरिणी >> B.79 - P. 302 (2984) पुण्यकरणीयस्थापनागीत >> B.73 - P. 413 (2985) पुण्यार्थ स्थापित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 558 (2986) पुत्र का कूणिक नाम दिया और कूणिक का तारुण्य आदि >> B.95 - P. 429 (2987) पुत्र जन्म और देवदिन्न नामकरण >> B.95 - P. 439 (2988) पुत्रञ्जीवक >> B.119 - P. 192, 192 (2989) पुद्गल के परिणाम >> B.69 - P. 142 (2990) पुरच्चरण >> B.79 - P. 309 (2991) पुरण >> B.46 - P. 329 (2992) पुरन्दर >> B.42 - P. 225 / B.44 - P. 338, 339, 339 / B.85 - P. 71 (2993) पुरन्दर चौ. >> B.133 - P. 180 (2994) पुरन्दर चौपड़ >> B.74 - P. 353 (2995) पुरन्दरयशा >> B.44 - P. 340 / B.85 - P. 72 (2996) पुरन्दरविधानकथा >> B.73 - P. 380 (2997) पुरन्दरविहाणकहा >> B.73 - P. 118 (2998) पुरश्चरणम् >> B.48 - P. 19 (2999) पुरुष को मारने वाले की क्रियाओं का प्ररूपण >> B.93 - P. 175 (3000) पुरुषवेद में श्रेणि आरम्भ करने वाले की प्रक्रिया >> B.82 - P. 375 (3001) पुष्पावरणहकालसमय >> B.79 - P. 315 (3002) पुष्करणियों में दधिमुख पर्वत >> B.96 - P. 403 (3003) पुष्पकरण्डक >> B.42 - P. 228 (3004) पुष्पचारण >> B.42 - P. 228 / B.98 - P. 416 / B.60 - P. 182 / B.82 - P. 316 (3005) पुष्पमाला प्रकरण >> B.74 - P. 614 (3006) पुष्पवृन्तक >> B.111 - P. 65 (3007) पूज्य पुरुषों के आहार के ग्रहण करने की विधि-निषेध >> B.90 - P. 621 (3008) पूतिकर्म दोषयुक्त आहार - ग्रहण करने का परिणाम >> B.90 - P. 559 (3009) पूतिकर्म दोषयुक्त आहार करने का प्रायश्चित्त ग्रहण >> B.90 - P. 559 (3010) पूरण >> B.42 - P. 229 / B.43 - P. 293 / B.79 - P. 318 / B.85 - P. 78 (3011) पूरण कथा >> B.138 - P. 261 (3012) पूरण का चमरचंचा में असुरेन्द्र के रूप में उपपात >> B.95 - P. 497 (3013) पूरण की दानामा प्रव्रज्या >> B.95 - P. 496 (3014) पूरण की संलेखना >> B.95 - P. 497 (3015) पूरण तापस कथा >> B.141 - P. 105 (3016) पूरण बालतपस्वी का कथानक >> B.95 - P. 496 (3017) पूरणतापस >> B.79 - P. 318 (3018) पूरणी >> B.46 - P. 331 (3019) पूर्णिमागच्छ - प्रधानशाखा अपरनाम ढंढेरियाशाखा का संक्षिप्त इतिहास >> B.64 - P. 243 (3020) पूर्वक्रीडास्मरण वर्जन >> B.69 - P. 194 (3021) पूर्वरतानुस्मरण >> B.98 - P. 419 (3022) पूर्वरतानुस्मरण वर्जन >> B.49 - P. 110 (3023) पूर्वरतानुस्मरणवर्जन >> B.60 - P. 183 (3024) पूर्वश्रुतावरणीय >> B.98 - P. 420 (3025) पूर्वसमासावरणीयकर्म >> B.98 - P. 420 (3026) पृथ्वीकाय आदि के आरम्भ करने का प्रयाश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 250, 252 (3027) पृथ्वीकाय का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 227, 229 (3028) पृथ्वीकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 568 (3029) पृथ्वीकायिकादि जीवों की हिंसा के कारण >> B.93 - P. 252 (3030) पेरण >> B.43 - P. 295 (3031) पेरेड >> B.43 - P. 295 (3032) पेरेपेरना >> B.46 - P. 332 (3033) पेलुकरण >> B.43 - P. 296 (3034) पेसणपरिणाय >> B.79 - P. 321 (3035) पोक्खरणी >> B.79 - P. 322 (3036) पोट्टसरणी >> B.43 - P. 298 / B.79 - P. 323 (3037) पोट्टिला का दानशाला चालु करना >> B.95 - P. 214 (3038) पोट्टिला का वरण >> B.95 - P. 212 (3039) प्रकरण >> B.49 - P. 103 / B.79 - P. 327 (3040) प्रकरण रतनाकर >> B.133 - P. 103 (3041) प्रकरण समा जाति >> B.99 - P. 62 (3042) प्रकरण सूत्र >> B.60 - P. 185 (3043) प्रकरण-सम >> B.49 - P. 104 (3044) प्रकरणम् >> B.48 - P. 21 (3045) प्रकरणसम हेत्वाभास >> B.172 - P. 209 (3046) प्रकरणसमा जाति >> B.172 - P. 210 (3047) प्रकरणसमोहेत्वाभास: >> B.48 - P. 21 (3048) प्रकरणादि विद्या गर्भित स्तवन संग्रह >> B.74 - P. 326 (3049) प्रकार का संयम 17 (चरण 70) >> B.82 - P. 257 (3050) प्रकीर्णग्रन्थों के स्वाध्याय से विपुल निर्जरा >> B.135

- P. 658 (3051) प्रकृतिमरण >> B.99 - P. 64 (3052) प्रकृत्यन्तरनयनसंक्रम >> B.99 - P. 65 (3053) प्रक्रियाग्रन्थः >> B.48 - P. 22 (3054) प्रचलादर्शनावरण >> B.69 - P. 235 (3055) प्रचलाप्रचलादर्शनावरण >> B.69 - P. 235 (3056) प्रज्ञावशार्तमरण >> B.99 - P. 69 (3057) प्रणत >> B.42 - P. 234 (3058) प्रणम्य >> B.65 - P. 73 (3059) प्रणव >> B.42 - P. 234 (3060) प्रणाम के पाँच प्रकार >> B.82 - P. 37 (3061) प्रणामा प्रब्रज्या का विवरण >> B.95 - P. 61 (3062) प्रणाला >> B.79 - P. 327 (3063) प्रणालिका >> B.79 - P. 327 (3064) प्रणाली >> B.42 - P. 234 (3065) प्रणिताग्नि >> B.42 - P. 234 (3066) प्रणिधान >> B.49 - P. 105 / B.99 - P. 69 / B.60 - P. 187 / B.172 - P. 210 (3067) प्रणिधान के पर्याय >> B.172 - P. 210 (3068) प्रणिधान के भेद >> B.172 - P. 210 (3069) प्रणिधान त्रिक >> B.82 - P. 31 (3070) प्रणिधानं >> B.79 - P. 327 (3071) प्रणिधानम् >> B.65 - P. 73 (3072) प्रणिधानम् (पूर्व) >> B.65 - P. 73 (3073) प्रणिधानम् (प्रान्तं) >> B.65 - P. 73 (3074) प्रणिधानयोग >> B.99 - P. 69 (3075) प्रणिधानादयः >> B.65 - P. 73 (3076) प्रणिधान्या >> B.42 - P. 234 (3077) प्रणिधि >> B.42 - P. 234 / B.99 - P. 69 / B.60 - P. 187 (3078) प्रणिधिमाया >> B.99 - P. 69 (3079) प्रणिपत >> B.46 - P. 335 (3080) प्रणिपातमुद्रा >> B.99 - P. 69 (3081) प्रणिहितेन्द्रिय >> B.79 - P. 327 (3082) प्रणीत-रस >> B.49 - P. 105 (3083) प्रणीतआहारवित्तिसमितियोग >> B.60 - P. 187 (3084) प्रणीतआहारविवर्जन >> B.60 - P. 187 (3085) प्रणीतरस भोजन वर्जन >> B.69 - P. 194 (3086) प्रणीता >> B.46 - P. 335 (3087) प्रणीताहार >> B.82 - P. 260 (3088) प्रणेता >> B.42 - P. 234 (3089) प्रतिकमण के परिणाम >> B.134 - P. 436 (3090) प्रतिचरण >> B.134 - P. 432 (3091) प्रतिजागरणा (प्रवचन सारोद्धार द्वार 130) >> B.82 - P. 16 (3092) प्रतिपत्तिसमासावरणीयकर्म >> B.99 - P. 74 (3093) प्रतिपत्यावरणीयकर्म >> B.99 - P. 74, 74, 74 (3094) प्रतिमा (करण 70) >> B.82 - P. 307 (3095) प्रतिलेखन किये बिना शय्या पर शयन करने वाला पाप श्रमण होता है >> B.90 - P. 659 (3096) प्रतिलेखना (करण 70) >> B.82 - P. 312 (3097) प्रतिसरण >> B.49 - P. 107 (3098) प्रतिसारिणी >> B.60 - P. 189 (3099) प्रतिसेवकनिर्ग्रन्थः >> B.65 - P. 74 (3100) प्रत्यवे क्षितनिक्षेपाधिकरण >> B.97 - P. 104, 104 (3101) प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 453 (3102) प्रत्याख्यानावरण >> B.69 - P. 238 / B.99 - P. 88 (3103) प्रत्याख्यानावरण कर्म >> B.49 - P. 107 (3104) प्रत्याख्यानावरण कषाय >> B.49 - P. 107 / B.60 - P. 190 (3105) प्रत्याख्यानावरण क्रोध >> B.60 - P. 191 (3106) प्रत्याख्यानावरण मान >> B.60 - P. 191 (3107) प्रत्याख्यानावरण माया >> B.60 - P. 191 (3108) प्रत्याख्यानावरण लोभ >> B.60 - P. 191 (3109) प्रत्येक जीव के प्रदेश का परिणाम >> B.69 - P. 133 (3110) प्रत्येक समुद्रना पाणीनो स्वाद तेमज मत्स्यादिनुं प्रमाण >> B.56 - P. 163, 396 (3111) प्रत्येक-बुद्धबोधित द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 300 (3112) प्रत्येककाय संयुक्त आहारकरण प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 575 (3113) प्रत्येकशरीरनाम >> B.99 - P. 92 / B.60 - P. 192 (3114) प्रथमसमयनिर्ग्रन्थ >> B.60 - P. 192 (3115) प्रथमसमवसरण >> B.60 - P. 192 (3116) प्रदेशविपरिणामना >> B.99 - P. 96 (3117) प्रदेशावीचिकामरण >> B.99 - P. 97 (3118) प्रदेशी राजा का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना और रमणीय-अरमणीय होने के सम्बन्ध में वन खण्ड आदि के दृष्टान्त. >> B.95 - P. 284 (3119) प्रदेशों का उदाहरण सहित अनावाधत्व >> B.96 - P. 26 (3120) प्रदेशोदीरणा >> B.79 - P. 329 (3121) प्रन्हुत >> B.79 - P. 331 (3122) प्रभु मल्लिनाथे लोच कर्यो - चारमुष्टि के पांचमुष्टि ?, लेखक - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 25 (3123) प्रभु वीरनां बहेन अने पुत्रीनां नाम विशेष मत-मतांतरो, पत्रचर्चा - कुमुदचन्द्रविजय >> B.159 - P. 77 (3124) प्रभु वीरनां बहेन अने पुत्रीनां नाम विशेष मत-मतांतरो, लेखक - कुमुदचन्द्रविजय >> B.158 - P. 30 (3125) प्रभु वीरनुं निर्वाणनक्षत्र - स्वाति के उत्तराफाल्गुनी ?, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.146 - P. 9 (3126) प्रभुवीरना भवो अंगे केटलाक मत-मतांतरो, पत्रचर्चा - जिनांगदर्शनविजय >> B.158 - P. 91 (3127) प्रभुवीरना भवो अंगे केटलाक मत-मतांतरो, पत्रचर्चा - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.158 - P. 91 (3128) प्रभुवीरना भवो अंगे केटलाक मत-मतांतरो, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 100 / B.159 - P. 73, 74 / B.162 - P. 127 (3129) प्रभुवीरना भवो अंगे केटलाक मत-मतांतरो, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 24 (3130) प्रमादाचरण अनर्थदंड >> B.69 - P. 208 (3131) प्रयोगकरण >> B.134 - P. 178 / B.99 - P. 108 (3132) प्रयोगज परिणाम >> B.99 - P. 109 (3133) प्रयोगपरिणाम >> B.99 - P. 109 / B.60 - P. 195 (3134) प्रयोजनवश वैहायस-गृध्रपृष्ठमरण सम्मत >> B.135 - P. 22 (3135) प्रवचन आदि का विच्छेद : घंटाश्रृंगाल दृष्टांत >> B.135 - P. 118 (3136) प्रविचारणा >> B.85 - P. 39 (3137) प्रवृत्तिकारणानि >> B.48 - P. 32 (3138) प्रब्रज्या ग्रहण करने से पूर्व किये जाने वाले कार्य >> B.95 - P. 385 (3139) प्रब्रज्याग्रहण करने से सनाथत्व प्राप्त हुआ >> B.95 - P. 113 (3140) प्रशस्त करनोपशामना >> B.99 - P. 114 (3141) प्रशस्त निस्सरणतैजस >> B.99 - P. 115 (3142) प्रशस्त मरण >> B.134 - P. 526 (3143) प्रशस्त स्थिरीकरण >> B.99 - P. 116 (3144) प्रशस्तेन्द्रियप्रणिधि >> B.99 - P. 116 (3145) प्रशस्तोपबृंहण >> B.99 - P. 117 (3146) प्रश्न करने की विधि >> B.90 - P. 106, 106 (3147) प्रश्नव्याकरण >> B.42 - P. 239 / B.79 - P. 330 / B.134 - P. 5 / B.99 - P. 118 / B.60 - P. 197 (3148) प्रश्नव्याकरण सूत्र स्तबक >> B.5 - P. 385 (3149) प्रश्नव्याकरणदशाधर >> B.60 - P. 197 (3150) प्रश्नव्याकरणम् >> B.65 - P. 78 (3151) प्रश्नव्याकरणसूत्र बालावबोध >> B.1 - P. 304 / B.3 - P. 352

(3152) प्रश्नव्याकरण >> B.85 - P. 27 (3153) प्रश्नव्याकरणदशा >> B.85 - P. 27 (3154) प्रसारण >> B.48 - P. 33 (3155) प्रहरण >> B.42 - P. 240 (3156) प्रहरण >> B.79 - P. 331 (3157) प्राणवध करने वाले >> B.93 - P. 250 (3158) प्राणातिपात से बाल जीवों का पुनः पुनः जन्म मरण >> B.90 - P. 246, 248 (3159) प्राणातिपातविस्मरण >> B.60 - P. 198 (3160) प्रातिहारिक पात्र ग्रहण करने में माया करने का निषेध >> B.90 - P. 701 (3161) प्रातिहारिक वस्त्र ग्रहण करने में माया करने का निषेध >> B.90 - P. 684 (3162) प्रादुष्करण >> B.134 - P. 160 / B.99 - P. 124 / B.60 - P. 199 (3163) प्रादुष्करण दोष >> B.82 - P. 270 (3164) प्राभृतप्राभृतज्ञानावरणीय >> B.99 - P. 126 (3165) प्राभृतप्राभृतसमासावरणीय >> B.99 - P. 127 (3166) प्रायश्चित्त के परिणाम >> B.134 - P. 465 (3167) प्रायश्चित्त, कारण, परिकर्म >> B.135 - P. 639 (3168) प्रायश्चित्तकरण >> B.60 - P. 200 (3169) प्रायश्चित्तवाहक के प्रकार : कृतकरण आदि >> B.135 - P. 416 (3170) प्रायोगमनमरण >> B.99 - P. 129 (3171) प्रायोगमनमरण >> B.99 - P. 129 (3172) प्रायोगमनमरण >> B.60 - P. 200 (3173) प्रावरण >> B.79 - P. 331 / B.135 - P. 260 (3174) प्रियंकरनृप चोपाई >> B.3 - P. 224, 225, 225 (3175) प्रियकारिणी >> B.42 - P. 242 / B.85 - P. 54 (3176) प्रियग्रन्थ >> B.85 - P. 54 (3177) प्रीतिधरनृप चोपाई >> B.6 - P. 90 (3178) प्रेरणत्वम् >> B.48 - P. 36 (3179) प्रोषध विधि प्रकरण टीका >> B.74 - P. 175 (3180) फलचारण >> B.99 - P. 134 / B.60 - P. 201 (3181) फलचारणऋद्धि >> B.42 - P. 245 (3182) फलवृन्तका >> B.111 - P. 65 (3183) फिरणु >> B.46 - P. 343 (3184) फुडकरण >> B.80 - P. 757, 757, 757 (3185) फुसमाणगतिपरिणाम >> B.80 - P. 758, 758, 758 (3186) फूटरुं >> B.46 - P. 344 (3187) फूत्करण >> B.80 - P. 758, 758, 758 (3188) फेरण >> B.43 - P. 486 (3189) फोरण >> B.46 - P. 345 (3190) बंध अपसरण >> B.49 - P. 43 (3191) बंध के बाद स्कंध में स्पर्श का परिणाम (कोष्टक) >> B.69 - P. 158 (3192) बंध होने के बाद स्कंध में होने वाला स्पर्श का परिणाम >> B.69 - P. 158 (3193) बंधस्वामित्वनी अज्ञातकर्तृक अवचूरीमां केटलांक विचारणीय स्थानों, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.153 - P. 43 (3194) बगाईकरणु >> B.46 - P. 346 (3195) बज्ज्भक्तकरण >> B.80 - P. 762, 762, 762 (3196) बन्ध और मोक्ष का ज्ञाता अन्त करने वाला होता है >> B.93 - P. 239 (3197) बन्धनकरण >> B.99 - P. 139 (3198) बलमानवर्शातमरण >> B.99 - P. 141 (3199) बलय मरण >> B.49 - P. 43 (3200) बलवीर्यपरिणाम >> B.80 - P. 764, 764, 764 (3201) बलहरण >> B.43 - P. 308 / B.80 - P. 764, 764, 764 (3202) बलिकरण >> B.80 - P. 765, 765, 765 (3203) बलिचंचा राजधानिवासी असुरकुमार देवों ने इन्द्र होने के लिए प्रार्थना की और तामली का निदान न करना >> B.95 - P. 62 (3204) बलीन्द्रनी अग्रमहिणीओ >> B.141 - P. 79 (3205) बहिचारिणी >> B.80 - P. 766, 766, 766 (3206) बहिरङ्ग धर्मध्यान >> B.99 - P. 141 (3207) बहिरङ्गच्छेद >> B.99 - P. 141, 141 (3208) बहिरङ्गसाधनम् >> B.48 - P. 38 (3209) बहिस्ताद् आदानविस्मरण >> B.60 - P. 204 (3210) बहुधारिणी >> B.43 - P. 486 (3211) बहुपाउरण >> B.80 - P. 767, 767, 767 (3212) बहुमूल्य वाले पात्र ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 692 (3213) बहुश्रुत-गीतार्थ-चतुर्भंगी : गणधारण के अर्ह >> B.135 - P. 66 (3214) बहुश्रुतता के परिणाम >> B.134 - P. 467 (3215) बांध्योरूध्यो >> B.46 - P. 353 (3216) बाईस अभक्ष निवारण सज्जाय >> B.75 - P. 386 (3217) बादरनाम >> B.99 - P. 149 / B.60 - P. 205 (3218) बादरनिगोद >> B.46 - P. 351 / B.60 - P. 205 (3219) बादरपरिणामी स्कंध >> B.69 - P. 147 (3220) बाधसमानाधिकरण्यम् >> B.48 - P. 39 (3221) बारह पूर्णिमाओं में चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों की संख्या >> B.96 - P. 624 (3222) बाल मरण >> B.49 - P. 43 (3223) बाल, पंडित और बालपंडितमरण >> B.134 - P. 525 (3224) बाल-पण्डितमरण >> B.99 - P. 151 (3225) बालकों से स्नेह रखने वाली सुभद्रा निर्ग्रन्थी की विविध प्रकार की बालक्रीड़ाये >> B.95 - P. 230 (3226) बालपंडितमरण >> B.80 - P. 770, 770, 770 (3227) बालपण्डितमरण >> B.60 - P. 206 (3228) बालबालमरण >> B.99 - P. 152 (3229) बालमरण >> B.99 - P. 152 / B.60 - P. 206 / B.80 - P. 770, 770, 770 (3230) बालमरण के प्रकार >> B.135 - P. 459 (3231) बालावबोधप्रकरण >> B.73 - P. 112 (3232) बाळ परं >> B.46 - P. 352 (3233) बाहर गये हुए राजा के आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 749 (3234) बाहिरकरणालस >> B.80 - P. 771, 771, 771 (3235) बाहिरणियंसणी >> B.80 - P. 771, 771, 771 (3236) बाह्यरुं >> B.46 - P. 353 (3237) बाह्य उपकरण >> B.99 - P. 152 (3238) बाह्य कारण >> B.69 - P. 137 (3239) बाह्यग्रन्थ 10 >> B.82 - P. 398 (3240) बाह्यग्रन्थ के प्रकार >> B.134 - P. 400 (3241) बाह्यतपश्चरणाचार >> B.99 - P. 153 (3242) बीजवृन्तका >> B.111 - P. 84 (3243) बीयं समोसरण >> B.80 - P. 774, 774, 774 (3244) बुद्धिमत् कारण >> B.49 - P. 48 (3245) बृंद >> B.75 - P. 313 (3246) बृंहणत्वम् >> B.48 - P. 40 (3247) बृंहणीय >> B.80 - P. 776, 776, 776 (3248) बृंहणीया >> B.80 - P. 776, 776, 776 (3249) बृंहयित्वा >> B.80 - P. 776, 776, 776 (3250) बृंहये >> B.80 - P. 776, 776, 776 (3251) बृहत्कल्प-लघुभाष्यनी एक गाथाना तात्पर्य अंगे विचारणा, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.149 - P. 2 (3252) बोलकरण >> B.80 - P. 777, 777, 777 (3253) ब्रह्मचर्य की आराधना करने पर सभी महाव्रतों की आराधना हो जाती है >> B.90 - P. 319, 320 (3254) ब्रह्मचर्य के परिणाम >> B.134 - P. 476 (3255) ब्रह्मचर्य गुप्ति 9 (चरण 70) >> B.82 - P. 259 (3256) ब्रह्मचर्य-समाधि-स्थानों की उपेक्षा के परिणाम >> B.134 - P.

475 (3257) ब्रह्मचारिन् >> B.85 - P. 89, 91 (3258) ब्रह्मशृङ्ग >> B.85 - P. 92 (3259) भ. अरिष्टनेमि का समवसरण >> B.95 - P. 35 (3260) भ. अरिष्टनेमि के समीप अणीयस की प्रव्रज्या और शत्रुंजय पर्वत पर सिद्धी >> B.95 - P. 22 (3261) भ. पार्श्वनाथ के समीप सोमिलका श्रावक धर्म-ग्रहण करना >> B.95 - P. 243 (3262) भ. पार्श्वनाथ के समवसरण में गमन >> B.95 - P. 226 (3263) भ. मल्ली ने चिंता का कारण पूछा >> B.95 - P. 42 (3264) भ. महावीर का नालंदा की तन्तुशाला में विहरण >> B.95 - P. 395 (3265) भ. महावीर का राजगृह में समवसरण >> B.95 - P. 293, 376 (3266) भ. महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 79, 295, 304, 312, 328, 346, 348, 353, 354, 421, 466 (3267) भ. महावीर का समवसरण और गौतम का गौचरी जाना >> B.95 - P. 393 (3268) भ. महावीर का समवसरण और देव-स्थिति के सम्बन्ध में यथार्थ कथन >> B.95 - P. 131 (3269) भ. महावीर का समवसरण और सहालपुत्र का धर्म-श्रवण >> B.95 - P. 332 (3270) भ. महावीर की निश्वा में चमरेन्द्र का शकेन्द्र को अपमानित करने के लिए जाना >> B.95 - P. 499 (3271) भ. महावीर के उत्तर में "वरुण का कथानक" >> B.95 - P. 358 (3272) भ. महावीर के चतुर्थ मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे >> B.95 - P. 397 (3273) भ. महावीर के तीर्थ में अनाथी महा निर्यन्त्र >> B.95 - P. 112 (3274) भ. महावीर के तीर्थ में जिनपाल जिनरक्षित का उदाहरण >> B.95 - P. 140 (3275) भ. महावीर के तीर्थ में नन्दीफल का उदाहरण >> B.95 - P. 156 (3276) भ. महावीर के तीर्थ में भद्रनंदा आदि श्रमणों के कथानक >> B.95 - P. 107 (3277) भ. महावीर के तीर्थ में श्रेणिक और चेलना के अवलोकन से साधु-साध्वियों के निदान करने का प्रसंग >> B.95 - P. 421 (3278) भ. महावीर के तृतीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे >> B.95 - P. 396 (3279) भ. महावीर के द्वितीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे >> B.95 - P. 396 (3280) भ. महावीर के प्रथम मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे >> B.95 - P. 395 (3281) भ. महावीर के समवसरण में आनन्द का जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 295 (3282) भ. महावीर के समवसरण में ईशान देवेन्द्र ने नृत्य किया >> B.95 - P. 60 (3283) भ. महावीर के समवसरण में काली रानी का प्रश्न >> B.95 - P. 425 (3284) भ. महावीर के समवसरण में गौतम का जन्मान्ध पुरुष के सम्बन्ध में प्रश्न >> B.95 - P. 460 (3285) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने अभग्नसेन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 471 (3286) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने उम्बरदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 484 (3287) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने देवदत्ता के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 490 (3288) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने नन्दिवर्धन के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 481 (3289) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने बृहस्पतिदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 479 (3290) भ. महावीर के समवसरण में गौतम ने सूर्यदत्त के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 488 (3291) भ. महावीर के समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना >> B.95 - P. 330 (3292) भ. महावीर के समवसरण में दर्दुर देव ने नृत्यविधि की >> B.95 - P. 290 (3293) भ. महावीर के समवसरण में बहुपुत्रिका देवी की नृत्य-विधि >> B.95 - P. 228 (3294) भ. महावीर के समवसरण में शक्र के पूर्व भव की कथा >> B.95 - P. 476 (3295) भ. महावीर के समवसरण में शक्र की नृत्य विधि >> B.95 - P. 12 (3296) भ. महावीर के समवसरण में शिव के विभंगज्ञान के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर >> B.95 - P. 135 (3297) भ. महावीर के समवसरण में शुक्र महाग्रहदेव ने नृत्य विधि की >> B.95 - P. 243 (3298) भ. महावीर के समवसरण में श्रीदेवी की नृत्य विधि >> B.95 - P. 226 (3299) भ. महावीर के साथ विवाद करने में गोशालक का असामर्थ्य और उसका लौट जाना >> B.95 - P. 337 (3300) भ. महावीर ने शंख की हिलना न करने के लिए कहा >> B.95 - P. 356 (3301) भ. वर्धमान के समवसरण में ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र ने नृत्य किया >> B.95 - P. 49 (3302) भ. वर्धमान के समवसरण में माणिभद्र देव ने नृत्य किया >> B.95 - P. 50 (3303) भ. वर्धमान के समवसरण में सूर्य ने नृत्य किया >> B.95 - P. 50 (3304) भ.वीरने पारणुं करावनारा >> B.140 - P. 299 (3305) भंडमत्तोवगरण >> B.80 - P. 779, 779, 779 (3306) भंडोवगरण >> B.80 - P. 780, 780, 780 (3307) भक्त पान आदि के आदान-प्रदान करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 744 (3308) भक्तपरिज्ञा और इंगिनीमरण में अंतर >> B.135 - P. 24 (3309) भक्तप्रत्याख्यानमरण >> B.99 - P. 164 (3310) भक्तप्रत्याख्यान मरण >> B.60 - P. 210 (3311) भगवान का निदान करने का निषेध रूप उपदेश सुनकर साधु-साध्वियों का प्रायश्चित्तादि करना >> B.95 - P. 423 (3312) भगवान ने कामदेव के उपसर्ग का स्पष्टीकरण किया >> B.95 - P. 309 (3313) भगवान ने गौतम की शंका का निराकरण किया >> B.95 - P. 302 (3314) भगवान महावीर का मिथिला में समवसरण >> B.96 - P. 121 (3315) भगवान महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 317, 322, 342 (3316) भगवान् का समवसरण >> B.95 - P. 94 (3317) भगवान् महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 350 (3318) भक्तकरण >> B.80 - P. 783, 783, 783 (3319) भक्तपच्चक्खामरण >> B.80 - P. 783, 783, 783 (3320) भक्तपरिणा >> B.80 - P. 36, 36, 36, 36, 36, 36 (3321) भक्तपरिणा >> B.85 - P. 112 / B.80 - P. 783, 783, 783 (3322) भक्तपरिन्ना >> B.80 - P. 783, 783, 783 (3323) भद्रनंद संधि >> B.75 - P. 394 (3324) भद्रनंदा 'श्रमण' >> B.95 - P. 107 (3325) भद्रनंदा 'श्रमण' >> B.95 - P. 108 (3326) भद्रनंदा कुमार >> B.44 - P. 377, 377 (3327) भद्रनंदा-1 कथा >> B.138 - P. 329 (3328) भद्रनंदा-2 कथा >> B.138 - P. 331 (3329) भद्रनन्दी >> B.85 - P. 114 (3330) भद्रशाल वन में सोलह पुष्करिणियाँ >> B.96 - P. 241 (3331) भरणी >> B.42 - P. 256 / B.46 - P. 362 / B.85 - P. 121 / B.80 - P. 787, 787 (3332) भरत का तिमिसगुफाधिप-कृतमालदेव द्वारा अर्पित भेंट ग्रहण करना >> B.95 - P. 121 (3333) भरत

का प्रभास तीर्थदेव पर विजय प्राप्त करना >> B.95 - P. 120 (3334) भरत का वैताढ्यगिरिकुमार देवकृत भेंट ग्रहण करना >> B.95 - P. 121 (3335) भरत के अष्टम भक्त का पारणा और मागधतीर्थाधिपदेव का प्रसन्न होकर अष्टाह्निक महोत्सव का आदेश देना >> B.95 - P. 118 (3336) भरत द्वारा चलाये हुए बाण का मागधतीर्थाधिपति देव के भवन में गिरना >> B.95 - P. 117 (3337) भरतक्षेत्रना मध्यखंडनी विशेष जाणकारी >> B.56 - P. 79, 376 (3338) भरनित्थरणसमत्थो >> B.80 - P. 787, 787 (3339) भरुकच्छाहरणी >> B.80 - P. 788, 788 (3340) भरुसे >> B.46 - P. 362 (3341) भव निर्गन्थत्व (प्रवचन सारोद्धार द्वार 102) >> B.82 - P. 15 (3342) भव-मरण >> B.99 - P. 169 (3343) भवधारण >> B.42 - P. 256 (3344) भवधारणज्जं >> B.80 - P. 789, 789 (3345) भवधारणज्जा >> B.80 - P. 789, 789 (3346) भवधारणीय अनुयोगद्वार >> B.99 - P. 168 (3347) भवधारणीय कर्म >> B.60 - P. 211 (3348) भवधारणीय शरीर >> B.60 - P. 212 (3349) भवनवासी और कल्पोपपन्नक वैमानिकों के त्रायस्त्रिंशक देवों का प्ररूपण >> B.93 - P. 650 (3350) भवमरण >> B.80 - P. 789, 789 (3351) भवावीचिमरण >> B.80 - P. 790, 790 (3352) भव्य-अभव्य और ग्रन्थिभेद >> B.135 - P. 597 (3353) भव्यत्व और पारिणामिक भाव >> B.134 - P. 477 (3354) भव्यशरीरनोआगमद्रव्यश्रुत >> B.99 - P. 173 (3355) भव्यशरीरनोआगमद्रव्यानुपूर्वी >> B.99 - P. 173 (3356) भारणि >> B.46 - P. 366 (3357) भारिग >> B.46 - P. 366 (3358) भारुंडपक्षी >> B.111 - P. 67 (3359) भारुंडपक्षी >> B.111 - P. 67 (3360) भाव (परिणाम) के पर्याय >> B.172 - P. 239 (3361) भाव अधिकरण >> B.49 - P. 45 (3362) भाव अधिकरण (कलह) के निर्वचन >> B.135 - P. 13 (3363) भाव करुणा >> B.69 - P. 197 (3364) भाव लिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (3365) भाव-स्तेन : गोविंदार्य आदि उदाहरण >> B.135 - P. 302 (3366) भावकरण >> B.134 - P. 178 / B.99 - P. 174 (3367) भावचरण >> B.99 - P. 175 (3368) भावचौर्य के प्रकार और परिणाम >> B.134 - P. 531 (3369) भावना (करण 70) >> B.82 - P. 301 (3370) भावनासंधिप्रकरण >> B.73 - P. 170 (3371) भावनिक्षेपानी उपयोगिता, समाधान - शीलचन्द्र-निर्गन्थचन्द्रविजय >> B.161 - P. 97 (3372) भावपरिणाम >> B.99 - P. 178 (3373) भावप्रकरण टबार्थ >> B.5 - P. 393 (3374) भावशत त्रिंशिका >> B.74 - P. 533 (3375) भावषट्त्रिंशिका पर बालावबोध >> B.6 - P. 345 (3376) भावापरिणत >> B.99 - P. 190 (3377) भावारिवारणबालावबोध >> B.73 - P. 605 (3378) भिक्षाचरी में माया करने का निषेध >> B.90 - P. 550 (3379) भिक्षु को न रति करनी चाहिए और न अरति करनी चाहिए >> B.90 - P. 445 (3380) भिखारियों के लिए स्थापित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 558 (3381) भिन्न पात्रने सांधवानी विधि, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.150 - P. 11 (3382) भिन्नग्रन्थि: >> B.65 - P. 86 (3383) भिरिड >> B.43 - P. 319 (3384) भीम के मरने के बाद गोत्रास को कूटग्राह-पद >> B.95 - P. 468 (3385) भीमारण्य >> B.42 - P. 262 (3386) भुक्त भोगों के स्मरण का निषेध >> B.90 - P. 328, 329 (3387) भुजाकार उदीरणा >> B.99 - P. 200 (3388) भुरुंड >> B.43 - P. 552 (3389) भुरुंडिया >> B.43 - P. 320 (3390) भूता निर्गन्थी का शरीर बाकुशिकत्व. (सदोष चरित्र) >> B.95 - P. 227 (3391) भूतारण्यक >> B.42 - P. 263 (3392) भूतृण >> B.119 - P. 220, 220, 220, 220 (3393) भृंग >> B.111 - P. 67, 68 (3394) भृंगनिभा >> B.42 - P. 264 (3395) भृंगराक्षस >> B.42 - P. 264 (3396) भृंगली >> B.46 - P. 371 (3397) भृंगा >> B.42 - P. 264 (3398) भृंगार >> B.42 - P. 264 / B.46 - P. 371 (3399) भृंगारक >> B.111 - P. 68 (3400) भृंगारिण >> B.111 - P. 68 (3401) भृंगालिनी >> B.46 - P. 371 (3402) भृंगु >> B.42 - P. 264 (3403) भृङ्गारमुद्रा >> B.99 - P. 202 (3404) भेद का कारण >> B.134 - P. 604 (3405) भेरुंड >> B.43 - P. 321 (3406) भेरुण्ड >> B.42 - P. 264 (3407) भैरु (शाह) >> B.50 - P. 288 (3408) भोगवति के उदाहरण से महाव्रत दूषित करने के फल का निर्देश >> B.95 - P. 453 (3409) भोगवति को घर के अन्दर के कार्य करने का आदेश दिया >> B.95 - P. 453 (3410) मंडितचोरनी कथा >> B.141 - P. 165 (3411) मन-धारण >> B.46 - P. 387 (3412) मकरनिकेतन >> B.46 - P. 374 (3413) मगधा-सारनलका >> B.42 - P. 267 (3414) मगसिरनखत्र >> B.46 - P. 375 (3415) मणिककुमरनी चोपाई >> B.4 - P. 266 (3416) मतवारणउ >> B.46 - P. 377 (3417) मति ज्ञानावरण कर्म >> B.49 - P. 86 (3418) मतिज्ञानावरण >> B.42 - P. 269 / B.99 - P. 208 (3419) मत्स्योदरनरेन्द्रचौपाई >> B.73 - P. 521 (3420) मदन नरिन्द्र चरित्र >> B.74 - P. 217 (3421) मदनकुमारनो रास >> B.5 - P. 288 (3422) मधुरतृण >> B.119 - P. 227, 227 (3423) मध्यम परिणाम >> B.49 - P. 83 (3424) मन को वश में करने का फल >> B.90 - P. 733 (3425) मन दुष्प्रणिधान >> B.82 - P. 145 (3426) मन पर्ययज्ञाना वरण >> B.49 - P. 84 (3427) मन समाधारणा का फल >> B.90 - P. 733 (3428) मन-वचन-शरीर संयम के परिणाम >> B.134 - P. 659 (3429) मन : पर्ययज्ञानावरण >> B.99 - P. 218 (3430) मन : पर्ययज्ञानावरणीय >> B.99 - P. 218 (3431) मन : प्रणिधान >> B.99 - P. 219 (3432) मन : पर्यायज्ञानावरण >> B.99 - P. 219 (3433) मन : समाधारणा >> B.60 - P. 222 (3434) मन:पर्यवज्ञाननु क्षेत्र, लेखक - निर्गन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 66 (3435) मन:पर्यवज्ञानावरण >> B.60 - P. 221 (3436) मन:पर्याय में दर्शन की अवधारणा, लेखक - गोयमचन्द्र-निर्गन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 10 (3437) मन:सुप्रणिधान >> B.60 - P. 222 (3438) मन:स्तम्भनकारिणी >> B.42 - P. 274 (3439) मनपरिणामों की विचित्रता >> B.135 - P. 459 (3440) मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, हाथीवाळा देरासरनी गलीमां, सुरत >> B.61 - P. 82

(3441) मनो-दुष्प्रणिधान >> B.49 - P. 85 (3442) मनोगुप्ति के परिणाम >> B.134 - P. 247 (3443) मनोज्ञ और अमनोज्ञ काम भोगों में राग-द्वेष का नियंत्रण करना चाहिए >> B.90 - P. 447 (3444) मनोदुष्प्रणिधान >> B.99 - P. 222 / B.60 - P. 222 (3445) मनोदुष्प्रणिधानम् >> B.65 - P. 88 (3446) मनोयोग दुष्प्रणिधान अतिचार >> B.69 - P. 222 (3447) मनोयोग-दुष्प्रणिधान >> B.42 - P. 275 (3448) मन्दारुणारण्य >> B.42 - P. 278 (3449) ममत्वपरिणामः >> B.65 - P. 89 (3450) मयूरी के अण्डे का उदाहरण >> B.95 - P. 444 (3451) मरकटतंतुचारण >> B.82 - P. 317 (3452) मरण >> B.49 - P. 85 / B.134 - P. 523 / B.135 - P. 459 / B.99 - P. 225 / B.60 - P. 223 (3453) मरण 17 (प्रवचन सारोद्धार द्वार 157) >> B.82 - P. 17 (3454) मरण : काल, अंतर आदि >> B.134 - P. 527 (3455) मरण आशंसा >> B.82 - P. 116 (3456) मरण आशंसा अतिचार >> B.69 - P. 224 (3457) मरण और गति >> B.135 - P. 461 (3458) मरण कितनी बार ? >> B.134 - P. 527 (3459) मरण के दो प्रकार >> B.134 - P. 523 (3460) मरण के सतरह प्रकार >> B.134 - P. 524 (3461) मरण लगि >> B.46 - P. 380 (3462) मरण-च्यवन : आयुक्षय... >> B.135 - P. 459 (3463) मरणकाल प्ररूपणा >> B.96 - P. 695 (3464) मरणभक्ति >> B.60 - P. 223 (3465) मरणभय >> B.99 - P. 225 / B.60 - P. 223 (3466) मरणम् >> B.48 - P. 48 / B.65 - P. 89 (3467) मरणविभक्ति >> B.85 - P. 154 (3468) मरणविभक्ति >> B.85 - P. 154 (3469) मरणविशोधि >> B.85 - P. 154 (3470) मरणविसोहि >> B.85 - P. 154 (3471) मरणसमाधि >> B.85 - P. 154 (3472) मरणसमाहि >> B.85 - P. 154 (3473) मरणाशंसा >> B.49 - P. 85 (3474) मरणाशंसा >> B.42 - P. 279 / B.99 - P. 226 (3475) मरणाशंसाप्रयोग >> B.60 - P. 224 (3476) मरिचग >> B.43 - P. 331 (3477) मरुंड >> B.85 - P. 156 (3478) मरुण्ड >> B.85 - P. 222 (3479) मरुदेवा माताने उच्चगोत्रनो बंध केवी रीते ?, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.162 - P. 47 (3480) मरुटतन्तुचारण >> B.99 - P. 226 / B.60 - P. 224 (3481) मल मूत्र की प्रबल बाधा होने पर करने की विधि >> B.90 - P. 721 (3482) मलधारण >> B.99 - P. 226 (3483) मल्लिप्रभुए केटला साथे दीक्षा लीधी ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्यन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 98 (3484) महबल आदि का विविध तपाचरण >> B.95 - P. 27 (3485) महबल का नामकरण और अन्य संस्कार >> B.95 - P. 8 (3486) महबल ने प्रव्रज्या ग्रहण करने की इच्छा प्रगट की >> B.95 - P. 11 (3487) महाकारण >> B.46 - P. 383 (3488) महाकारुणिक >> B.42 - P. 282 (3489) महाक्रन्द >> B.85 - P. 166 (3490) महाक्रन्दित >> B.85 - P. 166 (3491) महानदी पार गमन विधि-निषेध के पाँच कारण >> B.90 - P. 503 (3492) महानदी-संतरण की सीमा >> B.135 - P. 325 (3493) महानिर्यन्थीय >> B.85 - P. 172 (3494) महापद्म नामकरण >> B.95 - P. 89 (3495) महापरिणाम >> B.85 - P. 177 (3496) महाप्रकरणम् >> B.48 - P. 48 (3497) महारुख >> B.46 - P. 383 (3498) महारुंद >> B.43 - P. 490 (3499) महावीर का अभिनिष्करण >> B.135 - P. 285 (3500) महावीर का गर्भ-संहरण >> B.135 - P. 282 (3501) महावीर का गर्भहरण >> B.134 - P. 325 (3502) महावीर नुं पारणुं (षट्पर्वी महिमाधिकार गर्भित) >> B.133 - P. 32 (3503) महावीर पारणा >> B.74 - P. 353 (3504) महावीर स्वामी जिनालय, धनासुधारनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 142 (3505) महावीर स्वामी जिनालय, रामजी मंदिरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 133 (3506) महावीर स्वामी जिनालय, सोदागरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 103 (3507) महावीरना 27 भवनं स्तवन >> B.133 - P. 220 (3508) महावीरना पंचकल्याणकना पांच वधावा >> B.6 - P. 194 (3509) महावीरना पंचकल्याणकना पांच वधावा >> B.6 - P. 194 (3510) महाव्रतों की स्थिरता के लिए अन्य विचारणा >> B.69 - P. 197 (3511) महाशतक का गृहीधर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 342 (3512) महाशतक का गौतम को वंदन करना >> B.95 - P. 346 (3513) महाशतक का प्रायश्चित्त करना >> B.95 - P. 347 (3514) महाशतक का समवसरण में जाना और धर्मशरण करना >> B.95 - P. 342 (3515) महाशतक का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 347 (3516) महासमवसरणनो कयो अर्थ ?, जिज्ञासा - वंदनरुचिविजय >> B.161 - P. 86 (3517) महिषीना कुवरनुं >> B.46 - P. 384 (3518) महेन्द्रनगर >> B.42 - P. 292 (3519) मांग-मांगकर याचना करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 707 (3520) माकंदी-पुत्रों का शैलक यक्ष के पृष्ठ पर आरोहण करना >> B.95 - P. 145 (3521) माता-पिता के मरने के बाद उम्बरदत्त को घर से निकाल दिया गया >> B.95 - P. 487 (3522) माता-पिताओं ने प्रव्रज्या ग्रहण करने की अनुमति दी >> B.95 - P. 385 (3523) माता-पिताओं ने प्रव्रज्या ग्रहण करने से रोका और जमाली ने प्रव्रज्या ग्रहण करने का समर्थन किया >> B.95 - P. 383 (3524) माथासरुं >> B.46 - P. 389 (3525) मानस असमीक्ष्याधिकरण >> B.99 - P. 240 (3526) मानसा समीक्ष्याधिकरण >> B.99 - P. 240 (3527) मामेरुं >> B.50 - P. 311 (3528) मामेरुं - २ >> B.50 - P. 311, 311, 311 (3529) मामेरुं - ३ >> B.50 - P. 311, 311, 311 (3530) मायाशल्य मरण >> B.99 - P. 243 (3531) मारण >> B.42 - P. 296 / B.49 - P. 85 / B.99 - P. 243 (3532) मारणसमुद्घात >> B.99 - P. 243 (3533) मारणहार >> B.46 - P. 390 (3534) मारणांतिक संलेखना >> B.49 - P. 85 (3535) मारणांतिक-वेदना-अधिसहन योगसंग्रह >> B.134 - P. 540 (3536) मारणान्तिक आराधना >> B.60 - P. 230 (3537) मारणान्तिक उदय >> B.60 - P. 230 (3538) मारणान्तिक समुद्घात >> B.60 - P. 230 (3539) मारणान्तिकसमुद्घात >> B.99 - P. 243 (3540) मारणान्तिकातिसहनता >> B.99 - P. 243 (3541) मारणान्तिकी संलेखना >> B.99 - P. 243 (3542) मारणी >> B.46 - P. 390 (3543) मारुणी >> B.46 -

P. 391 (3544) मारुणि >> B.46 - P. 391 (3545) मारुतचारण >> B.99 - P. 243 / B.60 - P. 230 (3546) मारुती धारणा >> B.60 - P. 230 (3547) मार्गादि में वस्त्र की याचना करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 688 (3548) मार्गानुसारिणी >> B.65 - P. 91 (3549) माषों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा >> B.95 - P. 41 (3550) मित्रनन्दी >> B.42 - P. 298 / B.85 - P. 213 (3551) मिथ्यात्व अज्ञान अनाचरण >> B.90 - P. 164, 164 (3552) मीराकरण >> B.43 - P. 337 (3553) मुख आदि से वीणा जैसी आकृति करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 460 (3554) मुख्यसामानाधिकरण्यम् >> B.48 - P. 54 (3555) मुनि श्रीजंबूविजयजी संपादित पञ्चसूत्रकम् ना बे पाठ विशेष विचारणा, लेखक - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 46 (3556) मुरुंड >> B.141 - P. 246 / B.85 - P. 222 (3557) मुरुंड कथा >> B.140 - P. 290 (3558) मुरुंडी >> B.43 - P. 340, 491 (3559) मुरुंब >> B.43 - P. 340 (3560) मुरुण्ड >> B.85 - P. 156 (3561) मुसमूरण >> B.43 - P. 491 / B.46 - P. 398 (3562) मुसुमूरण >> B.43 - P. 491 (3563) मुसुमूरणा >> B.43 - P. 340 (3564) मूरण >> B.43 - P. 341 (3565) मूल-उत्तरकरण : अविशोधिकोटि-विशोधिकोटि >> B.135 - P. 548 (3566) मूलकरण >> B.99 - P. 263 (3567) मूलकरणकृति >> B.99 - P. 263 (3568) मूलकरण >> B.42 - P. 302 (3569) मूलप्रयोगकरण >> B.99 - P. 265 (3570) मृगांकलेखानी चोपाई >> B.6 - P. 95 (3571) मृगश्रृंग >> B.42 - P. 303 (3572) मृगश्रृंगिणी >> B.42 - P. 303 (3573) मृगापुत्र ने नरक के दुखों का वर्णन किया और श्रमण जीवन की दुष्करता का निराकरण किया >> B.95 - P. 116 (3574) मृगापुत्रनी कथा >> B.141 - P. 111 (3575) मृणाल >> B.46 - P. 401 (3576) मृणालकुण्ड >> B.42 - P. 304 (3577) मृणालवती >> B.42 - P. 304 (3578) मृणालिका >> B.119 - P. 234, 234 (3579) मृतकनिर्हरणक्रियाविधि, रात्रिजागरण >> B.135 - P. 467 (3580) मृन्मुखी >> B.60 - P. 235 (3581) मृषावाद के छह कारण >> B.134 - P. 530 (3582) मेंढे का उदाहरण >> B.134 - P. 469 (3583) मेघकुमार का अलंकरण किया गया >> B.95 - P. 83 (3584) मेघकुमार का प्रव्रज्या ग्रहण करने का संकल्प >> B.95 - P. 80 (3585) मेघकुमार की निर्गन्ध चर्या >> B.95 - P. 89 (3586) मेघकुमार के नामकरण आदि संस्कार >> B.95 - P. 77 (3587) मेघकुमार के निष्क्रमण प्रायोग्य उपकरण >> B.95 - P. 82 (3588) मेघकुमार को जातिस्मरण >> B.95 - P. 89 (3589) मेघकुमार श्रमण का समाधि-मरण >> B.95 - P. 91 (3590) मेघचारण >> B.99 - P. 267 / B.60 - P. 236 (3591) मेरुनंदन >> B.50 - P. 326 (3592) मेरुनंदन (उपाध्याय) >> B.50 - P. 326 (3593) मेरुनन्दन >> B.73 - P. 73 (3594) मेरुनन्दन [कवि] >> B.73 - P. 93 (3595) मेरुनन्दनगणि [खरतरगच्छीय] >> B.73 - P. 264 (3596) मेरुनन्दना >> B.42 - P. 308 (3597) मेरुनाभि >> B.49 - P. 86 / B.69 - P. 94 (3598) मेरुपर्वत उपर आवेल सौमनसवन...मेरुना शिखर उपर पांडुकवन >> B.56 - P. 107, 388 (3599) मेरुनंदन >> B.133 - P. 283, 283 (3600) मेषश्रृंग >> B.42 - P. 309 (3601) मेहरुन्निसा >> B.74 - P. 16 (3602) मैथुन के संकल्प से वस्त्र निर्माण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 745 (3603) मैथुन सेवन के संकल्प से आँखों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 404 (3604) मैथुन सेवन के संकल्प से उत्तरोष्ठ रोगों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 403 (3605) मैथुन सेवन के संकल्प से जांघ आदि के रोगों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 401 (3606) मैथुन सेवन के संकल्प से दांतों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 404 (3607) मैथुन सेवन के संकल्प से नखों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 401 (3608) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर पैरों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 408 (3609) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर शरीर परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 406 (3610) मैथुन सेवन के संकल्प से पैरों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 400 (3611) मैथुन सेवन के संकल्प से भौंह आदि रोमों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 405 (3612) मैथुन सेवन के संकल्प से शरीर परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 399 (3613) मैथुन सेवन के संकल्प से होठों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 402 (3614) मैथुन सेवन के लिए कलह करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 423 (3615) मैथुन सेवन के लिए प्रार्थना करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 417 (3616) मैथुन सेवन के लिए वस्त्र अपावृत करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 417 (3617) मैथुन सेवन के संकल्प से आभूषण निर्माण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 421 (3618) मैथुन सेवन के संकल्प से गण्डादि की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 346 (3619) मैथुन सेवन के संकल्प से चिकित्सा करने का सूत्र >> B.90 - P. 415 (3620) मैथुन सेवन के संकल्प से धातु निर्माण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 423 (3621) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर गण्डादि की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 348 (3622) मैथुन सेवन के संकल्प से परस्पर व्रण की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 348 (3623) मैथुन सेवन के संकल्प से प्रणीत आहार करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 424 (3624) मैथुन सेवन के संकल्प से माला निर्माण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 422 (3625) मैथुन सेवन के संकल्प से वस्त्र धारण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 420 (3626) मैथुन सेवन के संकल्प से व्रण की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 345 (3627) मैथुन सेवन के संकल्प से हस्तकर्म करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 420 (3628) मैथुनेच्छा से उपकरण धारणादि के प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 420 (3629) मैल दूर करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 353 (3630) मोकलकरण >> B.46 - P. 404 (3631) मोती अंगे, पत्रचर्चा - निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.155 - P. 77 (3632) मोर-चंद्रनो >> B.46 - P. 406 (3633) मोरना >> B.46 - P. 406 (3634) यक्षावेश के कारण

>> B.135 - P. 228 (3635) यतनावरणीय कर्म >> B.60 - P. 238 (3636) यथाप्रवृत्त करण >> B.49 - P. 154 (3637) यथाप्रवृत्तकरण >> B.99 - P. 277 (3638) यथाप्रवृत्ति करण >> B.60 - P. 239 (3639) यथाप्रवृत्तिकरण >> B.69 - P. 18 (3640) यथाप्रवृत्तिकरण : धान्यपत्न्य का दृष्टांत >> B.134 - P. 175 (3641) यथालंघिक को सूत्रार्थ ग्रहण करने की विधि >> B.82 - P. 326 (3642) यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ >> B.60 - P. 240 (3643) यथेष्टाचरणम् >> B.48 - P. 56 (3644) यशोधरनृप चोपाई >> B.2 - P. 93 (3645) यात्रागत राजा का आहार ग्रहण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 592 (3646) यात्रादि पदों की विचारणा >> B.95 - P. 40 (3647) यावदवधारणे नित्य समास, जिज्ञासा - सौम्यचन्द्रविजय >> B.153 - P. 66 (3648) यावदवधारणे नित्य समास, पत्रचर्चा - सौम्यचन्द्रविजय >> B.160 - P. 86 (3649) यावदवधारणे नित्य समास, समाधान - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.158 - P. 79 (3650) युगलिकोमां कोई अभव्यनो आत्मा होय के नहीं ? , पत्रचर्चा - राजदर्शनविजय-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय-श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.149 - P. 22 (3651) युद्ध और वैद्य : पुराने धृत से व्रणसंरोहण >> B.135 - P. 216 (3652) युद्ध में कालकुमार का मरण >> B.95 - P. 434 (3653) युधिष्ठिर ने पण्डुराजा को द्रौपदी के अपहरण की सूचना दी >> B.95 - P. 197 (3654) यूपकेसरिणी >> B.42 - P. 315 (3655) योग दुष्प्रणिधान >> B.49 - P. 155 (3656) योगनिःप्रणिधान >> B.42 - P. 315 (3657) योगपरित्याग के परिणाम >> B.134 - P. 539 (3658) योगसंग्रह के चार उदाहरण >> B.134 - P. 540 (3659) योगस्थानोना अल्प-बहुत्वमां एक सूक्ष्म विचारणा, लेखक - मलयगिरि-प्रेमहंसविजय >> B.150 - P. 9 (3660) रंगरत्नाकरनेमिनाथ-प्रबंध >> B.50 - P. 348 (3661) रंगरत्नाकरनेमिनाथप्रबन्ध >> B.73 - P. 478 (3662) रक्त तृण - मणियों का इष्टतर रक्तवर्ण >> B.96 - P. 132 (3663) रक्षिता के उदाहरण से महाव्रतों की सुरक्षा के फल का निर्देश >> B.95 - P. 453 (3664) रच्च (रज्ज्) >> B.43 - P. 555 (3665) रजयुक्त आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 587 (3666) रजोहरण >> B.8 - P. 20 / B.49 - P. 111 / B.134 - P. 151 / B.60 - P. 244 / B.82 - P. 228 (3667) रजोहरण एषणा >> B.90 - P. 710 (3668) रजोहरण और पादलेखनिका का प्रयोजन >> B.135 - P. 140 (3669) रजोहरण के प्रकार >> B.135 - P. 139 (3670) रजोहरण सम्बन्धी प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 710 (3671) रण >> B.46 - P. 411 (3672) रणइ >> B.46 - P. 411 (3673) रणकाहल >> B.46 - P. 411 (3674) रणखनि >> B.42 - P. 317 (3675) रणछोड >> B.50 - P. 338 (3676) रणछोड(दीवान) >> B.50 - P. 337 (3677) रणछोड(भगत) >> B.50 - P. 337 (3678) रणछोडदास >> B.50 - P. 336 (3679) रणछोड >> B.50 - P. 336, 336, 336 (3680) रणछोड - १ >> B.50 - P. 336, 336, 336 (3681) रणछोड - २ >> B.50 - P. 336, 336, 336 (3682) रणछोड - ५ >> B.50 - P. 337, 337, 337 (3683) रणछोड - ७ >> B.50 - P. 338, 338, 338 (3684) रणजंग >> B.50 - P. 338 (3685) रणजीत सिंह >> B.133 - P. 9, 10, 9, 10 (3686) रणझणंत >> B.43 - P. 492 (3687) रणझणे >> B.46 - P. 411 (3688) रणतूर >> B.46 - P. 411 (3689) रणथम्भौर >> B.73 - P. 154 (3690) रणदक्ष >> B.42 - P. 317 (3691) रणदेव्या >> B.46 - P. 411 (3692) रणधीर >> B.50 - P. 338 (3693) रणभाष >> B.46 - P. 411 (3694) रणमलच्छंद >> B.50 - P. 338 (3695) रणमल्ल >> B.73 - P. 51 (3696) रणमाल >> B.46 - P. 411 (3697) रणयज्ञ >> B.50 - P. 338 (3698) रणरंग >> B.46 - P. 411 (3699) रणरण >> B.46 - P. 411 (3700) रणरणय >> B.43 - P. 346 (3701) रणवट >> B.46 - P. 411 (3702) रणवणीयां >> B.46 - P. 411 (3703) रणवाइ >> B.46 - P. 411 (3704) रणवावला >> B.46 - P. 411 (3705) रणशोण्ड >> B.42 - P. 317 (3706) रणश्रान्त >> B.42 - P. 317 (3707) रणसंड >> B.46 - P. 411 (3708) रणसिंह (रावत) >> B.50 - P. 338 (3709) रणसिंह राजर्षि रास >> B.4 - P. 397 (3710) रणस्थंभ रोप्यो >> B.46 - P. 411 (3711) रणझडि >> B.46 - P. 411 (3712) रणियु >> B.46 - P. 411 (3713) रणीउ >> B.46 - P. 411 (3714) रणे >> B.46 - P. 411 (3715) रणोर्मि >> B.42 - P. 317 (3716) रणहक >> B.43 - P. 346 (3717) रत्नकरण्ड श्रावकाचार >> B.133 - P. 111 (3718) रत्नकरण्ड श्रावकाचार (हिन्दी पद्यानुवाद) >> B.133 - P. 138 (3719) रत्नगुरुनी जोड या सज्जाय >> B.74 - P. 248 (3720) रत्नद्वीप की देवी का लवणसमुद्र को स्वच्छ करने के लिए जाना और वनखंड में रमण करने का आदेश देना >> B.95 - P. 142 (3721) रत्नप्रभापृथ्वी के संख्यात विस्तृत नरकावासों में उद्धर्तन करने वाले नारकों के 39 प्रश्नों का समाधान >> B.93 - P. 738 (3722) रत्नाधिक वन्दनार्ह : व्यवहारनयसम्मत >> B.135 - P. 188 (3723) रथ-मुशल संग्राम में काल आदि कुमारों के मरण की कथा >> B.95 - P. 425 (3724) रथनेमि, नेमिनाथ अने राजीमती अंगे थोडीक चर्चा, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 81 (3725) रन्धपुर >> B.42 - P. 323 (3726) रन्न >> B.46 - P. 412 (3727) रयहरण >> B.46 - P. 413 (3728) रवीन्द्रनाथ ठाकुर >> B.73 - P. 20 / B.133 - P. 280, 280 (3729) रसमोद शृंगार >> B.75 - P. 221 (3730) राजकरण >> B.133 - P. 182, 183, 182, 183 (3731) राजगृह में भ. महावीर का समवसरण और स्कन्दक का समाधिमरण का संकल्प >> B.95 - P. 129 (3732) राजपिण्ड ग्रहण करने और भोगने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 590 (3733) राजा के समीप ठहरने आदि का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 666 (3734) राजा को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 466 (3735) राज्य रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 749 (3736) राणक- रांखेगारनी गीतकथा >> B.50 - P. 356 (3737) रात्रि भोजन निषेध का कारण >> B.90 - P. 477 (3738) रात्रि में अशनादि के संग्रह करने के तथा खाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 482 (3739) रात्रिभोजन (ग्रन्थ)

>> B.73 - P. 198 (3740) रामघरणि >> B.46 - P. 418 (3741) राव (रञ्जय) >> B.43 - P. 555 (3742) रिक् >> B.43 - P. 555 (3743) रिगणी >> B.43 - P. 348 (3744) रिगिअ >> B.43 - P. 348 (3745) रिगिणिका >> B.43 - P. 348 (3746) रिगिर >> B.43 - P. 492 (3747) रिगिसिका >> B.117 - P. 35 (3748) रिगिसिगि >> B.43 - P. 348 (3749) रिगिसिया >> B.43 - P. 492 / B.117 - P. 35 (3750) रिछ >> B.43 - P. 492 (3751) रिछोली >> B.43 - P. 348, 492 (3752) रिडी >> B.43 - P. 348 (3753) रिडोशाह >> B.74 - P. 227 (3754) रिण >> B.46 - P. 420 (3755) रिणउ >> B.46 - P. 420 (3756) रिणकंठ >> B.43 - P. 349 (3757) रिणतूर >> B.46 - P. 420 (3758) रिणवास >> B.46 - P. 420 (3759) रिपुदारणरास >> B.73 - P. 89 (3760) रंआंछुं >> B.46 - P. 422 (3761) रंख >> B.46 - P. 422 (3762) रंखडउ >> B.46 - P. 422 (3763) रंचण >> B.43 - P. 349 (3764) रंचणी >> B.43 - P. 349 (3765) रंचिय >> B.43 - P. 349 (3766) रंजग >> B.43 - P. 349 (3767) रंजिय >> B.43 - P. 492 (3768) रंट (रु) >> B.43 - P. 556 (3769) रंटण >> B.43 - P. 492 (3770) रंटणया >> B.43 - P. 349 (3771) रंटणा >> B.43 - P. 349 (3772) रंटणिया >> B.43 - P. 349 (3773) रंटिर >> B.43 - P. 492 (3774) रंड (रु) >> B.43 - P. 556 (3775) रंद >> B.43 - P. 349 (3776) रंदमाळ >> B.46 - P. 422 (3777) रंद >> B.43 - P. 349 (3778) रंदिम >> B.43 - P. 492 (3779) रंदी >> B.43 - P. 492 (3780) रंप >> B.43 - P. 492 (3781) रंबता >> B.46 - P. 422 (3782) रंभ >> B.43 - P. 556 (3783) रंव >> B.43 - P. 556 (3784) रंसाडइ >> B.46 - P. 422 (3785) रंसाडचु >> B.46 - P. 422 (3786) रुक्मिणी हरण >> B.74 - P. 382, 384 (3787) रुक्मिणीहरण >> B.50 - P. 367, 367 (3788) रुचिरशृंगड >> B.85 - P. 253 (3789) रुणऊणइ >> B.46 - P. 421 (3790) रुणझणिरि >> B.46 - P. 421 (3791) रुणझुगिर >> B.46 - P. 422 (3792) रुणझुणइ >> B.46 - P. 421, 421 (3793) रुणझुणकार >> B.46 - P. 422 (3794) रुणझुणिर >> B.46 - P. 421 (3795) रुणरंट >> B.43 - P. 556 (3796) रुणरुण >> B.43 - P. 493, 556 (3797) रुणरुणिय >> B.43 - P. 493 (3798) रुणमाला >> B.43 - P. 349 (3799) रुदाओ सुयसमुद्दाओ के रुदाओ सुयसमुद्दाओ ?, पत्रचर्चा - मलयगिरिविजय >> B.147 - P. 19 (3800) रुदाओ सुयसमुद्दाओ के रुदाओ सुयसमुद्दाओ ?, लेखक - शीलचन्द्रविजय >> B.146 - P. 3 (3801) रुधिरनामकर्म >> B.99 - P. 292 (3802) रूं >> B.46 - P. 423 (3803) रूंख >> B.46 - P. 423 (3804) रूंखडुं >> B.46 - P. 423 (3805) रूंगु >> B.46 - P. 423 (3806) रूंघ >> B.46 - P. 423 (3807) रूंधि >> B.46 - P. 423 (3808) रूंस >> B.46 - P. 423 (3809) रुक्मिणी हरण >> B.133 - P. 267 (3810) रुणझुणि >> B.46 - P. 423 (3811) रूंउ >> B.46 - P. 423 (3812) रूपवशार्तमरण >> B.99 - P. 293 (3813) रूपी द्रव्यों में आदिमान परिणाम >> B.69 - P. 162 (3814) रोग की उपेक्षा से हानि : वृक्ष और ऋण दृष्टांत >> B.135 - P. 224 (3815) रोसारुणु >> B.46 - P. 425 (3816) रोहिणिया चोरने कांटो वागवो, जिज्ञासा - यशपदमसागर >> B.158 - P. 73 (3817) रोहिणी का उदाहरण >> B.95 - P. 450 (3818) रोहिणी के उदाहरण से महाव्रतों की वृद्धि के फल का निर्देश >> B.95 - P. 454 (3819) रौद्रनाद >> B.42 - P. 332 (3820) लयनजृम्भक >> B.85 - P. 277 (3821) लवणसमुद्र की वृद्धि और हानि के कारण >> B.96 - P. 342 (3822) लवणसमुद्र के जल से जम्बूद्वीप के जलमग्न न होने के कारण >> B.96 - P. 352 (3823) लवणसमुद्रना अंतर्गत 56 अंतर्द्वीपो >> B.56 - P. 113, 390 (3824) लागतरण >> B.43 - P. 355 (3825) लाभमानवशार्तमरण >> B.99 - P. 300 (3826) लायतरण >> B.43 - P. 356 (3827) लिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (3828) लुरणी >> B.43 - P. 358 (3829) लेतिकापिता का उपासक प्रतिमा आराधन करना >> B.95 - P. 351 (3830) लेतिकापिता का गृही धर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 350 (3831) लेतिकापिता का समाधिमरण देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 352 (3832) लेतिकापिता गाथापति का समवसरण में जाना और धर्मश्रवण करना >> B.95 - P. 350 (3833) लेत्थारण >> B.43 - P. 358 (3834) लेप सहित पूर्ण आहार करने का निर्देश >> B.90 - P. 602 (3835) लेपकृत् आहारनी छूट शा माटे ?, लेखक - हेमनिलयविजय >> B.147 - P. 5 (3836) लेश्याओं का विविध अपेक्षाओं से परिणमन का प्ररूपण >> B.93 - P. 126 (3837) लेश्याओं के परिणाम >> B.134 - P. 560 (3838) लेश्याकरण के भेद और चौबीसदंडकों में प्ररूपण >> B.93 - P. 113 (3839) लेश्यापरिणति और मृत्यु >> B.134 - P. 562 (3840) लेश्यापरिणाम >> B.42 - P. 337 (3841) लेश्यापरिणामों के प्रकार >> B.134 - P. 562 (3842) लेश्यास्थान और परिणामस्थान >> B.135 - P. 486 (3843) लौकामत निराकरण चोपाई >> B.2 - P. 146 (3844) लोक और जीव के विषय में गौतम के प्रश्न करने पर जमाली का चुप रहना >> B.95 - P. 391 (3845) लोक में अन्धकार के कारण >> B.96 - P. 18 (3846) लोक में उद्योत के कारण >> B.96 - P. 18 (3847) लोकपडिपूरणा >> B.85 - P. 277 (3848) लोकपूरण >> B.42 - P. 338 (3849) लोकपूरणसमुद्घात >> B.99 - P. 304 (3850) लोकप्रतिपूरण >> B.85 - P. 278 (3851) लोकप्रतिपूरणा >> B.85 - P. 277 (3852) लोका मत निराकरण चौपाई >> B.74 - P. 550 (3853) लोकान्तिक देवों के मनुष्य लोक में आगमन के कारणों का प्ररूपण >> B.93 - P. 674 (3854) लोगपडिपूरण >> B.85 - P. 278 (3855) लोचकरणविधि >> B.99 - P. 308 (3856) लोभनालिका द्वात्रिंशिका बाला. >> B.133 - P. 174 (3857) लोभवशार्तमरण >> B.99 - P. 309 (3858) लौकिक अबद्धकरण >> B.134 - P. 643 (3859) लौकिक ग्रन्थोत्क धर्माधर्म विचार सूचिका चतुःपदिका >> B.74 - P. 117 (3860) लौकिकभावश्रुतग्रन्थ >> B.99 - P. 309 (3861) वंदन करवानो

तिक्खुत्तो आयाणं पाठ, समाधान - निर्गन्धचन्द्रविजय >> B.155 - P. 65 (3862) वङ्गरणा >> B.46 - P. 439 (3863) वङ्गरणाभ >> B.85 - P. 56, 284 (3864) वङ्गरणसाला >> B.43 - P. 363 (3865) वचन दुष्प्रणिधान >> B.49 - P. 143 / B.82 - P. 145 (3866) वचन-समाधारणा का फल >> B.90 - P. 735 (3867) वचनगुप्ति के परिणाम >> B.134 - P. 248 (3868) वचनदुष्प्रणिधान >> B.60 - P. 255 (3869) वचनयोग दुष्प्रणिधान अतिचार >> B.69 - P. 222 (3870) वचनसुप्रणिधान >> B.60 - P. 256 (3871) वज्जरण >> B.43 - P. 364 (3872) वज्जनक्र >> B.42 - P. 343 (3873) वज्जनाद >> B.42 - P. 343 (3874) वज्जनाभ >> B.42 - P. 343 (3875) वज्जनाभि >> B.42 - P. 343 (3876) वज्जनाराच >> B.42 - P. 343 (3877) वज्जनेत्र >> B.42 - P. 343 (3878) वज्जनाभ >> B.44 - P. 524 / B.85 - P. 284, 292 / B.82 - P. 153 (3879) वज्जनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना >> B.75 - P. 342 (3880) वज्जनाराच >> B.8 - P. 21 (3881) वज्जनाराचसंहनन >> B.99 - P. 311 (3882) वज्जशृङ्खला >> B.85 - P. 293 (3883) वज्जिन् >> B.85 - P. 294 (3884) वटपद्रनी गजल >> B.6 - P. 186 (3885) वटपद्रनी गजल >> B.6 - P. 186, 186 (3886) वडी वारनी >> B.46 - P. 442 (3887) वधकारिणी >> B.42 - P. 346 (3888) वनखण्ड में वाणव्यन्तरो का विचरण >> B.96 - P. 140 (3889) वनखण्ड में वाणव्यन्तरो का विहरण >> B.96 - P. 140 (3890) वनस्पति के प्रकार : प्रत्येक, साधारण (अनंत) >> B.135 - P. 266 (3891) वनस्पतिकाय प्रतिष्ठित आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 570 (3892) वनस्पतिकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 238, 240 (3893) वन्दन करने योग्य 5 >> B.82 - P. 59 (3894) वन्दना का प्रयोजन और परिणाम >> B.134 - P. 575 (3895) वन्दना के अवश्यकरणीय काल >> B.135 - P. 190 (3896) वस्मुत्तूरण >> B.43 - P. 495 (3897) वयगरणउ >> B.46 - P. 445 (3898) वयरणी >> B.46 - P. 445 (3899) वरण >> B.43 - P. 370 / B.46 - P. 446 (3900) वरणइ >> B.46 - P. 446 (3901) वरणक >> B.46 - P. 446 (3902) वरणा >> B.85 - P. 299 (3903) वरणी >> B.46 - P. 446 (3904) वरसवियारणि >> B.46 - P. 446 (3905) वरुंड >> B.43 - P. 371 (3906) वरुंड >> B.43 - P. 371 (3907) वरुण >> B.7 - P. 307 / B.42 - P. 349 / B.44 - P. 533 / B.85 - P. 301 / B.82 - P. 174 (3908) वरुण का मित्र भी सुकुल में उत्पन्न हुआ >> B.95 - P. 360 (3909) वरुण का रथ-मुसल-संग्राम में जाना >> B.95 - P. 358 (3910) वरुण की देवलोक में उत्पत्ति और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 359 (3911) वरुण के मरने पर देवकृत वृष्टि >> B.95 - P. 359 (3912) वरुण देवी >> B.44 - P. 533 (3913) वरुण नाग नप्तृक श्रमणोपासक >> B.95 - P. 358 (3914) वरुण ने संलेखना की >> B.95 - P. 359 (3915) वरुणकाइय >> B.85 - P. 303 (3916) वरुणकायिक >> B.85 - P. 303 (3917) वरुणदीव >> B.85 - P. 303 (3918) वरुणदेवकाइय >> B.85 - P. 303 (3919) वरुणदेवकायिक >> B.85 - P. 303 (3920) वरुणदेवा >> B.85 - P. 303 (3921) वरुणद्वीप >> B.85 - P. 303 (3922) वरुणनाग नप्तृक के मित्र ने भी वरुण का अनुसरण किया >> B.95 - P. 359 (3923) वरुणप्पभ >> B.85 - P. 303 (3924) वरुणप्पभसेल >> B.85 - P. 303 (3925) वरुणप्रभ >> B.42 - P. 350 / B.85 - P. 303 (3926) वरुणप्रभशैल >> B.85 - P. 303 (3927) वरुणवर >> B.85 - P. 303 (3928) वरुणवर द्वीप का विष्कम्भ एवं परिधि >> B.96 - P. 391 (3929) वरुणवर द्वीप की नित्यता >> B.96 - P. 392 (3930) वरुणवर द्वीप के नाम का हेतु >> B.96 - P. 391 (3931) वरुणवर द्वीप वर्णन >> B.96 - P. 391 (3932) वरुणवरद्वीप का संस्थान >> B.96 - P. 391 (3933) वरुणवरादि द्वीप-समूहों में ज्योतिष्क देव >> B.96 - P. 440 (3934) वरुणा >> B.42 - P. 350 / B.44 - P. 533 (3935) वरुणाअशी >> B.46 - P. 447 (3936) वरुणाभिख्य >> B.42 - P. 350 (3937) वरुणि >> B.46 - P. 447 (3938) वरुणोद >> B.85 - P. 303 (3939) वरुणोद समुद्र का संस्थान >> B.96 - P. 392 (3940) वरुणोद समुद्र की नित्यता >> B.96 - P. 393 (3941) वरुणोद समुद्र के नाम का हेतु >> B.96 - P. 392 (3942) वरुणोद समुद्र वर्णन >> B.96 - P. 392 (3943) वरुणोपपात >> B.85 - P. 303 / B.60 - P. 258 (3944) वरुणोववाय >> B.85 - P. 303 (3945) वरुण >> B.45 - P. 283 / B.46 - P. 448 (3946) वर्ज्य के दर्शन उपशमन और उदीरण की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भुगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 595 (3947) वर्णपरिणाम >> B.99 - P. 317 (3948) वर्द्धमान नामकरण >> B.95 - P. 67 (3949) वर्द्धमानविद्याकल्प अंगे एक विचारणीय वात, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.162 - P. 83 (3950) वर्शात मरण >> B.49 - P. 145 (3951) वर्षभारुद >> B.46 - P. 448 (3952) वर्षा की परीक्षा करने वाले पुरुष की क्रियाओं का प्ररूपण >> B.93 - P. 179 (3953) वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म के दिन-रात पूर्ण करने वाले नक्षत्रों की संख्या >> B.96 - P. 628 (3954) वर्षावास में करणीय कार्य >> B.135 - P. 348 (3955) वलन मरण >> B.49 - P. 144 (3956) वलन्मरण >> B.134 - P. 524 / B.99 - P. 319 / B.60 - P. 259 (3957) वलाकामरण >> B.99 - P. 319 (3958) वलायमरण >> B.99 - P. 319 (3959) वशाकारिणी >> B.42 - P. 351 (3960) वशार्तमरण >> B.99 - P. 319 (3961) वशार्त मरण >> B.60 - P. 259 (3962) वशार्तमरण >> B.134 - P. 525 (3963) वशीकरण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 424 (3964) वशीकरणी >> B.42 - P. 352 (3965) वस्तुश्रुतज्ञानावरणीय >> B.99 - P. 320 (3966) वस्तुसमासश्रुतज्ञानावरणीय >> B.99 - P. 321 (3967) वस्त्र का प्रतिलेखन करने के बाद वस्त्र ग्रहण का विधान >> B.90 - P. 666 (3968) वस्त्र के विवर्ण करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 685 (3969) वस्त्र धारण >> B.90 - P. 674 (3970) वस्त्र धारण के कारण >> B.90 - P. 674 (3971) वस्त्र सुगन्धित करने का और धोने का निषेध >> B.90 - P. 680

(3972) वस्त्र सुगन्धित करने का और धोने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 680 (3973) वस्त्र-अपहरणकाल में उपेक्षा भाव >> B.135 - P. 132 (3974) बहुधारिणी >> B.43 - P. 373 (3975) वाक्समाधारणा >> B.60 - P. 260 (3976) वागधिकरण >> B.99 - P. 322 (3977) वाग्दुष्प्रणिधान >> B.99 - P. 323 (3978) वाग्दुष्प्रणिधानम् >> B.65 - P. 105 (3979) वाग्भव-असमीक्ष्याधिकरण >> B.99 - P. 323 (3980) वाणिज्य ग्राम में सोमिल ब्राह्मण और भ. महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 360 (3981) वातशृङ्ग >> B.85 - P. 315 (3982) वाद करने वालों की परस्पर (एक दूसरे की) निन्दा करते हो 1 गोशालक का आक्षेप >> B.95 - P. 64 (3983) वादग्रन्थः >> B.48 - P. 69 (3984) वायुकायिक जीवों का आरम्भ न करने की प्रतिज्ञा >> B.90 - P. 238, 236 (3985) वायुचारण >> B.99 - P. 327 / B.60 - P. 262 / B.82 - P. 317 (3986) वारण >> B.46 - P. 458 / B.134 - P. 432 / B.111 - P. 82 (3987) वारणसी नगरी में सुरादेव गाथापति >> B.95 - P. 317 (3988) वारणां >> B.46 - P. 458 (3989) वारणे कीजे >> B.46 - P. 458 (3990) वारणे जवुं >> B.46 - P. 458 (3991) वारिणील >> B.43 - P. 377 (3992) वारिधाराचारण >> B.99 - P. 328 (3993) वारुं >> B.46 - P. 458 (3994) वारुण >> B.42 - P. 358 / B.85 - P. 317 (3995) वारुणिकंत >> B.85 - P. 317 (3996) वारुणिवर >> B.85 - P. 317 (3997) वारुणी >> B.42 - P. 358 / B.44 - P. 542 / B.46 - P. 458 / B.85 - P. 317 (3998) वारुणी कायोत्सर्ग दोष >> B.82 - P. 111 (3999) वारुणी धारणा >> B.49 - P. 145 / B.60 - P. 262 (4000) वारुणीकान्त >> B.85 - P. 317 (4001) वारुणीदोष >> B.99 - P. 328 (4002) वारुणीपायीदोष >> B.99 - P. 328 (4003) वारुणीवर >> B.42 - P. 358 (4004) वारुणीवर द्वीप >> B.69 - P. 93 (4005) वारुणीवर समुद्र >> B.69 - P. 93 (4006) वारुणोद >> B.85 - P. 318 (4007) वारु परि >> B.46 - P. 458 (4008) वासपूरण >> B.46 - P. 460 (4009) वासुपूज्य स्वामी जिनालय, लावरीनी पोळ-धनासुधारनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 142 (4010) विकलचरण >> B.99 - P. 329 (4011) विकलेद्रिय >> B.49 - P. 148 (4012) विकार - वर्धक आहार करने का निषेध >> B.90 - P. 329, 330 (4013) विक्षेप से कुपित महाशतक ने रेवती का मरण के बाद नरक गमन कहा >> B.95 - P. 345 (4014) विगारणी >> B.43 - P. 381 (4015) विचार ग्रन्थ बालावबोध >> B.74 - P. 617 (4016) विचारषट्त्रिंशिका >> B.5 - P. 379 (4017) विचारषट्त्रिंशिका बालावबोध >> B.3 - P. 136 (4018) विचारसार प्रकरण >> B.75 - P. 234 (4019) विचारसार प्रकरण ग्रंथ टबो >> B.5 - P. 355 (4020) विचारसार प्रकरण टबो >> B.5 - P. 265 / B.6 - P. 90 (4021) विजय के मरने के बाद अभग्न सेन का चौर-सेनापति होना >> B.95 - P. 473 (4022) विजय चौर का उदाहरण >> B.95 - P. 436 (4023) विजय चौर के उदाहरण का निष्कर्ष >> B.95 - P. 443 (4024) विजय प्राप्त कर आये हुए सुसेण सेनापति द्वारा भरत के सन्मुख भेंट अर्पण करना >> B.95 - P. 122 (4025) विजय मित्र का लवण समुद्र में मरण >> B.95 - P. 469 (4026) विजयद्वार की नैषिधिकियों के तोरण >> B.96 - P. 148 (4027) विजातिगुणअसदभूतव्यवहारनय >> B.99 - P. 332 (4028) विजातिद्रव्यअसदभूतव्यवहारनय >> B.99 - P. 332 (4029) विजातिद्रव्यउपचरित असदभूतव्यवहारनय >> B.99 - P. 332 (4030) विजात्यसदभूतव्यवहारनय >> B.99 - P. 333 (4031) विजात्युपचरित असदभूतव्यवहारनय >> B.99 - P. 333 (4032) विज्जाचरणविनिच्छय >> B.85 - P. 329 (4033) विडारण >> B.46 - P. 466 (4034) विदारण क्रिया >> B.49 - P. 147 / B.69 - P. 168 (4035) विदारणक्रिया >> B.42 - P. 365 / B.99 - P. 334 / B.60 - P. 264 (4036) विद्या चरण >> B.49 - P. 147 (4037) विद्याचरणविनिश्चय >> B.60 - P. 264 (4038) विद्याचरणविनिश्चय >> B.85 - P. 329 (4039) विद्याचारण >> B.99 - P. 335 / B.60 - P. 264 / B.82 - P. 316 (4040) विद्याचारण लब्धि >> B.134 - P. 549 (4041) विद्याविलास मां उमेरण >> B.3 - P. 391 (4042) विनय का सुपरिणाम >> B.90 - P. 86, 86 (4043) विपरिणाम >> B.49 - P. 149 / B.172 - P. 274 (4044) विपरिणामानुप्रेक्षा >> B.60 - P. 266 (4045) विपर्ययकारणानि >> B.48 - P. 75 (4046) विप्पाणसमरण >> B.99 - P. 343 (4047) विप्रणी >> B.46 - P. 468 (4048) विभिचारणी >> B.46 - P. 469 (4049) विभूषा करने का निषेध >> B.90 - P. 331 (4050) विभूषा के संकल्प से अक्षिपत्रो के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 396 (4051) विभूषा के संकल्प से उत्तरोष्ठादि रोगों में परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 396 (4052) विभूषा के संकल्प से गण्डादि की चिकित्सा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 343 (4053) विभूषा के संकल्प से चक्षु परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 397 (4054) विभूषा के संकल्प से जंघादि के रोगों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 394 (4055) विभूषा के संकल्प से दांतों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 396 (4056) विभूषा के संकल्प से नखाग्रो के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 394 (4057) विभूषा के संकल्प से पैरों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 393 (4058) विभूषा के संकल्प से भौहों आदि के रोमों के परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 398 (4059) विभूषा के संकल्प से ब्रणों की चिकित्सा करवाने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 342 (4060) विभूषा के संकल्प से शरीर परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 392 (4061) विभूषा के संकल्प से स्व शरीर का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 392 (4062) विभूषा के संकल्प से होटों का परिकर्म करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 395 (4063) विभूषा हेतु उपकरण धारण प्रक्षालन प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 421 (4064) विभूषा हेतु उपकरण धारण प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 421 (4065) विमलनाथ (चौमुखी) जिनालय, वापी, महावीरनगर, पारडी, वलसाड >> B.61 - P. 296 (4066) विमलमंत्रीसरनो रास >> B.5 - P. 74 (4067)

विमलमन्त्रीसरनो सलोको >> B.5 - P. 89, 147, 74 (4068) विमलवाहन का निर्गन्थों के प्रतिकूल आचरण >> B.95 - P. 414 (4069) विमलसिद्धि गुरुणी गीतम् >> B.75 - P. 486 (4070) विमलाचल अथवा शत्रुंजय-तीर्थमाला >> B.133 - P. 31 (4071) विमासरण >> B.46 - P. 469 (4072) वियारणि >> B.46 - P. 469 (4073) विरणिअ >> B.43 - P. 498 (4074) विरिच (वि + भज्) >> B.43 - P. 562 (4075) विरिचिअ >> B.43 - P. 387 (4076) विरिचिर >> B.43 - P. 387 (4077) विरिचिरा >> B.43 - P. 387 (4078) विरुंगण >> B.43 - P. 387 (4079) विरुंगिय >> B.43 - P. 387 (4080) विरुंचण >> B.43 - P. 387 (4081) विरुद्धकारणानुपलब्धि (हेतु) >> B.172 - P. 279 (4082) विरुद्धकारणोपलब्धि (हेतु) >> B.172 - P. 279 (4083) विवरणथी शक्तिज्ञान >> B.48 - P. 93 (4084) विवरणम् >> B.48 - P. 77 (4085) विविक्त-शयनासन के परिणाम >> B.134 - P. 444 (4086) विविध प्रकार की परिचाराणा >> B.93 - P. 326 (4087) विविध भाव परिणत जीव का एकभावादि रूप परिणमन >> B.93 - P. 492 (4088) विशल्यकरण >> B.42 - P. 378 / B.49 - P. 150 (4089) विशल्यकारिणी >> B.42 - P. 378 (4090) विषय-परिणाम आत्मांगल से >> B.134 - P. 146 (4091) विसमृणाल >> B.119 - P. 218, 218 (4092) विसारण >> B.43 - P. 389 (4093) विसूरणा >> B.43 - P. 390 (4094) विसोधिकरणु >> B.46 - P. 474 (4095) विससाकरण >> B.134 - P. 178 (4096) विहरण योग्य वृद्ध और उसका वैयावृत्त्य >> B.135 - P. 625 (4097) विहरमान परमात्मानो विरह होय के केम ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्गन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 77 / B.155 - P. 76 (4098) विहार करने के कारण >> B.134 - P. 620 (4099) वीतीभय नगर में महावीर का समवसरण >> B.95 - P. 138 (4100) वीर जिणेसर पारणउ >> B.1 - P. 393 (4101) वीरजिणेसरपारणउ (काव्य) >> B.73 - P. 117 (4102) वीरण >> B.119 - P. 265, 265 (4103) वीरनन्दन >> B.73 - P. 285 (4104) वीरनन्दी >> B.42 - P. 383 (4105) वीरणि >> B.46 - P. 477 (4106) वीर्य करण >> B.49 - P. 150 (4107) वीर्य प्राप्ति का कारण >> B.135 - P. 512 (4108) वीवाहपगरण >> B.46 - P. 477 (4109) वृंदल >> B.46 - P. 479 (4110) वृंदा >> B.46 - P. 479 (4111) वृंदावन विलास >> B.133 - P. 215 (4112) वृंदारवाटिका >> B.46 - P. 479 (4113) वृंदावन >> B.50 - P. 427 / B.133 - P. 213, 213 (4114) वृन्द >> B.42 - P. 385 (4115) वृन्दारक >> B.42 - P. 385 / B.46 - P. 479 (4116) वृन्दावन >> B.42 - P. 385 (4117) वेत्रणी >> B.85 - P. 357 (4118) वेदउपघात-उपकरणउपघात-दृष्टांत >> B.135 - P. 517 (4119) वेदकरण के भेद और चौबीसदण्डों में प्ररूपण >> B.93 - P. 302 (4120) वेभेल सन्निवेश में पूरण गाथापति >> B.95 - P. 496 (4121) वेयरणी >> B.85 - P. 359 (4122) वेयारणिय >> B.43 - P. 394 (4123) वेहाणसमरण >> B.99 - P. 361 (4124) वैतरणी >> B.42 - P. 388 / B.85 - P. 359 / B.60 - P. 274 (4125) वैतरणी परमाधामी >> B.69 - P. 90 (4126) वैदारणिका क्रिया >> B.60 - P. 274 (4127) वैदिकभावश्रुतग्रन्थ >> B.99 - P. 362 (4128) वैधर्म्य उदाहरण >> B.49 - P. 143 (4129) वैमानिक देवों का प्रति समय अपहरण करने पर भी अनपहरणत्व का प्ररूपण >> B.93 - P. 756 (4130) वैयधिकरण्य >> B.49 - P. 144 (4131) वैयधिकरण्यम् >> B.48 - P. 84 (4132) वैयावच्च 10 (चरण 70) >> B.82 - P. 259 (4133) वैयावृत्त्य के उदाहरण >> B.134 - P. 590 (4134) वैयावृत्त्य के परिणाम >> B.134 - P. 591 (4135) वैयावृत्त्यकरण-समवसरण-संभोज >> B.135 - P. 608 (4136) वैयावृत्त्य करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भुगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 597 (4137) वैराग्यकारणम् >> B.48 - P. 84 (4138) वैहायस मरण >> B.60 - P. 275 (4139) वैहायसिक मरण >> B.49 - P. 143 (4140) वोरण >> B.46 - P. 484 (4141) वोसरण >> B.43 - P. 500 (4142) व्यंतर-ज्योतिष देवों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल का अभाव >> B.69 - P. 108 (4143) व्यंतरनिकाय के आठ भेद >> B.69 - P. 111 (4144) व्यंतरनिकायना देवो संबंधी भेद - प्रभेद >> B.56 - P. 45, 369 (4145) व्यक्ताव्यक्तेश्वरनिषिद्ध >> B.99 - P. 367 (4146) व्यक्तेश्वरनिषिद्ध >> B.99 - P. 368 (4147) व्यञ्जनावग्रहावरणीय >> B.99 - P. 370 (4148) व्यतिकृष्ट काल में निग्रन्थ के लिए स्वाध्याय निषेध >> B.90 - P. 62, 62 (4149) व्यधिकरणत्वम् >> B.48 - P. 86 (4150) व्यधिकरणधर्मावच्छिन्नानुयोगिताकः अभावः, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.162 - P. 189 (4151) व्यन्तरदेव-आयुष्यबंध के कारण >> B.134 - P. 349 (4152) व्यवहरणम् >> B.65 - P. 112 (4153) व्यवहारणिज्जुत्ति >> B.85 - P. 304 (4154) व्यवहारनय >> B.42 - P. 390 / B.49 - P. 31 / B.99 - P. 372 / B.60 - P. 276 (4155) व्यवहारनयः >> B.65 - P. 112 (4156) व्यवहारनयाभास >> B.99 - P. 373 (4157) व्यवहारनिर्युक्ति >> B.85 - P. 304 (4158) व्यवहारिन् >> B.85 - P. 305 (4159) व्याकरण >> B.49 - P. 152 / B.134 - P. 591 / B.99 - P. 376 (4160) व्याकरण का निर्वचन >> B.134 - P. 591 (4161) व्याकरण के अंग >> B.134 - P. 591 (4162) व्याकरणचतुष्कबालावबोध >> B.73 - P. 596 (4163) व्याकरणथी शक्तिनुं ज्ञान >> B.48 - P. 92 (4164) व्याकरणम् >> B.48 - P. 87 (4165) व्याकरणसूत्र >> B.99 - P. 376 (4166) व्यापारण >> B.46 - P. 485 (4167) व्यावहारिक अद्धा पत्योपम का उदाहरणपूर्वक स्वरूप प्ररूपण >> B.96 - P. 706 (4168) व्युत्तसृष्टमरण >> B.99 - P. 379 (4169) व्युत्सर्ग का उदाहरण : प्रसन्नचन्द्र राजर्षि >> B.134 - P. 595 (4170) व्योमचारण >> B.82 - P. 316 (4171) व्रण का दृष्टांत >> B.134 - P. 139 (4172) व्रण के प्रकार >> B.135 - P. 216 (4173) व्रण दृष्टांत के द्वारा पुरुषों के चतुर्भुगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 597 (4174) व्रण परिकर्म के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 255, 257 (4175) व्रण संरोहिणी >> B.42 - P. 391 (4176) व्रणचिकित्सा के विविध साधन >>

B.135 - P. 216 (4177) व्रणलेप के प्रकार >> B.135 - P. 216 (4178) व्रणव >> B.46 - P. 485 (4179) व्रतधारिन् >> B.85 - P. 299 (4180) व्रतावरणक्रिया >> B.42 - P. 392 (4181) शंका के रहते हुए आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 568 (4182) शंख का पौषध करना >> B.95 - P. 354 (4183) शंख ने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया >> B.95 - P. 355 (4184) शंख ने पारणा के पूर्व भ. महावीर की पर्युपासना की >> B.95 - P. 356 (4185) शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, धरणीधर भट्टा पालडी, अमदावाद >> B.55 - P. 156 (4186) शअनस्तिकाय - >> B.97 - P. 53, 53 (4187) शक्रनी अग्रमहिषीओ >> B.141 - P. 82 (4188) शक्रन्दमन >> B.42 - P. 394 (4189) शतक कर्मग्रंथमां केटलांक विचारणीय स्थानो, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.153 - P. 46 (4190) शत्रुज्जय स्तवन या शत्रुजय तीर्थमाला रास >> B.74 - P. 305 (4191) शत्रुजय >> B.42 - P. 395 (4192) शत्रुजय अथवा पुण्डरीक स्तवन >> B.74 - P. 532 (4193) शत्रुजय उद्धार रास >> B.2 - P. 97, 99, 313, 99, 98, 98 / B.3 - P. 374, 375 / B.5 - P. 100, 345 / B.133 - P. 155 (4194) शत्रुजय उद्धार रास या विमल - गिरि उद्धार रास >> B.74 - P. 261, 264 (4195) शत्रुजय गिरिनार मंडण स्तवन >> B.4 - P. 343 (4196) शत्रुजय चैत्य परिपाटी स्तवन >> B.74 - P. 135, 131 (4197) शत्रुजय चैत्यपरिपाटी स्तवन >> B.2 - P. 214 (4198) शत्रुजय चैत्यप्रवाडी >> B.1 - P. 159 (4199) शत्रुजय तीर्थ परिपाटी >> B.3 - P. 289 / B.74 - P. 228 (4200) शत्रुजय तीर्थमाला >> B.5 - P. 356 / B.6 - P. 325 (4201) शत्रुजय तीर्थोद्धार कल्प >> B.74 - P. 348 (4202) शत्रुजय तीर्थोद्धार रास >> B.3 - P. 96 (4203) शत्रुजय पर्वत पर गौतम की सिद्धी >> B.95 - P. 21 (4204) शत्रुजय बृहस्तवन >> B.4 - P. 446 (4205) शत्रुजय भास >> B.1 - P. 155 (4206) शत्रुजय माहात्म्य बालावबोध >> B.6 - P. 16, 401 (4207) शत्रुजय माहात्म्य रास >> B.2 - P. 401, 402 / B.4 - P. 124, 125, 125 / B.74 - P. 523 (4208) शत्रुजय माहात्म्य स्तवक >> B.5 - P. 385, 387 (4209) शत्रुजय यात्रा स्तवन >> B.74 - P. 490, 107 (4210) शत्रुजय रास >> B.2 - P. 349, 350, 349, 350, 350, 350, 350, 350, 350, 350, 350 / B.5 - P. 347, 391 / B.74 - P. 515, 472, 53 (4211) शत्रुजय स्तवन >> B.1 - P. 101 (4212) शत्रुजय स्तवन बालावबोध >> B.1 - P. 115 (4213) शत्रुजय स्तोत्र >> B.1 - P. 300 (4214) शत्रुजय, सौराष्ट्र >> B.57 - P. 98 (4215) शत्रुजयआदीश्वरस्तव >> B.73 - P. 498 (4216) शत्रुजयउद्धार रास >> B.2 - P. 98 (4217) शत्रुजयचतुर्विंशतिस्तवन >> B.73 - P. 172, 175 (4218) शत्रुजयचैत्यपरिपाटी >> B.73 - P. 254, 325, 356, 570 (4219) शत्रुजयतीर्थ परिपाटी >> B.3 - P. 290 (4220) शत्रुजयतीर्थ बृहत् स्तवन >> B.5 - P. 129 (4221) शत्रुजयभास >> B.73 - P. 504 (4222) शत्रुजयमण्डनआदिनाथस्तवन >> B.73 - P. 508 (4223) शत्रुजयमाहात्म्य रास >> B.4 - P. 125 (4224) शत्रुजयवीनती >> B.73 - P. 235 (4225) शत्रुजयस्तवन >> B.73 - P. 348 (4226) शत्रुजयस्तवबालावबोध >> B.73 - P. 605 (4227) शत्रुजयस्तोत्र >> B.73 - P. 423 (4228) शत्रुज्जय >> B.85 - P. 386 / B.73 - P. 413 (4229) शत्रुज्जय पर्वत >> B.44 - P. 577 (4230) शत्रुज्जयपर्वत >> B.85 - P. 505 (4231) शत्रुन्दभ >> B.42 - P. 396 (4232) शनिश्वारिन् >> B.85 - P. 384 (4233) शबल और उसका सीमानिर्धारण >> B.135 - P. 209 (4234) शब्द पुद्गल का ही परिणाम है इस में युक्तियाँ >> B.69 - P. 142 (4235) शमशाननी अधिकारिणी >> B.46 - P. 487 (4236) शय्या संस्तारक लौटाए बिना विहार करने का निषेध >> B.90 - P. 661 (4237) शय्यातर के सीरवाली के आम्र फल ग्रहण करने का विधि-निषेध >> B.90 - P. 625 (4238) शरण >> B.49 - P. 130 (4239) शरण सूत्र >> B.90 - P. 1, 1 (4240) शरणम् >> B.65 - P. 114 (4241) शरण्य >> B.42 - P. 397 (4242) शरण्यः >> B.65 - P. 114 (4243) शरीर की अशुचि के 7 कारण >> B.69 - P. 262 (4244) शरीरङ्गोपाङ्गनाम >> B.60 - P. 281 (4245) शरीरधारण का प्रयोजन >> B.134 - P. 603 (4246) शरीरना संघयणबळ अने मनना धृतिबळनी चतुर्भंगी, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.159 - P. 21 (4247) शरीरनाम >> B.60 - P. 280 (4248) शरीरनामकर्म >> B.99 - P. 387 (4249) शरीरनिर्वृतिस्थान >> B.99 - P. 388 (4250) शरीरप्रत्याख्यान का परिणाम >> B.134 - P. 603 (4251) शरीरप्रयोगकरण >> B.134 - P. 603 (4252) शरीरमरण >> B.42 - P. 397 (4253) शरीरसम्पदा : आरोह-परिणाह आदि >> B.135 - P. 196 (4254) शल्य को समाप्त करने वाला ही श्रमण होता है >> B.90 - P. 437 (4255) शल्योद्धारण आवश्यक : अश्ववत् प्रस्थान >> B.135 - P. 108 (4256) शश शृंग >> B.49 - P. 130 (4257) शस्त्र परिणत >> B.49 - P. 131 (4258) शांतिनाथ जिनालय (उपरना माळे), अजितनाथनी पोळ (चोखावटीयानी पोळ), पाटण >> B.53 - P. 168 (4259) शांतिनाथ जिनालय (उपरना माळे), शाहपाडो, पाटण >> B.53 - P. 239 (4260) शांतिनाथ जिनालय, देरासरवाळी पोळ-धनासुथारनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 141 (4261) शांतिनाथ जिनालय, नागजी भुधरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 67 (4262) शांतिनाथ जिनालय, वखारनो पाडो, पाटण >> B.53 - P. 74 (4263) शांतिनाथ जिनालय, सिद्धचक्रनी पोळ, पाटण >> B.53 - P. 135 (4264) शांतिनाथ जिनालय, सोदागरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 103 (4265) शांतिनाथचरित्र, विवाह पडल, साधुप्रतिक्रमणसूत्र, भावप्रकरण बालावबोध >> B.6 - P. 340 (4266) शामळा पार्श्वनाथ जिनालय (उपरना माळे), अदुवसीनो पाडो, पाटण >> B.53 - P. 121 (4267) शामळा पार्श्वनाथ जिनालय, लांबेश्वरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 138 (4268) शारीरिक कारण होने पर स्वाध्याय निषेध >> B.90 - P. 66, 66 (4269) शिक्षा प्राप्त न होने के पांच कारण >> B.90 - P. 93, 93 (4270) शिखरनल >> B.42 - P. 402 (4271) शिखरिन् >> B.85 - P. 435 (4272) शिथिलीकरण >> B.49 - P. 132 (4273) शिल्पीना

दोहलाओनुं संपूरण, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.162 - P. 88 (4274) शिवपुरनगर सझाय >> B.6 - P. 99 (4275) शिवानन्दा का गृहीधर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 299 (4276) शिवानन्दा का भगवान को वंदन करने के लिए जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 299 (4277) शिष्य के अपहरण का या उसके भाव परिवर्तन का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 306, 307 (4278) शिष्य के करणीय कार्य >> B.90 - P. 82, 82 (4279) शिष्य के प्रकार : पारिणामिक आदि >> B.135 - P. 4 (4280) शिष्य बनाने के लिए गौशालक ने पुनः प्रार्थना की और भगवान ने अनुमति दी- गौशालक का साथ विहरण >> B.95 - P. 397 (4281) शुं तमने खबर छे, भुंकप शा कारणे आवे छे ? >> B.56 - P. 249, 415 (4282) शुक्लवृन्त >> B.111 - P. 95 (4283) शुक्ल तृण - मणियों का इष्टतर शुक्लवर्ण >> B.96 - P. 133 (4284) शुक्ल लेश्या के परिणाम >> B.134 - P. 561 (4285) शुभ आत्मपरिणाम से निर्जरा >> B.69 - P. 166 (4286) शुंखलित दोष >> B.99 - P. 398 (4287) शृंग >> B.99 - P. 398 (4288) शृंगारमंजरी >> B.50 - P. 440 (4289) शृंगारमंजरी रास >> B.1 - P. 72 / B.2 - P. 75, 75 (4290) शृंगाररसमाला >> B.2 - P. 387 (4291) शृंगारवृं >> B.46 - P. 491 (4292) शृंगारशत >> B.50 - P. 440 (4293) शृङ्गनादित >> B.60 - P. 285 (4294) शेचुंज आदिनाथ भास >> B.2 - P. 363 (4295) शेचुंजा आदिनाथ भास >> B.2 - P. 362 (4296) शेचुंजा तीर्थ भास >> B.2 - P. 363 (4297) शैलविचारिन् >> B.85 - P. 507 (4298) शैलेशीकरण >> B.49 - P. 114 (4299) श्रद्धालु जिनदत्त को मयूरी की प्राप्ति हुई और इस उदाहरण से सम्यक्त्व की सिद्धि >> B.95 - P. 447 (4300) श्रमण की अवहेलना के परिणाम >> B.134 - P. 622 (4301) श्रमण के ठहरने योग्य स्थान >> B.90 - P. 632 (4302) श्रमण के मृत शरीर को परठने की और उपकरणों को ग्रहण करने की विधि >> B.90 - P. 721 (4303) श्रमण को देखकर जातिस्मरण ज्ञान हुआ >> B.95 - P. 115 (4304) श्रमण निर्ग्रन्थ की तेजोलेश्या की उत्पत्ति के कारण >> B.93 - P. 141 (4305) श्रमण निर्ग्रन्थों में क्रियाओं का प्ररूपण >> B.93 - P. 196 (4306) श्रमणधर्म 10 (चरण 70) >> B.82 - P. 256 (4307) श्रमणार्थ स्थापित आहार-ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 558 (4308) श्राद्धविधि प्रकरण बालावबोध >> B.1 - P. 389 (4309) श्रावकधर्मप्रकरणबृहदवृत्ति >> B.73 - P. 195 (4310) श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनी वृत्तिओनी नोंध, लेखक - रत्नसंचयसूरिजी >> B.162 - P. 75 (4311) श्रीकरण >> B.50 - P. 441 (4312) श्रीकरण(वाचक) >> B.50 - P. 441 (4313) श्रीकृष्ण ने चिन्ता का कारण पूछा >> B.95 - P. 26 (4314) श्रीकृष्ण ने द्वारिका के विनाश का कारण पूछा >> B.95 - P. 208 (4315) श्रीकृष्ण ने पराजय कारण कहा और युद्ध किया >> B.95 - P. 201 (4316) श्रीगरण >> B.46 - P. 492 (4317) श्रीगरणु >> B.46 - P. 492 (4318) श्रीगुरुणां स्वाध्याय >> B.1 - P. 251 (4319) श्रीतज्ञानवरण >> B.42 - P. 414 (4320) श्रीपाल रास बालावबोध, षट्त्रिंशिका स्तवन >> B.6 - P. 342 (4321) श्रीभक्तामरनी रचना वखते मात्र श्रीमानतुंगसूरि म. नी बेडीओ तुटी हती ?, लेखक- शीलचन्द्रविजय >> B.162 - P. 60 (4322) श्रीभगवतीसूत्रनी केटलीक जाणवा जेवी वातो, लेखक - हेमहर्षविजय >> B.162 - P. 96 (4323) श्रीमज्जनपतिसूरिणांगीतम् >> B.73 - P. 132 (4324) श्रीसिद्धर्षिगणि महाराज, समाधान - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 46 (4325) श्रुगालों ने अंग संकुचित न करने वाले कछुये को मार डाला >> B.95 - P. 448 (4326) श्रुतकरण : बद्ध-अबद्धश्रुत >> B.134 - P. 642 (4327) श्रुतज्ञान के नाश के कारण >> B.134 - P. 429 (4328) श्रुतज्ञानावरण >> B.49 - P. 133 / B.60 - P. 288 (4329) श्रुतमानवशात्तमरण >> B.99 - P. 404 (4330) श्रुतसंविभाग - एक नानकडा सरोवरनी कृति (अग्रलेख), लेखक - शीलचन्द्रसूरिजी >> B.145 - P. 1 (4331) शृंग >> B.117 - P. 42 (4332) शृंगार कवित्त >> B.133 - P. 44 (4333) शृंगार मंजरी या शीलवती चरित्र >> B.74 - P. 166, 562 (4334) शृंगार रस की उत्पत्ति और लक्षण >> B.134 - P. 221 (4335) शृंगार रसमाला >> B.74 - P. 558 (4336) शृंगारप्रकाश >> B.73 - P. 64 (4337) शृंगारमंजरी >> B.73 - P. 64 (4338) शृंगारमंजरी रास >> B.2 - P. 75 (4339) शृंगाल >> B.111 - P. 92 (4340) शृंगिरीटी >> B.111 - P. 92 (4341) श्रेणि में ध्यान विचारणा >> B.69 - P. 284 (4342) श्रेणिक का तालपुट विषभक्षण और मरण >> B.95 - P. 430 (4343) श्रेणिक का प्रसन्न होना और क्षमायाचना करना >> B.95 - P. 114 (4344) श्रेणिक का बंधन छेदन करने के लिए कूणिक का जाना >> B.95 - P. 430 (4345) श्रेणिक का राजगृह नगर को सुशोभित करने का आदेश और यान आदि लाने का आदेश >> B.95 - P. 422 (4346) श्रेणिक ने चिन्ता का कारण कहा >> B.95 - P. 74 (4347) श्रेणिक ने चिन्ता का कारण पूछा >> B.95 - P. 73 (4348) श्रेणिक ने पुत्र की वेदना का निवारण किया >> B.95 - P. 429 (4349) श्रेणिक ने महान् दुष्कर तप करने वाले के सम्बन्ध में पूछा >> B.95 - P. 102 (4350) श्रेणिक राजा की नन्दा आदि देवियों का श्रमणी होना और सिद्ध गति प्राप्त करना >> B.95 - P. 233 (4351) श्रेणिक-भार्या धारिणी >> B.95 - P. 69 (4352) श्रेणिचारण >> B.42 - P. 415 / B.60 - P. 289 / B.82 - P. 317 (4353) श्रेणीचारण >> B.99 - P. 405 (4354) श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रहावरणीय >> B.99 - P. 407 (4355) श्रोत्रेन्द्रियेहाज्ञानावरणीय >> B.99 - P. 407 (4356) श्रवभ्रूण >> B.99 - P. 407 (4357) श्रृंगट >> B.119 - P. 270, 270 (4358) षटस्थान प्रकरण संधि >> B.74 - P. 155 (4359) षट्त्रिंशिका स्तवन >> B.6 - P. 342, 342, 342, 342 (4360) षड जीवनि काय - हिंसाकरण प्रायश्चित्त >> B.90 - P. 248, 250 (4361) षडशीति (चौथो कर्म ग्रन्थ) बाला >> B.74 - P. 335 (4362) षडावश्यकविवरणसंक्षेपार्थ >> B.73 - P. 603 (4363) षष्टिशतकविवरण >> B.73 - P. 605 (4364) षोडशक-प्रकरणनी एक गाथाना तात्पर्य विशेष विचारणा, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.143 - P. 3 (4365) षोडशकारण >> B.42 - P. 417 (4366) संकलिष्ट लेश्यामरण >> B.60 - P. 291 (4367) संक्लिश्यमरण

>> B.99 - P. 451 (4368) संक्लिष्ट परिणाम और स्थितिबंध >> B.134 - P. 191 (4369) संखडी में भोजन करने से उत्पन्न दोष >> B.90 - P. 615 (4370) संख्या द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 300 (4371) संगमना उपसर्ग पछी इन्द्रनुं कृत्य, जिज्ञासा - न्यायरत्नविजय >> B.161 - P. 87 (4372) संग्रह करने का निषेध >> B.90 - P. 599 (4373) संग्राम में वरुण का अभिग्रह >> B.95 - P. 358 (4374) संघाटकने छोड़ीने एकला गोचरी जवाना कारणभूत दोषो, लेखक - तारकचन्द्रसागर >> B.148 - P. 3 (4375) संघातश्रुतावरणीय >> B.99 - P. 455 (4376) संघातसमासावरणीयकर्म >> B.99 - P. 455 (4377) संघारण >> B.46 - P. 511 (4378) संज्ञाओं के अर्थ तथा उत्पत्ति के कारण >> B.134 - P. 654 (4379) संज्ञाद्रव्यकरण >> B.99 - P. 456 (4380) संज्ञेरण >> B.46 - P. 512 (4381) संधारण पङ्ना बालावबोध >> B.74 - P. 617 (4382) संधारापोरिसीनी विधि, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 62 (4383) संनिधिकरण >> B.49 - P. 121 (4384) संन्यास मरण >> B.49 - P. 122 (4385) संप्रधारण संज्ञा >> B.49 - P. 117 (4386) संबोधप्रकरण - गाथा - 140 नो पदार्थ, जिज्ञासा - तीर्थतिलकविजय >> B.161 - P. 86 (4387) संभरण >> B.43 - P. 402 (4388) संभवनाथ जिनालय, कामेश्वरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 55 (4389) संभवनाथ, जिनालय, नागजी भुधरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 67 (4390) समिश्रण >> B.49 - P. 117 (4391) संयम के परिणाम >> B.134 - P. 658 (4392) संयुक्त अधिकरण >> B.82 - P. 144 (4393) संयुक्ताधिकरण >> B.99 - P. 462 (4394) संयुक्ताधिकरण अतिचार >> B.69 - P. 221 (4395) संयोग अधिकरण >> B.69 - P. 173 (4396) संयोगाधिकरण >> B.42 - P. 420 (4397) संयोगाधिकरण भक्ति >> B.49 - P. 45 (4398) संयोजनाधिकरणिकी >> B.99 - P. 463 (4399) संवर (विनिवर्तना) के परिणाम >> B.134 - P. 133 (4400) संवरणम् >> B.65 - P. 122 (4401) संवेद के परिणाम >> B.134 - P. 681 (4402) संव्यवहरणदोष >> B.99 - P. 468 (4403) संशयकरणी >> B.60 - P. 297 (4404) संशयकारणम् >> B.48 - P. 103 (4405) संशयनिवृत्तिकारणम् >> B.48 - P. 103 (4406) संसार स्वरूप की विचारणा से संवेग की पुष्टि >> B.69 - P. 198 (4407) संसारदावानी स्तुति एकसाथे बोलाय ते अंगे नवुं कारण, लेखक - त्यागमंडनविजय >> B.154 - P. 43 (4408) संसारनिमित्तक्रियानिवृत्तिर्भावसंवर >> B.99 - P. 187 (4409) संसारनैर्गुण्यम् >> B.65 - P. 124 (4410) संहनन, परिणाम और कर्मबंध >> B.135 - P. 164 (4411) संहरण सिद्ध >> B.49 - P. 120 (4412) सकलार्हत्स्तोत्र - 1,2 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - जैन आत्मानंद सभा, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 117 (4413) सकाम मरण >> B.134 - P. 523 / B.60 - P. 299 (4414) सकारण स्वरूप सम्पदा >> B.82 - P. 33 (4415) सगरुं >> B.46 - P. 495 (4416) सचित पृथ्वी आदि पर निषधा करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 742 (4417) सचित पृथ्वीकायिकादि पर कायोत्सर्ग करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 250, 252 (4418) सचित्तावरण >> B.42 - P. 422 (4419) सतसैयावृन्द विनोद >> B.75 - P. 313 (4420) सती विवरण चौ. >> B.133 - P. 226 (4421) सतीविवरण चोपाई >> B.6 - P. 318 (4422) सत्तरी प्रकरण बालावबोध >> B.1 - P. 361 (4423) सत्तरीकर्मग्रन्थबालावबोध >> B.73 - P. 602 (4424) सत्तरीप्रकरणबालावबोध >> B.73 - P. 600 (4425) सत्थपरिणाम >> B.85 - P. 386 (4426) सत्य-असत्य परिणतादि की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भुजों का प्ररूपण >> B.93 - P. 581 (4427) सद्दालपुत्र का गृहीधर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 334 (4428) सद्दालपुत्र का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति, और उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 341 (4429) सद्दालपुत्र द्वारा देव कथित अपनी भार्या का मारण रूप उपसर्ग सहन न होने पर कोलाहल करना और मायावी देव का आकाश में ऊपर चले जाना >> B.95 - P. 339 (4430) सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 339 (4431) सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 338 (4432) सद्दालपुत्र ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 338 (4433) सद्भाव-प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 454 (4434) सद्भूत व्यवहारनय >> B.60 - P. 301 (4435) सधारण >> B.46 - P. 497 (4436) सनत्कुमारनो रास >> B.6 - P. 29 (4437) सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची >> B.7 - P. 395 (4438) सन्मतितर्क-प्रकरण गत एक गाथाना पाठभेद अंगे मंतव्य, लेखक - विश्वचन्द्रविजय >> B.157 - P. 32 (4439) सपरुं >> B.46 - P. 498 (4440) सपिंडीकरण >> B.49 - P. 122 (4441) सप्तस्मरण >> B.74 - P. 613 (4442) सप्तस्मरण बालावबोध >> B.2 - P. 49 / B.6 - P. 342 / B.74 - P. 529 (4443) सभाशृंगार >> B.46 - P. 499 (4444) सभी तीर्थकरों ने सभी प्राण भूत जीव सत्वों की रक्षा करनी चाहिए ऐसी प्ररूपणा की है >> B.90 - P. 215, 217 (4445) समचतुरस्त्रादि 6 प्रकारना संस्थान >> B.56 - P. 469 (4446) समरणी >> B.46 - P. 500 (4447) समर्थकारण >> B.49 - P. 116 (4448) समवशरण >> B.49 - P. 116 (4449) समवशरण पाठ या केवल ज्ञान कल्याण चर्चा >> B.74 - P. 418 (4450) समवशरण विचार गर्भित स्तवन >> B.75 - P. 259 (4451) समवशरण स्तोत्र >> B.74 - P. 141 (4452) समवसरण >> B.8 - P. 23 / B.42 - P. 426 / B.46 - P. 500 / B.135 - P. 589 / B.85 - P. 393 / B.60 - P. 303 (4453) समवसरण : तीर्थकर का प्रवेश >> B.135 - P. 590 (4454) समवसरण : देवकृत >> B.135 - P. 590 (4455) समवसरण : लोकत्रयी का आगमन >> B.135 - P. 590 (4456) समवसरण की मर्यादा-व्यवस्था >> B.135 - P. 590 (4457) समवसरण मंगल >> B.133 - P. 163 (4458) समवसरण में जाते हुए मद्रुक का अन्य तीर्थियों के साथ अस्तिकाय विषयक संलाप >> B.95 - P. 376 (4459) समवसरण सम्भोज >> B.60 - P. 303

(4460) समवसरण-गम्यता, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.162 - P. 36 (4461) समवसरण-रचना : कब ? कैसे ? >> B.135 - P. 590 (4462) समवसरणमां देशनाश्रवण करवा जलचर जीवो, जिज्ञासा - शीलचन्द्रविजय >> B.159 - P. 67 (4463) समवसरणमां देशनाश्रवण करवा जलचर जीवो, समाधान - राजहेमविजय >> B.162 - P. 104 (4464) समवसरणस्तव-अंतर्गत केटलांक माप विशेष विचारणा, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्र-कृतनिश्चयविजय >> B.162 - P. 118 (4465) समवसरणस्तव-अंतर्गत केटलांक माप विशेष विचारणा, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.159 - P. 25 (4466) समवसरणस्थ देशना आपता >> B.56 - P. 420 (4467) समवायि कारण >> B.49 - P. 116 (4468) समवायिकारणम् >> B.48 - P. 111 (4469) समाचरण >> B.46 - P. 500 (4470) समाचरण में स्वलना : असमाधिस्थान >> B.135 - P. 603 (4471) समाधि करण >> B.49 - P. 119 (4472) समाधि प्राप्ति के हेतु और परिणाम >> B.135 - P. 231 (4473) समाधि मरण >> B.49 - P. 115 (4474) समाधिमरण >> B.99 - P. 430 (4475) समानाधिकरणत्वम् >> B.48 - P. 113 (4476) समिति (करण 70) >> B.82 - P. 300 (4477) समितियों में द्वादशांग का समवतरण >> B.134 - P. 463 (4478) समीरणगति >> B.42 - P. 427 (4479) समुद्र में जन्म और परिणय आदि >> B.95 - P. 114 (4480) समोसरण >> B.46 - P. 502 / B.85 - P. 393 (4481) सम्भोज-प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 141 (4482) सम्मिश्रण >> B.82 - P. 143 (4483) सम्यक्त्व अथवा मूल बारव्रत विवरण बारव्रत टीप >> B.133 - P. 47, 97 (4484) सम्यक्त्व के परिणाम >> B.134 - P. 684 (4485) सम्यक्त्वना स्थिरीकरणार्थे काउसगग, जिज्ञासा - तारकचन्द्रसागर >> B.147 - P. 20 (4486) सम्यक्त्वमूल बार व्रतविवरण >> B.6 - P. 114, 114 (4487) सम्यक्त्वमूल बारव्रत विवरण >> B.6 - P. 128 (4488) सम्यग्दर्शन गुण की निर्देश आदि छह द्वारों से विचारणा >> B.69 - P. 23 (4489) सम्यग्दर्शन गुण की सत् आदि द्वारों से विचारणा >> B.69 - P. 24 (4490) सरण >> B.46 - P. 503 (4491) सरणाइपंजर >> B.46 - P. 503 (4492) सरणाति >> B.46 - P. 503 (4493) सरणि >> B.46 - P. 503 (4494) सरनिकर >> B.46 - P. 503 (4495) सरिसवों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा >> B.95 - P. 41 (4496) सरं >> B.46 - P. 506 (4497) सरंजा >> B.43 - P. 501 (4498) सर्व द्वीप-समुद्रों की संक्षिप्त विचारणा >> B.96 - P. 415 (4499) सर्व भंडोपकरण सहित गमन विधि >> B.90 - P. 712 (4500) सर्व-रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 467 (4501) सर्वकरणोपशामना >> B.99 - P. 444 (4502) सर्वघाति रसस्पर्धक देशघाति में परिणत >> B.134 - P. 484 (4503) सर्वज्ञानावरण >> B.99 - P. 444 (4504) सर्वतः कुव्यापारनिषेधपोषध >> B.99 - P. 444 (4505) सर्वभूतशरण्य >> B.42 - P. 430 (4506) सर्वविपरिणामना >> B.99 - P. 445 (4507) सर्वावधिमरण >> B.99 - P. 446 (4508) सर्वर्णकारिणी >> B.42 - P. 432 (4509) सवारं >> B.46 - P. 507 (4510) सवृन्त पात्र धारण निषेध >> B.90 - P. 699 (4511) सवृन्त पात्र धारण विधान >> B.90 - P. 699 (4512) सशल्यमरण >> B.99 - P. 449 (4513) सशल्यमरण से अनंत संसार >> B.135 - P. 108 (4514) सहकारी कारण >> B.49 - P. 114 (4515) सहकारीकारण >> B.42 - P. 432 (4516) सहयोग-प्रत्याख्यान के परिणाम >> B.134 - P. 454 (4517) सहवारं >> B.46 - P. 507, 509 (4518) सहसकरण >> B.75 - P. 466 (4519) सहसानिक्षेपाधिकरण >> B.99 - P. 450 (4520) सहस्त्रकिरण >> B.42 - P. 433 (4521) सहस्त्रनयन >> B.42 - P. 433 (4522) सहस्त्रनाम पाठ >> B.133 - P. 56 (4523) सहस्रफणा पार्श्वनाथ जिनालय, लांबेश्वरनी पोछ, अमदावाद >> B.55 - P. 138 (4524) सहीयारणी >> B.46 - P. 510 (4525) सांतरं >> B.46 - P. 525 (4526) सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमां काउस्सगग 160 नवकारनो होय के 161 नवकारनो ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्रविजय >> B.155 - P. 66 (4527) सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमां काउस्सगग 160 नवकारनो होय के 161 नवकारनो ?, पत्रचर्चा - श्रुतांगचन्द्रविजय >> B.155 - P. 66 (4528) सांवत्सरिक प्रतिक्रमणमां काउस्सगग 160 नवकारनो होय के 161 नवकारनो ?, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय >> B.149 - P. 11 (4529) साकरनुं नालकेल >> B.46 - P. 516 (4530) सागरदत्त के संदेह से अण्डा नष्ट हो गया और इस उदाहरण से शंका अतिचार की सिद्धि >> B.95 - P. 446 (4531) सागरनिस्वान >> B.42 - P. 435 (4532) सागारिक का आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 625 (4533) सात नरक के नाम का कारण >> B.69 - P. 85 (4534) सात नरक पृथ्वियों की अपेक्षा विस्तार से नैरयिक प्रवेशनक में प्रवेश करने वालों के भंगों का प्ररूपण >> B.93 - P. 770 (4535) सात स्मरण बालावबोध >> B.5 - P. 384 (4536) सातवारनीसज्जाय >> B.73 - P. 478 (4537) सादि पारिणामिक >> B.134 - P. 485 / B.60 - P. 312 (4538) सादि-अनादि विस्त्रसाकरण, अजीवभावकरण >> B.135 - P. 162 (4539) साधर्मिकों को निमंत्रण >> B.134 - P. 135 (4540) साधारण >> B.42 - P. 436 / B.46 - P. 518 / B.99 - P. 479, 479 (4541) साधारण अनिसृष्ट >> B.82 - P. 277 (4542) साधारण आहार को आज्ञा लेकर बांटने की विधि >> B.90 - P. 604 (4543) साधारण गुण >> B.49 - P. 113 / B.69 - P. 160 (4544) साधारण जीव >> B.99 - P. 479 / B.60 - P. 313 (4545) साधारण धर्म >> B.69 - P. 60 (4546) साधारण धर्मज्ञानजन्यसंशय >> B.48 - P. 103 (4547) साधारण वनस्पति >> B.49 - P. 113 (4548) साधारण शरीर >> B.49 - P. 113 / B.99 - P. 480 / B.60 - P. 313 (4549) साधारण शरीर नामकर्म >> B.69 - P. 247 (4550) साधारण शरीरी >> B.134 - P. 286 (4551) साधारणकारणम् >> B.48 - P. 117 (4552) साधारणधर्मः >> B.48 - P. 117 (4553) साधारणधर्मज्ञानजन्यसंशय >> B.48 - P. 103 (4554) साधारणनाम >> B.99 - P. 480 (4555) साधारणपिण्डपातलाभसमितियोग >> B.60 - P. 313 (4556)

साधारणभक्तपानअनुज्ञातपरिभोजन >> B.60 - P. 313 (4557) साधारणशरीर नामकर्म >> B.99 - P. 480 (4558)
 साधारणशरीरनाम >> B.60 - P. 313 (4559) साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिक >> B.60 - P. 313 (4560)
 साधारणनैकान्तिकहेत्वाभासः >> B.48 - P. 117 (4561) साधु-साध्वियों का निदान करना >> B.95 - P. 423 (4562)
 साधु-साध्वी की विसंभोजिककरण-विधि >> B.135 - P. 613 (4563) साधुओं ने धर्मरूचि का समाधि-मरण कहा >> B.95 - P. 181 (4564) साध्वी उपकरण संख्या (प्रवचन सारोद्धार द्वार 62) >> B.82 - P. 14 (4565) साध्वी के पच्चीस उपकरण >> B.82 - P. 236 (4566) सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा >> B.99 - P. 482 (4567) सापेक्षकारणवाद >> B.172 - P. 358 (4568) सामानाधिकरण्यसम्बन्धः >> B.48 - P. 118 (4569) सामानाधिकरण्यम् >> B.48 - P. 118 (4570) सामायिक चारित्र ग्रहण करना >> B.95 - P. 71 (4571) सामायिक : आवरण क्षय >> B.134 - P. 694 (4572)
 सामायिकभावश्रुतग्रन्थ >> B.99 - P. 487 (4573) सायरुं >> B.46 - P. 520 (4574) सारण >> B.42 - P. 437 / B.85 - P. 415 (4575) सारण कथा >> B.138 - P. 263 (4576) सारण कुमार >> B.44 - P. 639 (4577) सारण कुमार श्रमण >> B.95 - P. 22 (4578) सारणा >> B.65 - P. 133 / B.99 - P. 489 (4579) सारणा की अनिवार्यता : प्रमादी का परित्याग >> B.135 - P. 149 (4580) सारणा-वारणा : दो दृष्टांत >> B.135 - P. 72 (4581) सारणा-वारणा का मूल्य >> B.135 - P. 72 (4582) सारणा-वारणाशून्य गच्छ गच्छ नहीं >> B.135 - P. 584 (4583) सारणि >> B.46 - P. 521 (4584) सारिग >> B.46 - P. 521, 521 (4585) सारिगलोचना >> B.46 - P. 521 (4586) सारिनर >> B.43 - P. 501 (4587) सारुं >> B.46 - P. 522 (4588) सावद्य संयुक्त आहार ग्रहण करने का निषेध >> B.90 - P. 598 (4589) साह्यरुं >> B.46 - P. 520, 524 (4590) सिंदूर प्रकरण बालावबोध >> B.5 - P. 390 (4591) सिंदूरप्रकरण बालावबोध >> B.5 - P. 375, 375 (4592) सिंहगुफावासी मुनि चोमासुं करवा क्यां गया ?, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 47 (4593) सिंहगुफावासी मुनि चोमासुं करवा क्यां गया ?, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.159 - P. 81 (4594) सिंहपुरी : (सारनाथ), उत्तरप्रदेश-बिहार-बंगाल >> B.59 - P. 184 (4595) सिद्ध जीवों संबंधी विशेष विचारणा >> B.69 - P. 298 (4596) सिद्ध भगवंतोना आठ गुण के चार गुण अने चार पर्याय ? , लेखक - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.162 - P. 97 (4597) सिद्धसेनसूरिजीना चरित्र विशे, पत्रचर्चा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.155 - P. 78 / B.157 - P. 48 (4598) सिद्धसेनसूरिजीना चरित्र विशे, लेखक - नयझ-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 40 (4599) सिद्धहेम तथा पाणिनीय व्याकरणना समाससंबंधी केटलाक मतांतरो, लेखक - सौम्यचन्द्रविजय >> B.154 - P. 58 (4600) सिद्धहेमशब्दानुशासन - मध्यमवृत्ति - 3 (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - अरिहंत आराधक ट्रस्ट, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 66 (4601) सिद्धहेमशब्दानुशासन - लघुवृत्ति (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - हेमचन्द्राचार्य ज्ञानमंदिर, शुद्धिकार - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.157 - P. 66 (4602) सिद्धांतकौमुदीना समासप्रकरणना अध्ययन-समये थयेली विचारणा, लेखक - सौम्यचन्द्रविजय >> B.153 - P. 41 (4603) सिद्धाचल गिरनार वहोरा कस्तुर बहेचरदास संघ स्तवन >> B.6 - P. 381 (4604) सिद्धाचल गिरनार संघ स्तवन >> B.6 - P. 249 / B.133 - P. 221 (4605) सिद्धार्थ आचार्य के उपदेश से विरांगद का प्रव्रज्या ग्रहण करना और ब्रह्मलोक में उत्पन्न होना >> B.95 - P. 18 (4606) सिद्धों के सान्तर-निरन्तर सिद्ध होने का प्ररूपण >> B.93 - P. 721 (4607) सिन्दूरप्रकरण >> B.73 - P. 147 (4608) सिन्दूरप्रकरणबालावबोध >> B.73 - P. 606 (4609) सिरनमन (25 आवश्यक) >> B.82 - P. 54 (4610) सिरिग >> B.43 - P. 417 (4611) सिरिणिलया >> B.85 - P. 428 (4612) सिहरिणी >> B.43 - P. 418 (4613) सिहिरिणी >> B.43 - P. 418 (4614) सीताहरण >> B.50 - P. 465 (4615) सीमंधरना 350 गाथा स्तवन >> B.6 - P. 69 (4616) सीमा-रक्षक को वश में करने आदि के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 467 (4617) सीरणी >> B.46 - P. 531 (4618) सुंदरशृंगार >> B.6 - P. 537 (4619) सुंदरिणंद >> B.85 - P. 444 (4620) सुकुमालिका का प्रव्रज्या स्वीकार करना >> B.95 - P. 187 (4621) सुकुमालिका का बाकुशिक (सदोष) निर्ग्रन्थत्व >> B.95 - P. 188 (4622) सुक्ष्म जीवोने पण शस्त्र लागे !, पत्रचर्चा - शीलचन्द्र-निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.158 - P. 98 (4623) सुख के बाह्य और अभ्यंतर कारण >> B.69 - P. 139 (4624) सुख-स्पृहा-निवारण का फल >> B.90 - P. 456 (4625) सुगंधदशमी, अनंतचतुर्दशी, रत्नत्रय, सोलकारण, अठाही, निर्दोषसप्तमी, आकाशपंचमी >> B.5 - P. 228 (4626) सुदर्शन का विनयमूल धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 39 (4627) सुदर्शन का शौचमूलक धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 39 (4628) सुदर्शन को जातिस्मरण ज्ञान और प्रव्रज्या ग्रहण >> B.95 - P. 11 (4629) सुदारुण >> B.43 - P. 422 (4630) सुदारुणी >> B.43 - P. 502 (4631) सुन्दर शृंगार >> B.74 - P. 546 (4632) सुन्दर शृंगार रसदीपिका >> B.75 - P. 67 (4633) सुन्दरनन्दा >> B.42 - P. 450 (4634) सुन्दरिनन्द >> B.85 - P. 444 (4635) सुपार्श्वनाथ जिनालय (उपरना माळे अगाशीमां), आळीपाडो, खंभात >> B.54 - P. 226 (4636) सुपार्श्वनाथ जिनालय, रामजी मंदिरनी पोळ, अमदावाद >> B.55 - P. 133 (4637) सुप्रणिधानम् >> B.65 - P. 136 (4638) सुप्रणिधि >> B.42 - P. 451 (4639) सुप्रणिहितयोगी >> B.60 - P. 317 (4640) सुबाहुकुमार का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 105 (4641) सुबाहुकुमार का जन्म और परिणय >> B.95 - P. 104 (4642) सुबुद्धि ने पुदगल का शुभाशुभ परिणमन कहा >> B.95 - P. 51 (4643) सुभद्रा सार्थवाही के मरने पर उज्जितक को घर से निकाल दिया गया >> B.95 - P. 469 (4644) सुभद्रादि कौणिक की भार्याओं का समवसरण में आना और पर्युपासना करना >> B.95 - P. 370 (4645) सुमंगल मुनि की तेजोलेश्या से विमलवाहन का मरण >> B.95 -

P. 415 (4646) सुमरण >> B.46 - P. 536 (4647) सुरनिपात >> B.42 - P. 458 (4648) सुरनूपुर >> B.42 - P. 458 (4649) सुरादेव का उपासक प्रतिमा स्वीकार करना >> B.95 - P. 321 (4650) सुरादेव का गृही धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 317 (4651) सुरादेव का प्रायश्चित्त करना >> B.95 - P. 321 (4652) सुरादेव का समाधिमरण, देवलोक में उत्पत्ति उसके बाद सिद्धगति प्राप्त करने का निरूपण >> B.95 - P. 323 (4653) सुरादेव गाथापति का समवसरण में जाना और धर्म श्रवण करना >> B.95 - P. 317 (4654) सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने छोटे पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 319 (4655) सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने बड़े पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 318 (4656) सुरादेव ने देवता द्वारा किये गये अपने मझले पुत्र के मारने का उपसर्ग सम्यक् प्रकार से सहन किया >> B.95 - P. 319 (4657) सुरिदत्त >> B.85 - P. 480 (4658) सुरिदो >> B.46 - P. 537 (4659) सुवर्णी >> B.46 - P. 538, 538 (4660) सुविचारणा >> B.48 - P. 123 (4661) सुविधिनाथ जिनालय, भद्रकरनगर सोसायटी, पाटण >> B.53 - P. 270 (4662) सुसेण सेनापति द्वारा सिंहल आदि देशों पर विजय प्राप्त करना >> B.95 - P. 122 (4663) सुस्वरनाम >> B.99 - P. 499 / B.60 - P. 318, 318, 318, 318 (4664) सुस्वरनिर्घोषा >> B.85 - P. 489 (4665) सुस्सरणिगघोसा >> B.85 - P. 489 (4666) सुसद्वचरित्रना पर्यायार्थ >> B.5 - P. 384 (4667) सुहिरणिका >> B.119 - P. 297, 297 (4668) सुहिरणिया >> B.119 - P. 296, 297, 296, 297 (4669) सुहिरणिका >> B.119 - P. 296, 296 (4670) सूक्ष्म अद्धा पल्योपम का उदाहरणपूर्वक स्वरूप प्ररूपण >> B.96 - P. 706 (4671) सूक्ष्म उद्धार पल्योपम का उदाहरण सहित स्वरूप प्ररूपण >> B.96 - P. 705 (4672) सूक्ष्मदृष्टि से बंध के 2 ही कारण हैं >> B.69 - P. 230 (4673) सूक्ष्मपरिणामी स्कंध >> B.69 - P. 147 (4674) सूदनकरण >> B.46 - P. 542 (4675) सूरआवरण >> B.85 - P. 498 (4676) सूरण >> B.43 - P. 424 / B.119 - P. 298, 298 (4677) सूरणकंद >> B.119 - P. 298, 298 (4678) सूरणकंद अनन्तकाय >> B.82 - P. 105 (4679) सूरणय >> B.43 - P. 424 (4680) सूरिकन्ता ने विष प्रयोग किया, प्रदेशी राजा का समाधिमरण और सूर्याभिदेव के रूप में उपपात >> B.95 - P. 286 (4681) सूर्य के तेज को अवरुद्ध करने वाले पर्वत >> B.96 - P. 499 (4682) सूर्यशृंग >> B.85 - P. 452, 498 (4683) सूर्यसहस्रनाम स्तोत्र >> B.74 - P. 21 (4684) सूर्याचरण >> B.42 - P. 466 (4685) सूर्याभिदेव का महावीर वंदन के लिए संकल्प. और उचित कार्य करने के लिए आभियोगिक देव को भोजना >> B.95 - P. 246 (4686) सूर्यावरण >> B.85 - P. 498 (4687) सूर्यो के संचरण क्षेत्र >> B.96 - P. 521 (4688) सूर्योदयास्त के सम्बन्ध में शंका होने पर आहार करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 478 (4689) सेलग का गृहस्थ धर्म स्वीकार करना >> B.95 - P. 38 (4690) सोदाहरण व्यावहारिक उद्धार पल्योपम के स्वरूप का निरूपण >> B.96 - P. 704 (4691) सोमा का श्रावक धर्म-ग्रहण करना >> B.95 - P. 232 (4692) सोमिल का काष्ठ मुद्रा से मुखबन्धन करके महाप्रस्थान करना >> B.95 - P. 244 (4693) सोमिल का श्रावक धर्म ग्रहण करना >> B.95 - P. 362 (4694) सोमिल का संलेखना करना और शुक्र महाग्रह देवरूप में होना >> B.95 - P. 246 (4695) सोमिल ब्राह्मण का समवसरण में जाना >> B.95 - P. 360 (4696) सोलहकरण रास >> B.74 - P. 146 (4697) सोलहकरणपूजा >> B.73 - P. 288 (4698) सोलहकारणरास >> B.73 - P. 288 (4699) सोलहकरणव्रतरास >> B.73 - P. 380 (4700) सोवीरिणी >> B.43 - P. 428 (4701) सोव्रण >> B.46 - P. 547 (4702) सोव्रण >> B.46 - P. 547, 547 (4703) सोव्रणवान >> B.46 - P. 547 (4704) स्कंध की उत्पत्ति के कारण >> B.69 - P. 147 (4705) स्कंधकरणी >> B.82 - P. 238 (4706) स्कंधों में स्पर्शादि की विचारणा >> B.69 - P. 147 (4707) स्तव-स्तुति के परिणाम >> B.134 - P. 715 (4708) स्तूपकरण्ड >> B.84 - P. 395 (4709) स्तेनाहरण >> B.49 - P. 126 (4710) स्त्यानर्द्धि के पांच उदाहरण >> B.134 - P. 181 (4711) स्त्यानर्द्धिदर्शनावरण >> B.69 - P. 235 (4712) स्त्यानर्द्धिनुं लक्षण एकेन्द्रियमां, जिज्ञासा - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 71 (4713) स्त्रीवेद में श्रेणि आरम्भ करने वाले की प्रक्रिया >> B.82 - P. 375, 382 (4714) स्थण्डिल समाचारी के पालन नहीं करने के प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 729 (4715) स्थविर-उपकरण संख्या (प्रवचन सारोद्धार द्वार 61) >> B.82 - P. 14 (4716) स्थविरकल्पियों के उपकरण की संख्या >> B.82 - P. 226 (4717) स्थविरकृत वन्दना से प्रेरणा >> B.135 - P. 189 (4718) स्थावरनाम >> B.60 - P. 323 (4719) स्थावरनामकर्म >> B.99 - P. 526 (4720) स्थितलेश्य मरण >> B.60 - P. 324 (4721) स्थितिकरण >> B.42 - P. 471 / B.49 - P. 127 / B.99 - P. 527 (4722) स्थितिविपरिणामना >> B.99 - P. 529 (4723) स्थित्यावीचिकामरण >> B.99 - P. 529 (4724) स्थिरनाम >> B.60 - P. 324 (4725) स्थिरनामकर्म >> B.99 - P. 530 (4726) स्थिरीकरण >> B.99 - P. 530 / B.60 - P. 324 / B.82 - P. 120 (4727) स्थिरीकरणम् >> B.65 - P. 138 (4728) स्थुलिभद्रजी मित्रना घरे, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.159 - P. 34 (4729) स्थूल ऋजुसूत्रनय >> B.172 - P. 362 (4730) स्थूल परिग्रह परिणाम व्रत के अतिचार >> B.82 - P. 139 (4731) स्थूल ऋजुसूत्रनय >> B.99 - P. 530 (4732) स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहावरणीय >> B.99 - P. 533 (4733) स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रहावरणीय >> B.99 - P. 533 (4734) स्पर्शनेन्द्रियेहावरणीय >> B.99 - P. 534 (4735) स्मरण >> B.49 - P. 125 / B.99 - P. 534 / B.172 - P. 363 (4736) स्मरणमैथुनम् >> B.48 - P. 126 (4737) स्मरणम् >> B.65 - P. 138 (4738) स्मरणाभास >> B.99 - P. 534 (4739) स्मरणी >> B.46 - P. 549 (4740) स्मरणा आपातकटु : गुटिकांजन दृष्टांत >> B.135 - P. 150 (4741) स्मृति विस्मरण >> B.82 - P. 141 (4742) स्मृतिविस्मरण >> B.82 -

P. 145 (4743) स्मृत्याभास (स्मरणाभास) >> B.172 - P. 364 (4744) स्व-पर का नियंत्रण करने की विवक्षा से पुरुषों के चतुर्भुजों का प्ररूपण >> B.93 - P. 586 (4745) स्वकृत संहरण >> B.99 - P. 536 (4746) स्वच्छन्दयतिपरिणामः >> B.65 - P. 139 (4747) स्वजन शरणदाता नहीं होते >> B.90 - P. 454 (4748) स्वजाति-उपचरित-असदभूत व्यवहारनय >> B.99 - P. 537 (4749) स्वतन्त्रोच्चारणम् >> B.48 - P. 127 (4750) स्वदेहपरितापकारिणी क्रिया >> B.99 - P. 537 (4751) स्वधर्मी निर्ग्रन्थ को आवास न देने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 665 (4752) स्वधर्मी निर्ग्रन्थों को आवास न देने का प्रायश्चित्त सूत्र >> B.90 - P. 665 (4753) स्वप्न आने के कारण >> B.134 - P. 68 (4754) स्वप्नपाठकों को निमंत्रण दिया >> B.95 - P. 70 (4755) स्वभाव परिणाम >> B.49 - P. 128 (4756) स्वप्नपूरण >> B.99 - P. 539 (4757) स्वयम्भूरण समुद्रगत चन्द्र-सूर्यो के चन्द्र-सूर्य द्वीपों का प्ररूपण >> B.96 - P. 584 (4758) स्वरनिमित्त >> B.99 - P. 540 / B.60 - P. 328 (4759) स्वरुपाचरण चारित्र्य >> B.49 - P. 128 (4760) स्वरूपयोग्यत्वकारणता >> B.48 - P. 129 (4761) स्वलिंग द्वार से सिद्धों की विचारणा >> B.69 - P. 299 (4762) स्वस्थितिकरण >> B.99 - P. 542 (4763) स्वाध्याय - 'स्व'ना पृथक्करणनुं साधन (अग्रलेख), लेखक - शीलचन्द्रसूरिजी >> B.149 - P. 1 (4764) स्वाध्याय के परिणाम >> B.134 - P. 723 (4765) हंश ज हरं >> B.46 - P. 555 (4766) हजारों देवों ने नागकुमार को भरत की शरण में जाने के लिए कहा >> B.95 - P. 127 (4767) हरण >> B.43 - P. 503 / B.46 - P. 552 (4768) हरणकमेषि >> B.46 - P. 552 (4769) हरणगमेषि >> B.46 - P. 552 (4770) हरणम् >> B.65 - P. 139 (4771) हरणी >> B.46 - P. 552 (4772) हरनारायण शर्मा >> B.74 - P. 308 (4773) हरनिश >> B.46 - P. 552 (4774) हरिण >> B.111 - P. 97 (4775) हरिणगमेषी कथा >> B.141 - P. 65 (4776) हरिणाश्रवा >> B.42 - P. 478 (4777) हरिणी संवाद >> B.3 - P. 83, 83 (4778) हरिणगमेषि >> B.85 - P. 526 (4779) हरिणैगमेषी देव द्वारा गर्भ संहरण प्रक्रिया का प्ररूपण >> B.93 - P. 687 (4780) हरिनन्दन >> B.74 - P. 443 (4781) हरिनन्दी >> B.44 - P. 714 (4782) हरिनाग >> B.42 - P. 478 (4783) हरिनाम मिश्र >> B.75 - P. 180 (4784) हरिनी संवाद >> B.74 - P. 231 (4785) हरिनैगमेषिन् >> B.85 - P. 526 (4786) हरिनैगमेषी सामान्य देव नथी, लेखक - राजदर्शनविजय >> B.150 - P. 14 (4787) हरिविजयसूरिनावारमास >> B.73 - P. 356 (4788) हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास >> B.64 - P. 614 (4789) हस्तिकर्ण के हयकर्ण ?, लेखक - निर्ग्रन्थचन्द्रविजय >> B.154 - P. 49 (4790) हस्तिशीर्य नगर में सांयात्रिक (नौका द्वारा व्यापार करने वाले वणिज) >> B.95 - P. 455 (4791) हाथा-तोरण >> B.46 - P. 556, 556 (4792) हाथीतोरण >> B.46 - P. 556 (4793) हालरं >> B.46 - P. 557 (4794) हिंसादि से परलोक में करुण विपाक >> B.69 - P. 195 (4795) हियवरणि >> B.46 - P. 558 (4796) हिरणी >> B.46 - P. 558 (4797) हिरण्णनाभ >> B.85 - P. 534 (4798) हिरण्णवय >> B.85 - P. 534 (4799) हिरण्य >> B.99 - P. 546 (4800) हिरण्य सुवर्ण >> B.49 - P. 65 (4801) हिरण्य-सुवर्ण >> B.82 - P. 139 (4802) हिरण्य-सुवर्णप्रमाणातिक्रम अतिचार >> B.69 - P. 218 (4803) हिरण्य-स्वर्णप्रमाणातिक्रम >> B.42 - P. 483 (4804) हिरण्यकशिपु >> B.42 - P. 482 (4805) हिरण्यकुम्भ >> B.42 - P. 482 (4806) हिरण्यगर्भ >> B.42 - P. 482 / B.99 - P. 547 (4807) हिरण्यगर्भः >> B.48 - P. 132 (4808) हिरण्यनाभ >> B.42 - P. 482 / B.85 - P. 534 (4809) हिरण्यनाभि >> B.42 - P. 483 (4810) हिरण्यमती >> B.42 - P. 483 (4811) हिरण्यरोम >> B.42 - P. 483 (4812) हिरण्यलोमा >> B.42 - P. 483 (4813) हिरण्यवती >> B.42 - P. 483 (4814) हिरण्यवर्ण >> B.42 - P. 483 (4815) हिरण्यवर्मा >> B.42 - P. 483 (4816) हिरण्यसुवर्णप्रमाणातिक्रम >> B.60 - P. 331 (4817) हिरिब >> B.43 - P. 436 (4818) हीई-सारणि >> B.46 - P. 559 (4819) हीरणा >> B.43 - P. 436 (4820) हीरनन्दन >> B.74 - P. 583 (4821) हीरविजय सूरि सूरिनो वारबोल रास >> B.74 - P. 62, 53 (4822) हीरविजयसूरिना बारमास >> B.1 - P. 358 (4823) हेम व्याकरण भाषा टीका >> B.133 - P. 187 (4824) हेमन्त और ग्रीष्म ऋतु में निर्ग्रन्थो की वसतिवास मर्यादा >> B.90 - P. 634 (4825) हेमन्त और ग्रीष्म में वस्त्र ग्रहण करने का विधान >> B.90 - P. 667 (4826) हेमवत और हैरण्यवत वर्ष में चार महानदियाँ >> B.96 - P. 316 (4827) हेमव्याकरण भाषाटीका >> B.75 - P. 411 (4828) हेरणां >> B.46 - P. 563 (4829) हेरणां हेरे >> B.46 - P. 563 (4830) हेरणवय >> B.85 - P. 538 (4831) हेरिब >> B.43 - P. 438 (4832) हेरं >> B.46 - P. 563 (4833) हैमव्याकरण वृहदवृत्ति दीपिका >> B.74 - P. 237 (4834) हैरण्यवत >> B.42 - P. 485 / B.85 - P. 534, 538 (4835) हैरण्यवत क्षेत्र >> B.69 - P. 100 (4836) हैरण्यवतवर्ष >> B.60 - P. 332 (4837) हैरण्यवतवर्ष के अवस्थिति और प्रमाण >> B.96 - P. 210 (4838) हैरण्यवतवर्ष के नाम का हेतु >> B.96 - P. 211 (4839) होरण >> B.43 - P. 439

Book Code Information



B.1 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ 1 (1)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



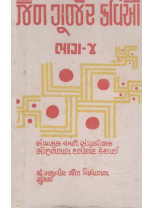
B.2 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ (2)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



B.3 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ (3)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



B.4 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ (4)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



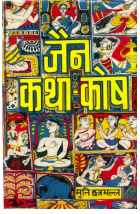
B.5 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ (5)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



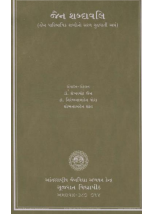
B.6 જૈન ગુર્જર કવિઓ , ભાગ (6)
મોહનલાલ દેસાઈ (સંગ્રાહક) , જયંત કોઠારી
(સંપાદક)

મહાવીર જૈન વિદ્યાલય



B.7 જૈન કથા કોષ
મુનિ છત્રમલ્લ (લેખક) , મુનિ નગરાજ
(સંપાદક)

આદર્શ સાહિત્ય સંઘ પ્રકાશન



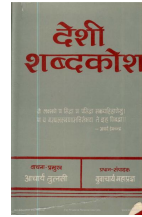
B.8 જૈન શબ્દાવલિ
ડૉ. શેખરચંદ્ર જૈન, ડૉ. નિરંજનાબહેન વોરા,
શોભનાબહેન શાહ (સંપાદક)

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ



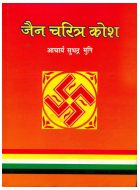
B.42 જૈન પુરાણ કોષ
પ્રો. પ્રવીણચંદ્ર જૈન, ડૉ. દરબારીલાલ કોઠીયા
(સંપાદક), ડૉ. કસ્તુરચન્દ્ર સુમન (સહ-સંપાદક)

જૈનવિદ્યા સંસ્થાન



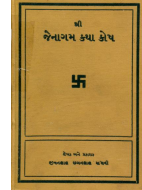
B.43 દેશી શબ્દકોષ
આચાર્ય મહાપ્રજ્ઞ (સંપાદક), મુનિ દુલહરાજ
(સંપાદક)

જૈન વિશ્વ ભારતી , લાડનૂં



B.44 જૈન ચરિત્ર કોષ
આચાર્ય શ્રી સુભદ્ર મુનિ જી મહારાજ(લેખક),
મુનિરત્ન શ્રી અમિત મુનિજી મહારાજ(સંપાદક)

યુનિવર્સિટી પબ્લિકેશન, દિલ્લી



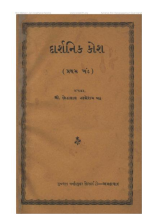
B.45 જૈનાગમ કથા કોષ
જીવનલાલ છુગનલાલ સંઘવી(લેખક)

જીવનલાલ છુગનલાલ સંઘવી - અમદાવાદ



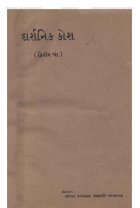
B.46 મધ્યકાલીન ગુજરાતી શબ્દકોષ
જયંત કોઠારી (સંપાદક)

કાલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય નવમ
જન્મશતાબ્દી સ્મૃતિ સંસ્કાર શિક્ષણ નિધિ



B.47 દાર્શનિક કોષ , સંડ (1)
છોટાલાલ નરભેરામ ભટ્ટ (સંપાદક)

ગુજરાત વર્નાક્યુલર સોસાયટી



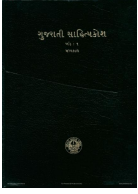
B.48 દાર્શનિક કોષ , સંડ (2)
છોટાલાલ નરભેરામ ભટ્ટ (સંપાદક)

ગુજરાત વર્નાક્યુલર સોસાયટી



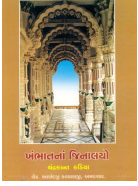
B.49 Glossary of Jaina Terms
Dr. N. L. Jain (Editor)

Jain International Ahmedabad



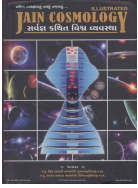
B.50 गुजराती साहित्यकोश (खंड-1, मध्यकाल) (1)
जयंत कोटारी, जयंत गाडीत चंद्रकांत शेठ(संपादक)

गुजराती साहित्य परिषद, अमदावाद



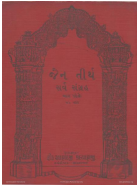
B.54 खंभातना जिनालयो
चंद्रकांत कडिया (लेखक)

शेठ आनंदजी कल्याणजी, अमदावाद



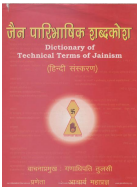
B.56 Jain Cosmology (सर्वज्ञ कथित विश्व व्यवस्था)
चारित्ररत्न विजयजी (संपादक)

जिनगुण आराधक ट्रस्ट



B.58 जैन तीर्थ सर्वसंग्रह (भाग-1, खंड-2)
अंबालाल प्रेमचंद शाह (संकलन)

शेठ आनंदजी कल्याणजी पेढी



B.60 जैन पारिभाषिक शब्दकोश
युवाचार्य महाश्रमण (संपादक), साध्वी विश्रुतविभा (संपादक)

जैन विश्व भारती, लाडनूं



B.64 जैन श्वेताम्बर गच्छों का इतिहास, खंड (2)
डॉ. शीवप्रसाद (लेखक)

आचार्य श्री ओमकारसूरी ज्ञानमंदिर



B.69 श्री तत्त्वार्थाधिगम सूत्र (हिन्दी विवेचन सहित)

नयनविजयजी (संपादक), गोयमचंद्रविजयजी (अनुवादक)

यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला



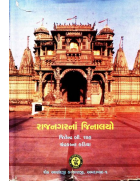
B.73 हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, खंड (1)
डॉ. शितिकण्ठ मिश्रा (लेखक)

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी



B.53 पाटणना जिनालयो
चंद्रकांत कडिया (लेखक)

शेठ आनंदजी कल्याणजी, अमदावाद



B.55 राजनगरना जिनालयो
जितेन्द्र बी शाह, चंद्रकांत कडिया (लेखक)

शेठ आनंदजी कल्याणजी, अमदावाद



B.57 जैन तीर्थ सर्वसंग्रह (भाग-1, खंड-1)
अंबालाल प्रेमचंद शाह (संकलन)

शेठ आनंदजी कल्याणजी पेढी



B.59 जैन तीर्थ सर्वसंग्रह (भाग-2)
अंबालाल प्रेमचंद शाह (संकलन)

शेठ आनंदजी कल्याणजी पेढी



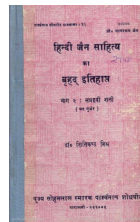
B.61 सुरतनां जिनालयो (सुरत, वलसाड, नवसारी जिल्लांना जिनालयो सहित)
चन्द्रकान्त कडिया (लेखक)

शेठ आनंदजी कल्याणजी



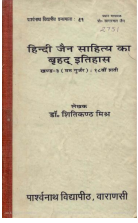
B.65 योगग्रन्थव्याख्यासंग्रहः

आ. कीर्तियशसूरी
शासनशिरताजसूरिरामचन्द्रदीक्षाशताब्दीसमिति



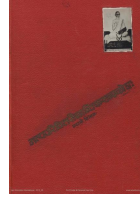
B.74 हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, खंड (2)
डॉ. शितिकण्ठ मिश्रा (लेखक)

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी



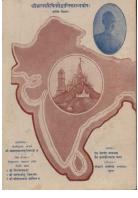
B.75 हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास ,
खंड (3)
डॉ. शक्तिकण्ठ मिश्रा (लेखक)

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी



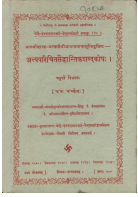
B.77 अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष ,
विभाग (1)
आचार्य आनंदसागरसूरिश्वरजी (लेखक), मुनि
कंचनविजय, मुनि क्षेमंकरसागर (संपादक)

मोतीचंद मगनभाइ चोक्सी



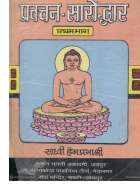
B.79 अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष ,
विभाग (3)
आचार्य आनंदसागरसूरिश्वरजी (लेखक), मुनि
कंचनविजय, मुनि क्षेमंकरसागर (संपादक)

मोतीचंद मगनभाइ चोक्सी



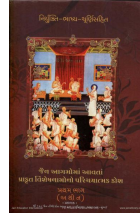
B.80 अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष ,
विभाग (4)
आचार्य आनंदसागरसूरिश्वरजी (लेखक), मुनि
कंचनविजय, मुनि क्षेमंकरसागर (संपादक)

मोतीचंद मगनभाइ चोक्सी



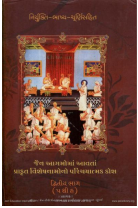
B.82 प्रवचन सारोद्धार , भाग (1)
नेमिचन्द्रसूरि(लेखक) , हेमप्रभा श्रीजी
(अनुवादक), महोपाध्याय विनयसागर(संपादक)

प्राकृत भारती अकादमी



B.84 जैन आगमोमां आवतां प्राकृत
विशेषनामोनो परिचयात्मक कोश , भाग (1)
डॉ. मोहन लाल मेहता (संकलन) , डॉ. के.
ऋषभ चन्द्र (संकलन) , डॉ. नगीन जी शाह
(अनुवादक)

श्री 108 जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट



B.85 जैन आगमोमां आवतां प्राकृत
विशेषनामोनो परिचयात्मक कोश , भाग (2)
डॉ. मोहन लाल मेहता (संकलन) , डॉ. के.
ऋषभ चन्द्र (संकलन) , डॉ. नगीन जी
शाह(अनुवादक)

श्री 108 जैन तीर्थदर्शन भवन ट्रस्ट



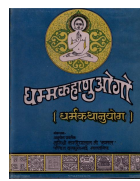
B.90 चराणानुयोग , खंड (1)
कन्हैयालाल जी 'कमल' (संपादक) ,
दलसुखभाई मालवणिया (परामर्शक)

आगम अनुयोग ट्रस्ट, अमदावाद

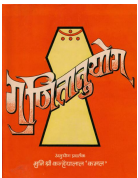


B.93 द्रव्यानुयोग (अध्ययन 25-38) , खंड (2)
कन्हैयालाल जी 'कमल' (संपादक) ,
दलसुखभाई मालवणिया (परामर्शक)

आगम अनुयोग ट्रस्ट, अमदावाद

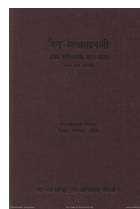


B.95 धम्मकहाणुओगो
कन्हैयालाल जी 'कमल' (संपादक) ,
दलसुखभाई मालवणिया (परामर्शक)



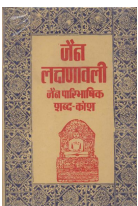
B.96 गणितानुयोग (जैन आगमगत भूगोल-
खगोल एवं अन्तरीक्ष सम्
कन्हैयालाल जी 'कमल' (संपादक) ,
दलसुखभाई मालवणिया (परामर्शक)

आगम अनुयोग ट्रस्ट, अमदावाद



B.97 जैन लक्षणावली , भाग (1)
बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री (संपा)

वीर सेवा मन्दिर प्रकाशन



B.98 जैन लक्षणावली , भाग (2)
बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री (संपा)

वीर सेवा मन्दिर प्रकाशन



B.99 जैन लक्षणावली , भाग (3)
बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री (संपा)

वीर सेवा मन्दिर प्रकाशन

✗ B.111 जैन आगम प्राणी कोश
आचार्य महाप्रज्ञ , मुनि विरेन्द्र कुमार (संपा)



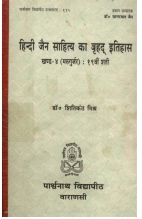
B.114 निरुक्त कोश
आचार्य महाप्रज्ञ (संपादक), साध्वी सिद्धप्रज्ञा,
साध्वी निर्वाणश्री (संपादक)
जैन विश्व भारती, लाडनू



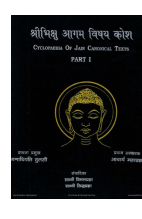
B.117 जैन आगम वाद्य कोश
आचार्य महाप्रज्ञ , मुनि विरेन्द्र कुमार, मुनि
जयकुमार (संपादक)
जैन विश्व भारती, लाडनू



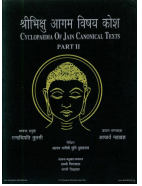
B.119 जैन आगम वनस्पति कोश
आचार्य महाप्रज्ञ (संपादक) , मुनि श्रीचन्द्र
'कमल' (संपादक)
जैन विश्व भारती, लाडनू



B.133 हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास ,
खंड (4)
डॉ. शितिकण्ठ मिश्रा (लेखक)
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी



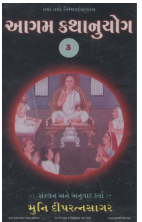
B.134 श्रीभिक्षु आगम विषय कोश , भाग (1)
आचार्य महाप्रज्ञ (संपा.), साध्वी विमलप्रज्ञा,
साध्वी सिद्धप्रज्ञा (अनु.)
जैन विश्व भारती, लाडनू



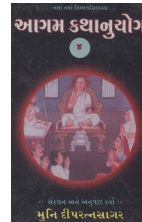
B.135 श्रीभिक्षु आगम विषय कोश , भाग (2)
आचार्य महाप्रज्ञ (संपा.), साध्वी विमलप्रज्ञा,
साध्वी सिद्धप्रज्ञा (अनु.)
जैन विश्व भारती , लाडनू



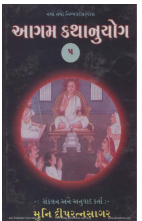
B.137 आगम कथानुयोग , भाग (2)
मुनि दीपरत्नसागर (संकलन)
श्रुत प्रकाशन निधि



B.138 आगम कथानुयोग , भाग (3)
मुनि दीपरत्नसागर (संकलन)
श्री श्रुत प्रकाशन निधि



B.139 आगम कथानुयोग , भाग (4)
मुनि दीपरत्नसागर (संकलन)
श्री श्रुत प्रकाशन निधि



B.140 आगम कथानुयोग , भाग (5)
मुनि दीपरत्नसागर (संकलन)
श्री श्रुत प्रकाशन निधि



B.141 आगम कथानुयोग , भाग (6)
मुनि दीपरत्नसागर (संकलन)
श्री श्रुत प्रकाशन निधि



B.142 श्रुत संविभाग (1)



B.143 श्रुत संविभाग (2)



B.144 श्रुत संविभाग (3)



B.145 श्रुत संविभाग (4)



B.146 શ્રુત સંવિભાગ (5)



B.148 શ્રુત સંવિભાગ (7)



B.150 શ્રુત સંવિભાગ (9)



B.152 શ્રુત સંવિભાગ (11)



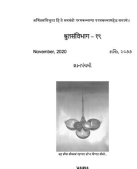
B.154 શ્રુત સંવિભાગ (13)



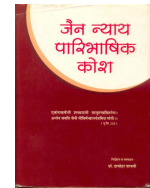
B.157 શ્રુત સંવિભાગ (15)



B.159 શ્રુત સંવિભાગ (17)



B.161 શ્રુત સંવિભાગ (19)



B.172 જૈન ન્યાય પારિભાષિક કોશ
ડૉ. દામોદર શાસ્ત્રી (સંપાદક)

જૈન વિશ્વભારતી સંસ્થાન,લાડનૂ



B.147 શ્રુત સંવિભાગ (6)



B.149 શ્રુત સંવિભાગ (8)



B.151 શ્રુત સંવિભાગ (10)



B.153 શ્રુત સંવિભાગ (12)



B.155 શ્રુત સંવિભાગ (14)



B.158 શ્રુત સંવિભાગ (16)



B.160 શ્રુત સંવિભાગ (18)



B.162 શ્રુત સંવિભાગ (20)